बदलि रहल अछि सभकिछु

बदलि रहल अछि सभकिछु

उपन्यास

रबीन्द्र नारायण मिश्र

बदलि रहल अछि सभकिछु

आवरणःहमर पोती काश्वी मिश्र द्वारा देबालपर उकेरल गेल चित्र

ISBN: 978-93-5627-676-5

दाम : 250 रूपया

पहिल संस्करण :2022

लेखक एवम् प्रकाशक :रबीन्द्र नारायण मिश्र
House No: C 42, NSG SAS Ltd, Black Cat Enclave
Pocket No: 6 Builders Area Greater Noida
District: Gautam Buddha Nagar
UP: 201315
M-9968502767

भारतमे मुद्रित(Printed in India)

बदलि रहल अछि सभकिछु

A Maithili Novel by Shri. Rabindra Narayan Mishra.

समर्पण



पूज्य पितामह स्वर्गीय श्रीशरण मिश्रक

स्मृतिमे

ई पोथी सादर ससिनेह हुनके समर्पित

ई उपन्यास कोनो व्यक्ति विशेषक जीवनपर आधारित नहि अछि। एहिमे लेल गेल नाम, ठाम ओ कथानक सभ काल्पनिक थिक। तथापि यदि ककरो नाम मिलि रहल अछि तँ एकरा एकटा मात्र संयोग बूझल जाए ।

दू आखर....

बदलि रहल अछि सभकिछु मैथिलीमे हमर एक्कैसम पोथी अछि । एहिसँ पूर्व हमर बारह टा उपन्यास ,तीनटा निवंध संग्रह,एकटा आत्मकथा,दूटा संस्मरण,एकटा यात्रा प्रसंग,आ एकटा कथा संग्रह) प्रकाशित भए चुकल अछि । हमर प्रकाशित पुस्तकसभपर कतेको विद्वान लोकनिक उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया प्राप्त होइत रहल अछि। हम अत्यंत विनम्रतापूर्वक हुनका लोकनिक प्रति कृतज्ञता व्यक्त करैत छी आ आशा करैत छी जे हुनकासभक मार्गदर्शन भविष्योमे एहिना प्राप्त होइत रहत ।

मैथिलीक इ-पत्रिका विदेहमे हमर रचनासभ निरंतर छपैत रहल अछि । संप्रति हमर उपन्यास मातृभूमिक धारावाहिक प्रकाशन बैदेहीमे भए रहल अछि । एहिसँ पूर्व हमर उपन्यास,नमस्तस्यै,महराज,लजकोटर आ आत्मकथा,भोरसँ साँझ धरिक धारावाहिक प्रकाशन बैदेही इ-पत्रिकामे भए चुकल अछि । बहुत रास पाठक एहिसँ लाभान्वित भेलाह । एहि हेतु विदेहक यशस्वी संपादक श्री गजेन्द्र ठाकुरजी आ हुनकर सहयोगी लोकनिकेँ हार्दिक धन्यवाद ।

हम अपन पत्नी श्रीमती आशा मिश्रक आभारी छी, जे एहि पोथीक रचना होइत काल अनेको रचनात्मक सुझाव देलीह जाहिसँ एहिमे गुणात्मक सुधार भेल।

हमर विद्वान मित्र डाक्टर विनय कुमार चौधरी(पिंडारुछ) सेवानिवृत्त प्राध्यापक,आर.एम.कालेज सहरसाक अमूल्य सुझाव सेहो समय-समय पर भेटैत रहल अछि । एहि हेतु ओ प्रशंसाक पात्र छथि।

रबीन्द्र नारायण मिश्र

ग्रेटर नोएडा

मकर संक्रान्ति ,१४ अप्रैल २०२२

बदलि रहल अछि सभकिछु

चारूकात अफरा-तफरीक माहौल छल । सामिआना लागल छल । मंचपर श्रीमान् लोकनिक हेतु मसलंग लगा देल गेल छल । माइकसँ बेर-बेर घोषणा कएल जा रहल छल-“माइक टेस्टींग,माइक टेस्टींग” । एकटा नवयुवक बीच-बीचमे बाजि रहल छलाह- “अपन-अपन स्थान शीघ्र ग्रहण कए लिअ । नेताजी पहुँचहि बला छथि ।” लोकक मनोरंजन हेतु रहि-रहि कए रंग-विरंगक गीतसभ बजाओल जा रहल छल । सामिआनाक गेटेपर प्रमुख-प्रमुख लोकनि गेनाक माला हाथमे लेने ठाढ़ छलाह। सभ एक-दोसरसँ उपरौज केने । हम आगू रहब तँ हम ।

मंचपर नेताजीक अतिरिक्त मात्र चारिएगोटेक बैसबाक ओरिआन छल । बीचमे नेताजी,आ हुनकर दुनूकात दू-दूगोटे । मंच आ ओकर लगपासमे इत्रक छिड़काव कएल गेल छल जाहिसँ ओहिठामक हवा सुगंधित लागि रहल छल । नीचाँमे आठ-दसटा कन्यासभ स्वागत गानक हेतु तैयार छलीह । ओ सभ स्थानीय उच्च विद्यालयक छात्रा रहथि । कैकदिनसँ ओ सभ स्वागत गानक पूर्वाभ्यास कए रहल छलीह । अधिक सँ अधिक लोक एहि कार्यक्रममे भाग लेथि ताहि हेतु कैकदिन पहिनहिसँ लाउडस्पीकरसँ गामे-गाम प्रचार कएल जा रहल छल । रिक्सापर राखल टेपरेकार्डर बजैत रहैत छल । गेलै आब ओ जमाना जखन रिक्सापर बैसल आदमी माइकपर बाजत आ लाउडस्पीकरसँ तकर विन्यास होएत। आब तँ एकबेर उद्घोषक अपन बात टेप करबा दैत छथि आ

टेपरेकार्डर पर ओ बेर-बेर बजैत रहैत अछि । सएह एतहु भए रहल छल ।

"बिसरब नहि । अवश्य आएब । इलाकाक जानल मानल जननायक, हमरसभक महान शुभचिंतक, दुनिआमे मिथिलाक नाम चमकाबए बला नेताजीक आगमन भए रहल अछि। उच्च विद्यालयक प्रांगणमे आयोजित भए रहल कार्यक्रममे अवश्य आउ। संगे अपन हित-मीत, संबंधीसभकेँ लेने अबिअनु।"

बैसारक बाद भरिपोष उत्तम भोजनक प्रवंध सेहो कएल गेल छल । से बात सेहो कहल जा रहल छल । कैकदिनसँ निरंतर भए रहल प्रचारक परिणाम सकारात्मक भेल छल । मंचक लगपासमे सभटा स्थान भरि गेल छल । इसकूलक आगूक मैदानक सभटा जगह भरि गेल छल । लगेमे आमक कलम छलैक । लोकसभ खास कए युवकसभ ओकरो डारिपर अपन-अपन स्थान बना चुकल छल ।

नेताजीकेँ अएबामे देरी भए रहल छलनि । लोकसभ अगुता नहि जाए ताहि हेतु मनोरंजन तँ भइए रहल छल,बीच-बीचमे चाह-पानक वितरण सेहो कएल जा रहल छल । लोकसभ बाजए –

"बहुत बैसार देखलहुँ मुदा एहन ओरिआन बिरलैके देखल जाइत अछि ।"

नेताजीकेँ अतिथिगृहसँ अनबाक हेतु हम स्वयं गेल रही। हमरा संगे वाहन चालक आ युवानेता संदीप छल। नेताजी अतिथिगृहमे आगन्तुकसभसँ भेंट करबामे व्यस्त छलाह । मौका पाबि कए हम एकबेर हुनका नमस्कार कए आएल रही। ओ हमरा

देखितहु हँसि कए जबाब सेहो दए देलथि । हमसभ ताबे स्वागत कक्षमे चाह पीबि रहल छलहुँ । चाहक चुस्कीक संग ओतहि राखल अखबारक पन्नाकेँ उल्टा-पुल्टा रहल छलहुँ ।

नेताजीक आगमनमे देरी देखि मंच संचालक स्वयं किछु-किछु बजैत रहलाह । फेर लगपासक प्रमुख-प्रमुख लोकसभकेँ किछु-किछु कहबाक अवसर देलखिन । तखनहु नेताजी नहि अएलाह । गर्मीक मौसम छलैक । दस बजेसँ बारह बाजि गेल । लोकसभ घामे-पसीने परेसान छल । बहुत गोटे तँ उठि -उठि कए मोन हल्लुक करैत छल । एक मोन होइक जे चलि जाइ । मुदा बैसारक बाद भोजनोक जोगार छलैक ।

“आब जखन आएले छी तँ भोजन छोड़ि कए कोना जाएब ।”

ओहो कोनो मामुली भोजन नहि रहैक । तरह-तरहक पकवानसभक सुगंधसँ वातावरण मह-मह कए रहल छल । कुलमिला कए एहिसभक प्रभाव भेलैक आ लोकसभ अड़ल रहल। केओ वापस नहि गेल ।

2

आखिर नेताजीक काफिला सभास्थलपर पहुँचल । नेताजीक स्वागतमे चारूकातसँ लोकसभ मंच लगमे पहुँचि गेल ।

“इनकिलाब! जिंदाबाद !!नेताजीक जय! हमर नेता केहन हो, देबन बाबू सन हो!”

नाना प्रकारक नारासँ संपूर्ण आकाश गुंजायमान भए रहल छल । नेताजीक सुरक्षामे लागल पुलिससभक हेतु ई बहुत कठिन क्षण छलैक । ककरो रोकि नहि पाबि रहल छलैक । जे से नेताजीक गरामे माला पहिराबए हेतु उताहुल छल । नेताजी शनैः शनै मंच दिस बढ़ि रहल छलाह । करमान लागल लोक आ ओकरसभ उत्साह देखि नेताजी बहुत आनंदमे छलाह । सुरक्षामे लागल पुलिससभ कैकबेर हुनका आगू-पाछू घेरबाक प्रयास करैत छल जाहिसँ ओ सुरक्षित रहथि । मुदा नेताजीकेँ से नीक नहि लागनि । एकबेर ओ बहुत जोरसँ पुलिसकेँ डांटि देलखिन । ओहि सभ की करितए? पाछू भए गेल । नेताजी आगू बढ़ि रहल छलाह। हुनकर आगू-पाछू ओहिना करमान लागल लोक चलि रहल छल ।

आब नेताजी मंचपर चढ़बाक हेतु अग्रसर भए रहल छलाह की बड़ी जोरसँ धमाका भेल । मंच आ ओकर आस-पासक लोकसभ कतए-कहाँ उड़िआ गेलाह । ककरो हाथ कतहु फेकाएल तँ ककरो टांग कटि कए चारि लग्गा फटकी जा कए खसि पड़ल । मंचक तँ नामो-निसान नहि रहि गेल । मंचक स्थानपर बेस पैघ खधिआ बनि गेल छल । चारूकात प्रलयक दृश्य छल। देखिते-देखिते ओहिठाम चारूकात हाकरोस करैत लोकसभ अपन-अपन परिचित,इष्ट-मित्र,संबंधीकेँ ताकि रहल छलाह । नेताजीक पाछू ठाढ़ पुलिससभ तुरंत सचेत भेल आ विद्युत गतिसँ आगू बढ़ैत हुनका उठा कए पाछू फेकलक । अपना भरि जानपर खेलि कए नेताजीक जानक रक्षा करबाक प्रयास केलक । तकर फएदो भेलैक। नेताजीक जान बँचि गेलनि । मुदा दहिना टांगमे चोट लागि गेल रहनि। पीठपर सेहो घाव भए गेल छलनि । कष्टसँ ओ कुहरि रहल छलाह । पुलिससभ तुरंत हुनका रोगी वाहनमे राखि

अस्पताल बिदा होइत गेल । केओ सोचिओ नहि सकल छल जे कनीके काल एहन आनंदपूर्ण वातावरण एतेक दुखद दृश्यमे परिवर्तित भए जाएत । मुदा सएह भेल ।

मंचक लग-पासमे बहुत रास लोकसभ घायल बफारि तोड़ि रहल छल । किछु लास सभ छिन्न-भिन्न भेल एमहर-ओमहर पड़ल छल । गामक इसकूलक मैदान एकटा रणभूमिक भाग बनि गेल छल ।

थोड़बे कालमे पुलिस महकमामे ई समाचार ऊपर धरि पहुँचि गेल। जिलाक कलक्टर,एसपी कमिश्नर पर्यंत घटनास्थलपर पहुँचि गेलाह । दुर्घटनाक समयमे हम नेताजीक कारसँ हुनकर बैग निकालबाक हेतु वापस कार धरि गेल रही । संयोगे कहबाक चाही जे एहि कांडमे बँचि गेल रही । हमरासंगे नेताजीक अनबाक हेतु गेल युवक संदीपक कोनो अता-पता नहि छलैक । पुलिससभसँ पहिने हमरा पकड़लक,जीपपर बैसेलक आ थाना लेने चलि गेल ।

थाना पहुँचि भयावह दृश्य देखलहुँ । कैकटा घायल लोकसभ ओतए बिना कोनो प्राथमिक उपचारकेँ पड़ल छल । पुलिसबलासभ अपनामे गप्प करैत छल-

“पता नहि रोगी वाहनकेँ अएबामे एतेक देरी किएक भए रहल छैक?”

“एनामे तँ ई सभ बिना कोनो इलाजेकेँ मारल जाएत ।”

“एतेक भारी दुर्घटना आखिर भेल कोना?”

“जरूर कोनो षड़यंत्र भेल अछि ।”

एहि तरहें तरह-तरहक बातसभ पुलिससभ अपनामे कए रहल छल । कलक्टर साहेब नेताजीक संगे आगू बढ़ि गेल छलाह। हुनके संगे-संगे कमिश्नरक गाड़ी सेहो चलि रहल छल । जखन नेताजी गेलाह तँ एसपी साहेब कोना नहि जइतथि? एसपीक पाछू-पाछू डीएसपीक गाड़ी कोना नहि जाइत । जहिना बड़का अधिकारी सभ ओतए अएलाह तहिना नेताजीक कारक संगे-संगे वापस चलि गेलाह। ओमहर थानामे पड़ल घायल लोकसभक परेसानी बढ़िए रहल छल । ओहिठामसँ अस्पताल जेबाक हेतु रोगी वाहन जरूरी छल,से आबिए नहि रहल छल । हारि कए गौंवासभ अपन-अपन ओरिआन केलाह आ जेना-तेना घायल व्यक्तिसभकेँ लादि-फादि अस्पताल पहुँचलाह । हुनकासभक पाछू-पाछू पुलिसक जीप सेहो पहुँचल ।

हमरा लेने-देने पुलिस एसपी साहेब लग पहुँचि गेल । ओ बेर-बेर संदीपकेँ ताकि रहल छल । मुदा ओकर कोनो अता-पता नहि छल । ओ कतए गेल? कहीं ओ कतहु घायल पड़ल तँ नहि अछि? कहीं अपन जान तँ नहि गमा बैसल । मुदा पुलिसकेँ ओकर कोनो थाह नहि लागि रहल छल । हमही ओकरा बारेमे की कहितिऐक? सभगोटे संगे छलहुँ । मुदा क्षणेमे छनाक की-कोना भेलैक जे एहन घटना घटि गेल । पुलिसकेँ एहू बातसँ बहुत चिंता होइत छलैक जे हम कोना बँचि गेलहुँ,संदीप कतए चलि गेल? नीचाँसँ ऊपर धरि सभ परेसान छल । आखिर ई सभ भेल कोना? एकर पाछू ककर-ककर हाथ अछि ? एहि प्रश्नक जबाब किछु नहि फुरा रहल छलैक ।

3

चुनाओक मौसममे भेल एहन भारी दुर्घटनाक बहुत प्रभाव पड़ि सकैत छल । ताहि बातसँ सभ चिंतित छलाह । पक्ष-विपक्षक लोकसभ तरह-तरहसँ एकर विश्लेषण कए रहल छलाह।

लोकसभक मोनमे एकहिटा बात बेर-बेर घुमि रहल छलैक-एतेक भारी बिस्फोट भेल आ नेताजी ओतहि छलाह । तथापि हुनकका मामुली चोट लागल आ ओ बँचिओ गेलाह । जखन की लगपासमे ठाढ़ बँकिए लोकसभ भयानक रूपसँ आहत भए गेल । हम कोना बँचि गेलहुँ ? संदीप कतए बिला गेल? प्रशासन एहन घटनाकेँ पहिने किएक नहि पता लगा सकल? सीआइडी विभाग की कए रहल छल?

चिकित्साक बाद नेताजीकेँ अस्पतालसँ छुट्टी दए देल गेल। ओ रातिमे शक्तिपुरम अपन डेरापर वापस पहुँचि गेलाह । हमरा राति भरि थानामे बंद केने रहल । भोर भेने कोनो फोन थानेदारकेँ अएलैक । तकर बाद ओ हमरा बजा कए कहलाह-

“अहाँकेँ शक्तिपुरम जाए पड़त । एहि मामिलाक तहकीकात सीआइडी विभाग करतैक । तेँ अहाँ ओतए एसपी सीआइडीसँ भेंट करिअनु । ओना अहाँक खिलाफ कोनो सबूत नहि छैक । मुदा एतेक भारी घटना घटलैक अछि आ अहाँ ओहिठाम रही, नेताजीक संगे सेहो रहिअनि तेँ अहाँसँ गप्प-सप्प करब हुनका जरूरी बुझाइत छनि ।”

“कोनो बात नहि । हमरा जेना कहब, हम सहयोग करबाक हेतु तैयार छी।”

“थोड़ेकालमे पुलिसक गाड़ीसँ अहाँ शक्तिपुरम बिदा भए जाएब । सुरक्षा कारणसँ अहाँक संगे पुलिस सेहो जाएत । आगूक निर्णय ओहीठाम कएल जाएत। कहबाक माने जे अहाँकेँ छोड़ि देल जाएत की किछु दिन पुलिसेक हिरासतमे राखल जाएत से ओतहि पता लागत।”

“सएह कहू। हमरा तँ अहाँसभ अनेरे पिरओटनमे रखने छी।”

“आब एहिसभपर गप्प-केलासँ कोनो फएदा होमए बला नहि थिक । अपने सभबात स्वयं बूझि रहल छी ।”

“ठीक छैक । हम स्नान कए लैत छी । फेर जेना-जे कहब, हम सएह करब ।”

हम स्नान-ध्यान कए लैत छी । थानेदार साहेब किछु जलखै,चाहक ओरिआन सेहो केने छथि । तकरबाद हम पुलिसक गाड़ीसँ शक्तिपुरमक हेतु बिदा होइत छी । हमरा संगे हमर रक्षार्थ किछु पुलिस सेहो छथि ।

शक्तिपुरम पहुँचतहि हमरा पुलिसक गाड़ी नेताजीक डेरापर लेने चलि गेल । ओहिठाम संदीप पहिनहिसँ सोफासीटपर बैसल चाह पीबि रहल छल । ओकरा देखितहि हमरा बजा गेल-

“तू एहिठाम?”

“से की?”

तोरा तँ पुलिस तकैत-तकैत परेसान भेल अछि आ तूँ एहिठाम चाह पीबि रहल छह ।"

हमर बात सुनि कए नेताजी भभा कए हँसि दैत छथि । संदिप सेहो नेताजीक संग दैत अछि । हम बूझि नहि पाबि रहल छी जे बात की छैक? हमर परेसानी नेताजी बूझैत छथि ।

"अहाँ परेसान नहि रहू । जे भेलैक, जेना भेलैक सभ बात अपने परिछा जाएत । अखन चुनाओक मौसम छैक । तेँ अहाँकेँ किछुदिन जहल जाए पड़त जाहिसँ जनतामे गलत धारणा नहि बनए । भोटमे हम जीतबे करब । सरकार हमरे बनत । तकर बाद अहूँ बाहर आएब आ बदमाससभक इलाज तँ हेबे करतैक ।"

नेताजीक बात हम नहि बूझि सकलहुँ । ओ संदीप संगे अंदरक कोठरीमे चलि गेलाह । हम चाह पीबिते रही की पुलिसक एकटा अधिकारी हमरा बाहर अएबाक इसारा करैत छथि । हम हुनका संगे नेताजीक कोठरीसँ बाहर होइत छी । पुलिसक जीपमे बैसि जाइत छी। पुलिस हमरा लेने अज्ञात स्थान पर चलि जाइत अछि ।

तकर बाद कैकदिन धरि हम जहलमे बंद रहलहुँ । हमरा खिलाफ तरह-तरहक धाराक अधीन मोकदमा काएम कए देल छल। हम कोनो प्रतिवाद करबाक स्थितिमे नहि रही । भोर-साँझ केओ अज्ञात व्यक्ति हमरा सामनेमे आबए आ तरह-तरहक इसारा कए किछु कहि जाए । किछु नहि बाजए । चुपचाप अपन काज करए आ चलि जाए । एहि तरहें कैक दिन बीति गेल ।

4

हमर बएस सत्ताइस साल अछि । हम दूसाल पूर्व एमए पास केलहुँ । शुरुएसँ आदर्शबादी छलहुँ । असलमे विद्यार्थी सभकेँ मोनमे सामान्यतः देश,समाजक हेतु किछु करबाक भावना जागल रहैक । कालेजमे एहिसभ विषयपर वारंबार चर्चा होइत रहैत छल। देश-विदेशक जानल-मानल विद्वान,नेता,कवि ,गायक अबैत-जाइत रहैत छलाह । हम आ संदीप एकहि बएसक रही । एकहि किलासमे पढ़ैत रही । हमसभ संगे-संगे एहन बैसारसभमे अरबधि कए जाएल करी । युवावस्था,किछु करबाक उमंग आ संगी सभक संगोर सभ मिलि कए हमर मोनकेँ ततेक प्रभावित कए देलक जे एमए पास केलाक बाद नौकरी तकनाइ छोड़ि नेताजीक पाछू-पाछू घुमए लगलहुँ । संदीप एहि मामिलामे हमरासँ आगूए छल । ओ कालेजेक समयमे नेताजीक अनुगामी भए गेल । हुनका संगे-संगे बैसारसभमे जाए लागल । परिणामस्वरूप,ओ एमए परीक्षा पास नहि कए सकल । लटकि गेल । दोसरो साल सएह हाल रहलैक । तेसर प्रयासमे ओ जेना-तेना तृतीय श्रेणींमे एमए पास कए सकल। ताबे हम एमए पास कए पुरान भए गेल रही । माता-पिताक असगर संतान रही । तेँ बहुत दुलरुआ रही । हुनका लोकनिकेँ हमरासँ बहुत उमीद रहनि । हम हुनकर सभक भावना आ इच्छाकेँ बुझैत पढ़ाइ करैत रहलहुँ । सभदिन औअल अबैत रहलहुँ । मुदा एमए पास करैत-करैत हमर बुद्धि बदलि गेल । परिवारसँ बढ़ि कए देशक चिंता होमए लागल । ओही क्रममे हमहु नेताजीक संपर्कमे अएलहुँ ।

कालेजमे पढ़बाक समय हम आ संदीप कैकबेर संगे ओकर गाम सरिआ गेल रही । ओकर वयोबृद्ध पितासँ भेंट केने रही ।

ओकर माए बहुत पहिनहि मरि गेल रहथि । ओहि समयमे संदीप चारिए वर्षक रहए । तखनेसँ ओकर पिता माएक भार सहो सम्हारि रहल छलाह । हमरे जकाँ ओहो असगरे रहए । पढ़बामे साधारण। ओकर पिता सदिखन हमर उदाहरण दैत रहथिन । कहथिन जे तूँ अंकुरसँ ओकर गुण लेल करह । संगे रहबाक किछु फएदा उठाबह। ओ सुनि लिएह आ हँसि दैक । कखनहु काल कहिओ दैक-

"अहाँ एतेक चिंता नहि करू । हम बहुत किछु करब । अहाँक यश-प्रतिष्ठामे बृद्धि करब । अहाँ धैर्य राखू ।"

बूढ़ा की बजितथि? चुप्प भए जाथि । काजसभ तँ किछु तेहन नहि देखथिन । दिन-राति नेताजीक पाछू-पाछू घुमैत रहैत छलाह । असलमे ओहि समयमे नेताजीक नाम गाम-गाम पसरल छलैक । लोकसभकेँ हुनकासँ बहुत उमीद रहैक । भाषणमे बहुत नीक-नीक गप्प-सप्प करैक । मुदा ककरो किछु फएदा होइत नहि देखाइक । तेँ किछु दिनक बाद आम जनतासभ हुनकासँ निराश होमए लागल आ एहि बेरक चुनाओमे हुनका हरेबाक मोन बना लेने छल । नेताजीकेँ एहिबातक अनुमान भए गेल रहनि । तेँ ओ कनी बेसीए सतर्क छलाह । जेना-तेना चुनाओ जीतबाक हेतु प्रयत्नशील छलाह ।

नेताजीक तँ ओ धंधा छलनि । इलाकाक युवकसभकेँ झूठ आदर्शवादक झुनझुना पकरबितथि । दिन-राति अपना-अपना पाछू घुमबैत रहितथि। ओहिमे सँ किछु चलाक-चुस्तसभ किछु फएदो उठा लैत छल । मुदा अधिकांश ओहिनाक-ओहिना रहि जाइत । नीक समय अनबाक प्रयासमे संघर्ष करैत-करैत अनिश्चित भविष्यक गर्त्तमे पड़ल रहि जाइत । नेताजीक आश्वासन भेटैत रहितैक । ओ सभ हुनकर झंडाकेँ लेने नारा बुलंद करैत रहैत । एहि

तरहें बहुत समय बीति गेल । नेताजी कैक बेर चुनाओ जीतलाह । सलाहकार सेहो बनलाह । किछुगोटेक भविष्य सेहो सचमुचमे बदलि गेलैक । मुदा अधिकांश जस-के-तस रहि गेल । चुनाओक समयमे नेताजीक चुनाओ दलक सक्रिय सदस्य बनि जाइत । किछु आमदनी सेहो कए लैत । चुनाओ खतम,बात खतम । संदीपो एही तरहक छल । ने नौकरी कए सकल,ने नेता बनि सकल । तथापि,नेताजीमे ओकर अटूट विश्वास बनल रहलैक । सालक -साल हुनका पाछू-पाछू घुमैत रहल । हुनकर हुकुम बजबैत रहल।

5

असलमे ओहिबेर नेताजीक स्थिति ठीक नहि छलैक । पछिला पाँच साल हिसाब चुकता करबाक हेतु इलाकाक जनतासभ प्रतिबद्ध छल । जकरे देखू सएह एतबे गप्प करैत सुनाइत-

"आओर जे होएत से होएत मुदा एही नेताकेँ हरेबाक अछि ।"

"जरूर । परिवर्तन हेबाक चाही । जनतंत्रक माने सएह ने भेल । जे जनताक नहि सुनए, अपनेमे लागल रहए तकरा हटा दिअ। दोसरकेँ आनू, ओहो जँ ठीक नहि केलक तँ तेसरकेँ आनू । मतदाताकेँ एतेक शक्ति संविधानसँ प्राप्त छैहे ।"

"बात एतेक आसान नहि छैक जतेक बूझा रहल अछि । ई सभ बदमासक खान थिक । आब ओ समय नहि रहि गेल छैक। गुंडासभ नेताक पाछू-पाछू घुमैत छैक । एकटा इसारा चाही आ

साफ । तखन की करब? कोट/ कचहरी दौड़िते रहि जाएब । नेताजीक खिलाफ केओ गबाह नहि भेटि सकत ।”

लोकसभ आपसमे एहि तरहें गप्प कइए रहल छल की कारसँ किछुगोटे ओतए पहुँचल । लोकक गप्प सुनि कार रूकल । कारसँ चारि-पाँचटा मोचंड सन लोक बाहर निकलल आ बिना किछु कहने-सुनने लोकसभकेँ पिटनाइ शुरु कए देलक । कहि नहि ओ सभ अपन चाबुक कतए नुका कए रखने छल । कहबी छैक – “मारिक डरे भूत पड़ाए ।” बात सएह भेल । दू-चारि सटका लगितहि सभ यत्र-तत्र भागल । केओ किछु नहि देखलक । ककरो ई साहस नहि भेलैक जे ओकरासभक हाथ पकड़ि लिअए ,किछु पूछि सकए ? मारि खाइत-खाइत ओ सभ बस जान बँचबएमे लागि गेल । भागल.. । ओकरासभकेँ एना भागैत देखि सड़कपर एमहर-ओमहर ठाढ़ लोकसभ सेहो भागल । लगपाससँ अएनहिार लोकसभ सेहो भागल । केओ किछु नहि बूझि सकल,केओ किछु नहि पूछि सकल । बस आँखि मुनि कए भागैत रहल । किछुगोटेकेँ सक भेलैक जे भूकंप भए रहल अछि । ओ सभ चिकरए लागल-

“भूकंप. भूकंप ...भागू..!भागू...!”

ओ बदमाससभ हँसैत कार पर फेरसँ सबार भए गेल । संगमे एक-दूगोटेकेँ पकड़ने गेल । कार खुजल आ फुर्तीसँ ओहिठामसँ निकलि गेल ।

बदमाससभ दुनू गोटेकेँ लेने-देने नेताजी लग पहुँचि गेल । नेताजीकेँ देखितहि ओकरसभक सीटी-पीटी गुम्म पड़ि गेलैक ।

“की बात छैक? तोरासभकेँ कथीक परेसानी छह?”

“किछु नहि सरकार!”

“तखन जे अड़बड़ बाजि रहल छह तकर की हेबाक चाही?”

“गलती भए गेल सरकार!”

“मुदा आगू फेर तूँ सभ एना नहि करबह तकर कोन ठेकान?”

“कान पकड़ैत छी, घटी मंगैत छी। आब एहन नहि होएत।”

नेताजी इसारा केलखिन । बदमासभ दुनूगोटेकेँ तहखानामे लेने गेल । धराधर चमेटा लगबैत रहल । बाहर धरि ओकर प्रतिध्वनि सुना रहल छल । तकरबाद ओकरासभकेँ ओहीठाम हाथ-पैर बान्हि कए राखि देलक । बदमासभ बाहर निकलल आ तहखानामे ताला ठोकि देलक ।

नेताजी छलाह अनुभवी लोक । कोनो पहिल बेर चुनाओ नहि लड़ए जा रहल छलाह । घाट-घाटक पानि पीने छलाह । साम-दाम दंड,भेद जेना जे काबूमे आबए तेना तकरसँ निपटए जनैत छलाह। साँझमे जखन वापस घर अएलाह तँ ओ बदमाससभक संगे चोट्टे तहखाना दिस बढ़ि गेलाह ।

“चलह ओमहर। देखिऐक ओकर सभक आखिर की कहब छैक?”

“हमहु सएह कहए बला रही ।”

सभगोटे तहखानामे पैर रखैत छथि । नेताजीकेँ देखितहि ओ दुनूगोटे बफारि तोड़ए लागल । हाथ-पैर जोड़ि माफी मांगए लागल।

“आब एहन गलती नहि होएत । हमसभ सभदिन अहीं संगे रहलहुँ, अहीं बले जीलहुँ । एकटा मौका दिअ । हमसभ अहाँकेँ जीतेबाक हेतु फेरसँ जानक बाजी लगा देब । दिन-राति एक कए देब ।”

नेताजी ओकरसभक बात सुनि बदमाससभकेँ इसारा केलखिन ।

“रे! हिनका सभकेँ एहिठाम किएक अनलहुन? ई सभ तँ अपन खासम-खास छथिन । खबरदार! आगूसँ फेर एहन गलती करबैं तँ हमरासँ बेसी खराब आदमी केओ नहि होएत ।”

“जी सरकार!”

बदमाससभ दुनूगोटेकेँ खोलि देलकैक । ओसभ बाहर आएल । बाहर अबितहि ओकरासभक जान मे जान आएल । तहखानासँ बाहर आएल तँ एकगोटे पुरी-तरकारी आ लड्डू लेने ठाढ़ रहैक । ओ सभ भुखल तँ छलहें । हाँइ-हाँइ खेलक,पानि पिलक आ चुपचाप अपन घरक रस्ता पकड़ि लेलक । नेताजी कहि नहि कोन बाटे निकलि कए निपत्ता भए गेलाह ।

6

“इनकिलाब! जिंदाबाद !!देबन बाबू जिंदाबाद! नेताजीक जय!”

एहि प्रकारक नारा सौंसे इलाकामे लागि रहल छल । चारूकात विजयोल्लास पसरि रहल छल । खुजल जीपपर

नेताजी,अबीरसँ पोताल बीचमे आ हुनकर काते-काते कैकटा सम्मानित लोकसभ ठाढ़ छलाह । नेताजी कल जोड़ने ,मुस्की दैत सभक अभिवादन स्वीकार कए रहल छलाह । हुनकर खुजल जीप मंद-मंद गतिसँ आगू बढ़ि रहल छल । नेताजीक पाछू-पाछू सौंसे टोलक लोकसभ करमान लागल छल । नेताजीक काफिला एक टोलसँ दोसर टोल दिस बढ़ैत रहल । लोकसभ ओहि काफिलासँ जुड़ैत रहल । एहि तरहें एकट्ठा भेल लोकसभ इसकूलक मैदानमे जा कए जमा भेल । ओतए एकटा विशाल मंच बनल छल । ओकर बीचमे नेताजी जा कए ठाढ़ भेलाह । हुनकर दुनू कात समर्थकसभ विजयी मुद्रामे विद्यमान छलाह । मंचक सामनेमे विशाल मानव समुद्र उपस्थित छल । सभक मोनमे उत्सुकता,सभक मोनमे इनाम भेटबाक जिज्ञासा । कहल गेल रहैक जे आइ नेताजी मंचपरसँ पथिआक-पथिआ दामी चीज-वस्तुसभ बँटताह । अपन समर्थकसभक प्रति कृतज्ञता व्यक्त करबाक हेतु हुनका द्वारा कएल जा रहल एहि तरहक ई अभिनव प्रयोग छल। अन्यथा, पहिने तँ चुनाओ जीतलाक बाद ओ कतए निपत्ता भए जाथि तकर कोनो ठेकान नहि ।

गाम-गाम नेताजीक विजय रथ घुमाओल गेल । इसकूलक मैदानमे भाषण भेल । रातिमे इलाका भरिक लोकक सभजाना भोज भेल । सभ आनंदमे छल । चुनाओसँ पहिने भेल दुर्घटनाक बात तँ छोड़ू,ओहिसँ पहिलुका नेताजीक सभ गलती जेना जनता जनार्दन बिसरि गेलथि । बिसरबो कोना नहि करितथि । एक सप्ताहसँ दिन-राति मंगनीक जलखै,चाह,भोजन आ साँझक भरिपोख दारूक ओरिआन कएल गेल छल । तरह-तरहक नाच-गान सेहो भेल । कहक माने जे की-की ने भेल । एतबोपर जँ लोक

भोट नहि दैत तखन तँ कृतघ्नते ने होइतैक । से लोकसभ अपन लाज रखलक,नेताजीक मान रखलक । सभ किछु ओहिना भेल जेना नेताजी चाहलथि ।

चुनाओ संपन्न भेल । नेताजीक दल-समग्र विकास दल (एसभीडी) पूर्ण बहुमतसँ सरकार बनाबए जा रहल छल । टेलीवीजनसँ ई समाचार वारंबार प्रसारित भए रहल छल । हम स्वयं समाचार देखि नहि सकैत छलहुँ । जहलमे हमर कोठरीक सामने तैनात पुलिस सभटा समाचार हमरा दैत रहत छल । नेताजी स्वयं अपार बहुमतसँ ओ सीट जीति चुकल रहथि । जनतंत्र जीति रहल छल । जनक्रान्ति दल(जेकेडी)हारि गेल छल। बाह रे जनता! बाह रे नेता!

चुनाओक बादक लड़ाइ तँ शक्तिपुरममे हेबाक छलैक । ताहिमे तँ नेताजी माहिर छलाहे । ओ शक्तिपुरम पहुँचलाह । दू दिनक बाद रविदिन साँझमे शपथग्रहण समारोह छैक । से बात हुनकर जनतबमे अएलनि । जतेक मुँह ततेक तरहक बात । के-के सलाहकार बनत? जे केओ बनए नहि बनए मुदा नेताजीक नाम तँ पक्का छलनिहे । से तँ हुनका चुनाओसँ पहिने अलाकमान कहि देने रहनि। बस दसटा जन प्रतिनिधि चाही जे हुनकर पाछू-पाछू चलैत रहए।

“मुदा हम तँ आब बहुत वरिष्ठ छी । हमरा तँ आब राज्यप्रमुख बनेबाक चाही ।”

“मुदा अलाकमान अहाँक बात बूझए तखन ने । ओतहु तँ तरह-तरहक घनचक्कर छैक । सुनैत छी राज्यप्रमुखक हेतु एकदम

नव जन प्रतिनिधिकेँ नाम आगू चलि रहल छैक । सलाहकारक हेतु सेहो नवकेसभक नाम छैक ।"

"से किएक?"

"पुरना नेतासभ मरि गेल की?"

एहि बेर जखनसँ नेताजी शक्तिपुरम पहुँचलाह,हुनकर बामा आँखि बहुत जोरसँ फरकि रहल छनि । लाख प्रयास करैत छथि आँखिक फरकब कमे नहि भए रहल छनि । बेर-बेर हनुमानजीक ध्यान कए रहल छथि । शक्तिपुरम टीसन लग हनुमान मंदिर लगसँ जाइत रहथि तखनहि बहुत जोरसँ बामा आँखि फड़कि गेल रहनि। बहुत जोरसँ हनुमान चालीसा पढ़ए लागल रहथि । कार रोकि देलखिन । भेलनि जे हनुमानजीक दर्शन केनहि चली । जँ कोनो असगुन भेल होएत ,किंवा हेबाक होएत तँ ओ रोकि लेताह । नेताजी कारसँ उतरलाह । हुनका संगे-संगे हुनकर अंगरक्षक सेहो चलि रहल छल । एक सोड़हि प्रसादक डिब्बा कीनि लेलनि । अंगरक्षक मिठाइक डिब्बा धेलक । आगू-आगू नेताजी आ पाछू-पाछू हुनकर अंगरक्षक प्रसादक डिब्बासभ लेने चलि रहल छल । ताबतेमे पाँतिमे आगू ठाढ़ एकटा मोछिअल बड़ी जोरसँ छिकलक। नेताजीक तँ होस उड़ि गेलनि । मंदिरोमे इएह हाल भए रहल अछि । दर्शनक पाँति नमगर छल । ओहिठाम नियमसँ काज होइत छैक से हुनका बूझल रहनि । तथापि,ओ पाँतिमे ठाढ़ भए गेल रहथि । मुदा ततेक लोक पाँतिमे आगू छल जे हुनकर नंबर आबएमे दूपहर भए गेल । दर्शन केलाक बाद ओहिठाम उपस्थित लोकसभकेँ अपने हाथे प्रसाद देलथि । तकरबादे अपन डेरा पहुँचलाह । सोचने रहथि जे हनुमानजी सभटा सम्हारि लेथिन। से तँ ठीके । मुदा साँझ होइत-होइत मीडिआमे सलाहकारसभक जे

सूची बहराएल ताहिमे हुनकर नाम नहि छलनि । एकछाहा नवतुरिआसभकेँ सलाहकार बनाओल जेबाक समाचार आबि रहल छल। सलाहकारक सूचीमे सँ पुरना नेताजीसभ लुप्त छल। कतहु ककरो चर्चो नहि छल। से देखितहि नेताजी घरेमे बेहोस भए गेलाह।

7

ओमहर हम जहलमे पड़ल छलहुँ । मासक धक लागि गेल। हमर की गलती छल जे जहलमे बंद कए देल गेलहुँ? से किछु बूझा नहि रहल छल । नेताजी आ हुनकर सहयोगी केओ हमर हाल-चाल नहि लेलाह । सभ अपन काजमे व्यस्त छलाह । पहिने चुनाओ आ आब सलाहकार बनबाक प्रयास । हमरा जहलमे केओ-केओ गाहे-बगाहे किछु-किछु समाचार दैत रहैत छल । मुदा ओहिमे कतेक की सत्य छल,की झूठ छल से के फरिछबैत? मास दिन जहलमे रहैत-रहैत बहुत किछु सोचबाक मौका भेटल । नेताजीक प्रति मोनमे आक्रोश तँ छलहे । ने हम हुनकर आगू-पाछू करितहुँ ने हमर ई हाल होइत ।

असलमे हमरा शुरुएसँ समाजक हेतु किछु करबाक अभिलाषा मोनमे छल। तेँ जखन पहिल बेर हमर कालेजमे नेताजीक भाषण भेल रहए तँ हम बहुत प्रभावित भेल रही । भेल जे ई व्यक्ति कतेक महान छथि । दिन-राति देसक बारेमे सोचैत छथि । हम अपन कैकटा संगीसभक संगे हुनकर आगू-पाछू करए लगलहुँ । जखन कखनहु ओ लग-पासमे बैसार करितथि तखन

हमसभ ओतए पहुँचि जइतहुँ । क्रमशः हम हुनकर लगीच अबैत गेलहुँ ।

पता नहि कोन-कोन धारामे हमरापर केस कएल गेल छल। जमानतक कैकटा प्रयास असफल होइत गेल । गाम-पर हमर माए-बाबू बेकल रहथि । दिन-राति कचहरी दोड़ैत रहलाह । कोना-कोना टाकाक जोगार कए ओकीलक फीस दैत रहलाह । मुदा किछु कारगर नहि भेल । सुनबामे आएल जे एकदिन बाबूकेँ किछु बदमाससभ रस्तामे धमका सेहो देने रहनि ।

"खबरदार! जाबे चुनाओ छैक ताबे बेसी उठा-पुटक नहि करू । चुपचाप रहू । जँ बात बढ़ल तखन जे होएत से सोचनहु नहि होएब ।"

हमर बाबू ओकर बाद सरिपहुँ डरा गेलथि । कचहरी गेनाइ छोड़ि देलथि । ओहि बदमाससभक संदेशमे दम छलैक । ओ सभ नेताजीक गुंडा दलक लोक छल । हमरा सन-सन कतेको लोक एहिना जहाँ-तहाँ चुप्प करा देल गेल रहए । हमसभ साइत नेताजीक व्यक्तित्वक एहि पक्षक जानकार नहि भए पबितहुँ जँ हमरा संगे ई सभ नहि घटल रहैत । मुदा आब की कएल जाए? एकर किछु जबाब नहि फुराइत छल । हम जहलमे बंद भेल-भेल सोचैत रहैत छलहँ । राति-राति भरि करोट बदलैत रहैत छलहुँ । एक मोन होअए जे जहलसँ निकललाक बाद एहिसभसँ हटि जाएब,कोनो प्रयाससँ नौकरी ताकि लेब आ अपन परिवारक पालन-पोषण करब । चैनसँ जिनगी बिताएब। आब एहि झंझटसभमे कहिओ नहि पड़ब । मुदा कखनहुँ होअए जे एतेक स्वार्थी होएब उचित नहि होएत । नेताजी सन-सन समाजक दुश्मनक सही इलाज तँ तखनहि संभव होएत जखन ओकर सत्यता

समाजक सामने अबैक । ततबे नहि,ओकर सही विकल्प होइक । नहि तँ ओकर वर्चस्व बनले रहत आ नीक लोकसभ जान बँचएबामे लागल रहत ।

एकदिन भोरे जलखै केलाक बाद हम जहलमे अपन कोठरीमे किछु पढ़ैत रही की जेलर बाबू हमरा बजओलक । हम पुलिसक संगे-संगे हुनकर कार्यालय पहुँचैत छी । ओतए हमरा देखि जेलर बाबू बहुत प्रसन्न भेलाह । हमरा दिस एकटा कागज बढ़बैत कहैत छथि-

“अंकुरजी! अपनेक हेतु नीक समाचार आएल अछि । अहाँकेँ जमानत भए गेल अछि । जरूरी खानापुरीक बाद अहाँकेँ आइए जहलसँ छोड़ि देल जाएत ।”

हम ई समाचार सुनि बहुत खुस रही । होअए जे कतेक जल्दी घर पहुँचब । माए-बाबूसँ भेंट करब। अपन घरमे निचैनसँ हुनका लोकनिसँ गप्प-सप्प करब । हम जेलर बाबूक कोठरीमे बैसले-बैसले कागजसभपर दस्तखत कए देलिऐक। थोड़बे कालक बाद हमरा जहलसँ छोड़ि देबाक फरमान बहाल भए गेल । हम जहलसँ बाहर अएलहुँ । जहलक गेटपर हमर पिताजी भोरेसँ बिना किछु खैने-पीने ठाड़ छलाह । हमरा देखितहु ओ ठोह पारि कए कानए लगैत छथि । हमरो नहि रहल जाइत अछि । आँखिसँ नोर बहए लगैत अछि । हम हुनका प्रणाम करैत छी । दुनूगोटे बड़ीकाल धरि एक-दोसरकेँ देखैत रहि जाइत छी । फेर हमही ओहि मौनकेँ तोड़ैत छी-

“हमसभ चली । गामपर माए बाट तकैत होएत ।”

“ठीके कहलह । ओ तँ राति भरि जगले छथि । तोहर अएबाक समाचार सुनितहि तरह-तरहक ओरिआनमे लागि गेल छथि । बौआकेँ कदीमाक तरकारी बहुत नीक लगैत छनि । भोरे चुरा-दहीक जलखै बहुत पसिंद छनि । हलुआ बनेबाक हेतु किछु सुजी लेने आएब । एतबे गप्प-सप्प राति भरि करैत रहलीह । भोरुकबामे निन्न लगलनि तखनहु इएहसभ बड़बड़ाइत सुनिअनि । आखिर माए छथि ने।”

दुनूगोट रिक्सापर बैसि जाइत छी । हमरासभकेँ लेने रिक्सा आगू बढ़ि जाइत अछि । हमसभ गाम पहुँचैत छी । अपन घर दिस बढ़ैत जे आनंद होइत छल तकर वर्णन करब मोसकिल अछि । होअए जे रस्ता एतेक पैघ किएक छैक । आओर छोट किए नहि भए रहल छैक । एक मोन होअए जे दौड़ी आ घर पहुँचि माएक पैरपर खसि पड़ी । मुदा बाबू जे संगे रहथि । हुनके गतिसँ चलि सकैत छलहुँ । खैर! थोड़े कालक बाद हमसभ अपन घर पहुँचि गेलहुँ । गाममे हमरा देखितहु माएक हाल बेहाल छल । ओ हमरा भरि पाँज पकड़ि लेलक । जोर-जोरसँ कानए लागलि । कतबो बुझेबाक प्रयास करिऐक ओ सुनबे नहि करए । खाली एतबे बजितए-

“आब कतहु ने जेबैं रे बाबू! आब कतहु नहि... ।”

किछु बुझेबे नहि करए जे आखिर ओ की कहि रहल अछि? परेसानीमे तँ सभगोटे छल । हमरा जहल चलि गेलाक बाद घरमे केओ एक्को राति चैनसँ नहि सूति सकल । मुदा आब तँ हम आबि गेलहुँ । एतेक चिंता कथीक?

बाबू जेना -तेना माएकेँ सम्हारलथि । हमसभ घर पहुँचलहुँ। माए भोरेसँ भोजनक विन्यासमे लागल छल । हम जल्दीसँ स्नान-ध्यान केलाक बाद भनसा घरमे माए लग पहुँचलहुँ । माए हमर प्रतीक्षे कए रहल छलीह । बाबू सेहो ओतहि रहथि । बहुत दिनक बाद हम बाबूक संगे-संगे भोजन केलहुँ । माएक हाथक बनाओल भोजन,एतेक दिनक बाद खा रहल छलहुँ । लगैत छल जेना सद्यः इन्द्रलोकमे पहुँचि गेल छी । हमसभ खाइत रहलहुँ,माए परसैत रहल । कतबो मना करिऐक,माए मानबे नहि करए ।

“आब कनीको जगह नहि बाँचल अछि । आब अरवन रहए दही । फेर बादमे खाएब ।”

बाबू सेहो एहि बातक समर्थन केलाह । हमसभ भोजन कए बहरिआ कोठरीमे चौकीपर बैस गेलहुँ । माए सेहो ओतहि आबि गेल । ताबतेमे एकटा जीप आबि कए हमर दरबाजापर ठाढ़ होइत अछि ।

8

जीपसँ चारिटा मुस्टंड उतरैत अछि । सोझे हमर दरबाजापर आबि जाइत अछि । हमसभ जीपक अबाज सुनि कए बाहर होइत छी आ मुस्टंडसभकेँ ओसारापर बैसल देखि चकित छी,डराइतो छी । हमसभ किछु बजितहुँ ताहिसँ पहिनहि ओहिमे सँ एकटा मुस्टंड बजैत अछि-

“नेताजी हमरासभकेँ पठओलाह अछि । जहलक बारेमे कतहु चर्चा नहि करबाक छैक । ककरो किछु नहि कहबाक छैक । जँ से सभ करबह तँ फेर तूँ जानह ।"

एतबा बाजि ओ सभ ओसारापरसँ उतरि गेल । देखिते-देखिते जीपमे सबार भए गेल । जीप तेजीसँ आगू बढ़ि गेल । हम आ बाबू बुझिए नहि सकलिऐक जे भए की रहल छैक? ऊपरसँ मुस्टंडसभक बगए-बानि देखि माथा काज केनाइ बंद कए देलक । हमसभ ओकरसभक बात सुनैत रहलहुँ । मुदा किछु जबाब नहि दए सकलहुँ । बाबू तँ बहुते डरि गेल रहथि । ओही समयमे माए भनसा घरसँ बाहर आएलि । सभकेँ एना गुम्म देखि छगुन्तामे पड़ि गेलि ।

“बात की छैक? तूँ सभ एना परेसान किएक छह? "

बाबू की बजितथि? होनि जे जँ सही-सही कहि देबैक तँ कहीं घबड़ा ने जाथि । एतेक मोसकिलसँ हम जहलसँ छुटि कए आएल छी । फेर ओएह झंझटिसभ सामनेमे देखा रहल छलनि ।

“ई नेताजी नीक लोक नहि अछि ।"

“चुप्पे रहू। केओ नेताजी लग चुगली कए देत तँ जान बँचेनाइ मोसकिल भए जाएत ।"

“मुदा एना डराएल हमसभ कतेक दिन रहि सकैत छी? इहो कोनो जीवन थिक?"

“हमसभ गाम छोड़ि दी । कतहु बाहरे रही । कम सँ कम जान तँ बाँचत । शांतिसँ जीब तँ ।"

ई बात सुनि हमरा देहमे आगि फुकि देलक । हम चिचिआ उठैत छी-

“केओ कतहु नहि जाएत । हम अखन मरि नहि गेलहुँ अछि । नेताजीक भाग्य खराब भए गेल छैक ।"

“भाग्य तँ हमरसभक खराब लगैत अछि ।"-बाबू बजलाह ।

बहुत मोसकिलसँ एकमासक बाद जहलसँ छुटि कए हम अपन घर वापस आएल रही । पता नहि बाबू एहि लेल कतेक प्रयास केलथि । ककरा-ककरा ने खुसामद केलनि। केना-ने-केना टाकाक जोगार केलनि । कतेक उत्सुकतासँ माए हमर स्वागत केने छलि । मुदा ई प्रसन्नता बेसी काल नहि रहि सकल । जीपसँ आएल ओहि मुस्टंड सभकेँ देखि कए हमसभ विषादग्रस्त भए गेलहुँ। माए आ बाबू तँ डरे बौक भए गेलथि । मुदा हमरा रहल नहि जाए । आक्रोशसँ देहमे आगि लागि गेल छल । नेताजी हद पार कए चुकल छल ।

“एहि पार की ओहि पार” -हम मोने-मोने सोचलहुँ । रातिमे जखन हमर माए-बाबू सुतले रहथि हम चुपचाप घर छोड़ि देलहुँ । अन्हारेमे पैरे-पैरे शक्तिनाथक ओहिठाम पहुँचि गेलहुँ । शक्तिनाथक घर हमर गाम सतटोलसँ सटले मदनपुरमे रहैक । जहलमे किछुदिन ओ हमरा संगे रहए । ओकरो नेताजी फँसा देने रहैक । मुदा ओकर परिवारक लोकसभ बेसी होसगर छल । तेँ ओकर जमानति पहिने भए गेलैक । तहिआसँ ओ गामे पर छल । कतहु बाहर नहि गेल । हम जहलसँ छुटि गाम वापस आबि गेलहुँ से जानकारी ओकरा नहि रहैक । अचानक रातिमे हमरा अपन ओसारापर ठाढ़ देखि शक्तिनाथ डरा गेल । असलमे ओ लघी करबाक हेतु उठल छल । ओसारापर चौकीपर सुतल रहए । वापस आबि पड़ले छल कि हम देखेलिऐक । अन्हार रहबाक कारणे ओ

हमरा नहि चिन्हि सकल । ओ चिकरबाक प्रयासेमे छल कि हम फुसफुसेलहुँ-

“हम छी अंकुर।”

“एते राति कए असगर? बात की छैक? ”

“बात की रहतैक । ई नेताजी जीनाइ मोसकिल कए देने अछि ।”

“से की?”

“से कोनो तोरा नहि बूझल छह?”

“अखन की भेलैक जे रातिएमे तोरा आबए पड़लह?”

“की कहिअह? बहुत मोसकिलसँ जमानत भेल । तकरबाद गाम वापस आएले छलहुं की नेताजीक मुस्टंड.. ”

हम एतबे बाजल छलहुं की ओ बात लोकि लेलक।

“ओ! तँ ओ चारू मोस्टंड तोरो ओतए गेल छलह?”

“हँ ।”

“ओ तँ हमरोसभकँ दस हजार फज्जति कए गेलाए । बूझेबे नहि करैत अछि जे एकरासँ कोना पार पाबी?”

“एकटा काज करह।”

“की?”

“दुनूगोटे शक्तिपुरम चलैत छी । सोझे नेताजीसँ गप्प करी । पुछिऐक जे ओ की चाहैत अछि?”

“ओ एतेक आसान लोक बुझाइत छह?”

“मुदा एना डराइत रहलासँ तँ किछु होबए बला अछि नहि?”

"तखन जे कहह।"

"दुनूगोटे शक्तिपुरम चली । ओतहि बात फरिछाएत ।"

तकरबाद हम आ शक्तिनाथ किछुकाल गप्प-सप्प करैत रहलहुँ । फरीच भए गेल छल । स्नान-ध्यान केलहुँ । किछु जलखै केलहुँ आ शक्तिपुरमक हेतु बिदा भए गेलहुँ ।

9

नव सलाहकारमंडलक गठन भए गेलैक । राज्यप्रमुख चुनि लेल गेल । सभक शपथग्रहण शक्तिपुरमक नगरभवनमे भेल। नगरभवन दर्शकसँ खचाखच भरल रहए । कार्यक्रम शुरु होअएसँ पहिने रसनचौकी बाजि रहल छल । नगरभवन शक्तिपुरमक चारूकात झंडा फहरा रहल छल । पार्टीक कार्यकर्तासभ विजयोन्मादमे रहि-रहि कए इनकिलाब-जिंदाबादक नारा लगा रहल छलाह । मुदा नेताजीक कतहु अता-पता नहि छल। जे ब्यक्ति अपना-आपकेँ राज्यप्रमुख बनबाक सपना देखि रहल छलाह,जे चुनाओ जितबाक हेतु अपनहि मंचपर बम विस्फोट करबा चुकल छलाह,आओर कहि नहि की-की कए चुकल छलाह, से एहि महत्वपूर्ण परिदृश्यसँ लापता छलाह । कोनो नामो निसान नहि। अपना भरि ओ बहुत प्रयास केलथि । अलाकमान द्वारा नियुक्त पर्यवेक्षककेँ जेबी भरि देलथि । जहिआसँ ओ शक्तिपुरम अएलथि,तहिआसँ पंचसितारा होटलमे नेताजीक आवागमन होइते रहैत छल । मुदा कहबी छैक जखन भाग्य प्रतिकूल होइत छैक तखन किछु जोगार काज नहि करैत छैक।

कहब जे एतेक केलाक बादो नेताजीक भाग्य किएक साथ नहि देलकनि? तकर की कहल जाए? समय होत वलबान । जखन मनुक्खक समय प्रतिकूल भए जाइत अछि तखन कतबो किछु करू,सभ किछु उल्टे भेल चल जाइत अछि । जेना रणभूमिमे कर्णक पहिआ धसलनि तँ धसिते चलि गेलनि । ब्रह्मास्त्र काज केनाइ बंद कए देलकनि । परसुरामक श्राप सक्रिय भए गेल । उनचासो हवा उल्टा बहए लागल आ निहत्था कर्णपर अर्जुन सन नीतिकुशल योद्धा कृष्णक बात मानि शस्त्र चला देलनि । कर्ण मारल गेलाह । सएह छल भावी। तहिना नेताजीक समय चलि रहल छल । केना-ने-केना ओकर प्रतिद्वंदीसभ केन्द्रीय पर्यवेक्षकक संगे होइत ओकर गप्प-सप्प आ आदान-प्रदानक भीडिओ बना लेलक आ ओकरा अलाकमान लग पहुँचा देलक । तकर बाद तँ जे भेल से की कहल जाए?

रातिए भरिमे केन्द्रीय पर्यवेक्षक बदलि देल गेल । हुनका द्वारा बनाओल गेल सलाहकारसभक सूचीक दोबारा समीक्षा कएल गेल । तकर बाद कैकगोटेक नाम कटल,किछुगोटेक नाम जुड़ल । शपथग्रहणक समय सेहो बदलि देल गेल । पहिने चारि बजे साँझक समय निर्धारित कएल गेल छल । तकर बाद एगारह बजे दिनक समय निर्धारित कएल गेल । दोबारा बनल सूचीक जानकारी ककरो नहि लागि सकलैक । जखन नगरभवनमे शपथग्रहणक हेतु भावीसलाहकारसभ अपन-अपन स्थानग्रहण केलथि,तखनहि लोक बूझि सकल जे के सलाहकार बनि रहल छथि आ किनकर नाम छुटि गेलनि । नेताजी अपन स्थान कतहु नहि देखि चोट्टे नगरभवनसँ घुरि गेलाह। अपन डेरा पहुँचलाह । भरिपोख दारू पिलाह आ सूति रहलाह ।

हमसभ शक्तिपुरम सोझे नेताजीक ओहिठाम पहुँचलहुँ । नेताजीक घरक गेट बंद रहैक । शक्तिनाथ घंटी बजओलक । कोनो प्रतिउत्तर नहि भेटलैक । हम दुनूगोटे केबार लग ठाढ़े रहि गेलहुँ । भेल जे केबार आब खुजत ताब । पाँच मिनट धरि ओहिना ठाढ़ रहि गेलहुँ । शक्तिनाथ फेरसँ घंटी बजा देलाह । एहि बेर धराकसँ केबार खुजल । मुदा केबार खोलनिहार नेताजी नहि अपितु संदीप छल । संदीप हमरा देखितहि सकपका गेल । शक्तिनाथकेँ सेहो ओ जनैत छल । हमरा किछु नहि कहि ओ शक्तिनाथ दिस मुखातिब भेल-

“की बात?”

“बात की रहतैक? नेताजी कहाँ अछि?”

“कहि नहि? मुदा बात की छैक?”

“पुछैत छिअह से कहिते नहि छह आ अंट-बंट बजने जा रहल छह ।”

“की पुछैत छह?”

“रे! नेताजी कहाँ अछि, से फरिछा कए कहह ।”

“कतहु गेल छथि ।”

शशिकान्तकेँ संदीपक बातपर विश्वास नहि भेलैक । ओ एकहि झटकामे संदीपकेँ पाछू केलक आ फ्लैटमे अंदर चलि गेल। नेताजीक केबार खुजले छल । ओ ओछाओनपर बेहोस पड़ल छलाह। कतहु कोनो शब्द नहि । नेताजीकेँ हमरा लोकनिक आगमनसँ कोनो क्रिया-प्रतिक्रिया होइत नहि देखलिअनि ।

नेताजीकेँ अंदर देखि शक्तिनाथकेँ संदीपपर बड़ी जोरसँ तामस भेलैक । ओ चोट्टे संदीप दिस घुमल आ धएले चमेटा संदीपकेँ लगा देलक। अनचोके लागल एहि चोटसँ संदीप ठामहि खसल । संदीप बहुत अपमानित महसूस कए रहल छल । मुदा करितए की? ओ जेना-तेना उठल , अपन कोठरी गेल आ केबार बंद कए लेलक।

10

तकर बाद कतबो प्रयास केलिऐक,संदीप केबार नहि खोललक । हम दुनूगोटे नेताजीक कोठरीक आगू केबारसँ सटले ठाढ़े रहि गेलहुँ । नेताजी पीने बुत्त पड़ल छलाह । हुनका कोनो बातक कोनो असर नहि भेलनि। के आएल,के गेल,कोनो मतलब नहि । ओहने समयमे शक्तिनाथ बाजल-

“इएह मौका अछि, एकर नरेठी दाबि दी आ निकल जाइ ।”

“खबरदार! एहन बात फेर नहि बजिअह । ई नेताजीक घर अछि । कतए कोन यंत्र लगओने होएत तकर कोन ठेकान? सीसीटीभीक कैमरा तँ सामनेमे लागले अछि । एहन हालतमे हमसभ खा-मखा मोसकिलमे पड़ि सकैत छी ।”

“तखन करी की? हमसभ एतए जँ भरिओ राति ठाढ़ रहि जाएब तँ की होएत? ”

“देखहक । कानून अपना हाथमे नहि लेबाक छैक । नेताजी तँ एकटा मुखौटा अछि । जँ एकरा मारिओ देबहक तँ एकरा सन-सन दसटा नेता उतपन्न भए जेतह । समस्या विचारक छैक । एकर

सभक आसुरी प्रवृति समाज, राष्ट्र, कानून, संविधान सभपर भारी पड़ि रहल छैक। एहन बात नहि छैक जे हमरा-तोरासँ पहिने ई बात सभ ककरो अखरलैक नहि, केओ तकर निदान करबाक प्रयास केलकैक नहि, मुदा ओहोसभ अंततोगत्वा, एकरे सभमे सामिल भए गेल । भोग विलासक लालसा भारी पड़लैक । पद, मान-सम्मान ककरा नहि चाही? सभटा आदर्शवाद रस्तेमे भुतिआ गेलैक।"

"तखन करी की से ने कहह? हमसभ एहिठाम आएल छी की करह? आ कए की रहल छी? "

"धैर्य राखह ने? हालत देखिए कए आगू बढ़बाक चाही । तखने लक्ष्यक प्राप्ति भए सकैत अछि ।"

"तखन?"

"तखन की। ई कोनो अंतिम राति नहि छैक । काल्हि फेर भोर हेतैक । नव दिन अएतैक । हमसभ सोचि-विचारि कए निर्णय लेब आ अवश्य लेब ।"

"अखन की करी?"

"तोरामे इएह गड़बड़ी छह । राजनीति कोनो दोकानपर राखल गुलाबजामुन नहि छैक जे मुँहमे धरिते स्वाद लागए लागत । एतए सालक-साल संघर्ष जरूरी छैक । फिलहाल हमसभ एतहि बैसी, देखिऐ तँ जे बात की छैक? नेताजी एना बेहोस किएक पड़ल अछि?"

"ठीक छैक ।"

हम दुनूगोटे ओतहि बैसि गेलहुँ । नेताजी ओहिना पड़ल रहलाह। थोड़े कालक बाद संदीपक कोठरीमे किछु खुसुर-फुसुर भेलैक । केओ नहू-नहू बतिआ रहल छल । कहबाक माने जे संदीप ओहि कोठरीमे असगर नहि छल । हम दुनूगोटे केबारमे कान सटा दैत छी । भीतर कम सँ कम दूगोटे तँ अछिए ।

शक्तिनाथक मुस्की देखए बला छैक । ओ बाजि उठैत अछि-"ई तँ कोनो महिलाक स्वर लागि रहल अछि ।"

हम ओकरा इसारासँ चुप्पे रहबाक हेतु कहैत छी । हम दुनूगोटे ओहिना कान लगओने सुनैत रहि जाइत छी । अबाज तँ होइत छैक,मुदा ततेक नहू-नहू जे कैकबेर अर्थ लगाएब मोसकिल बुझाइत अछि । एतबेमे लागल जेना किछु जोरसँ खसलैक । संभवतः काँचक कोनो वस्तु रहल हेतैक । लगलैक जेना चूर-चूर भए गेलैक। तकरबाद ओहि कोठरीसँ किछु अबाज नहि आएल । संभवतः ओ सभ सुति रहल।

"आब की करी?"

"फेर ओएह बात? रातिओ भरि तूँ चैनसँ नहि रहि सकैत छह । ई बातक ध्यान राखह जे हमसभ नेताजीक घरमे छी । बाहर की भए रहल अछि तकर कोन ठेकान? जँ एहि हालतमे बाहर निकललहुँ आ पकड़ल गेलहुँ तखन?"

11

भोरुकबा उगि गेल छल । ओसारापर बैसले-बैसल हमसभ औंघा रहल छलहुँ । बाहर सड़कपर प्रातःभ्रमण करएबला लोकसभक आवागमन प्रारंभ भए गेल छल । नेताजीक निन्न सेहो प्रायः पूरा भए रहल छलनि। ओ करोट बदललथि। कनीमनी आँखि खोललथि । आँखि खोलितहि हमरासभकेँ ओसारापर पड़ल देखलथि । ओ चोट्टे ओछाओनपर सँ उठि जाइत छथि। ओसारापर अबैत छथि आ चिचिआ उठैत छथि-

"संदीप! संदीप!

कोनो जबाब नहि अबैत छैक । फेर ओ हमरासभक लगीच अबैत छथि। हमसभ किछु बूझि नहि पाबि रहल छी। हमरासभकेँ एना अपन घरक ओसारापर पड़ल देखि ओ चकित छलाह। कनी काल तँ ओ चुप्पे रहि गेलाह । किछु सोचलाह । फेर हमर पैरकेँ जोरसँ हिला देलाह । हम हड़बड़ा कए उठैत छी ।

"तूँ एना, एहिठाम?"

हम किछु बाजि नहि पाबि रहल छी । आबाज सुनि शक्तिनाथो उठि जाइत अछि । हमसभ किछु बजितहुँ,किछु करितहुँ ताहिसँ पहिनहि नेताजी जोरसँ चिकरलाह-

"चोर! चोर!"

एकाएक नेताजीकेँ सामनेमे देखि घबड़ाहटिमे शक्तिनाथ मकानक सीढ़ीपर खसि पड़ल । हम ओकर पाछू-पाछू छलहुँ । हमरो संतुलन बिगड़ि गेल । हमहु ओतहि धराम दए खसलहुँ ।

दुनूगोटे उलटैत-पलटैत सीढ़ीपर खसैत-पड़ैत नीचाँ पहुँचलहुँ । उपरेसँ नेताजी इसारा कए देने रहथि। सीढ़ी लग हुनकर आदमीसभ हमरासभकेँ पकड़ि लेलक । सौंसे देहमे कतेको ठाम चोट लागल छल । हाथ-पैर ठेहुनसँ खून बहि रहल छल । शक्तिनाथोक कमोबेस सएह हाल रहैक । नेताजीक मुस्टंडसभ ओहनो हालतमे हमरासभकेँ थपरिअबैत लगीचेमे बनल नौकरक आवासमे लेने चलि गेल। हमसभ चोटसँ छटपटा रहल छलहुँ । मुदा तकर ओकरासभकेँ कोनो परबाह नहि रहैक । पनरह मिनटक बाद नेताजी स्वयं ओहिठाम अएलाह। हमरासभकेँ देखिते चिकरए लगलाह-

"तोरासभकेँ की भेलह जे नेताजीकेँ चकमा दए देबैक । साफ-साफ बाजह जे तोरासभकेँ एहिठाम के आ किएक पठओलक? जँ झूठ बजबह तँ परिणाम भोगबाक हेतु तैयार रहह ।"

नेताजी एतेक बाजले छलाह कि मुस्टंडसभ लाठी भाँजए लागल । लगैत छल जेना आब लाठी चलत तँ ताब । हम दुनूगोटे चुप रही । की बजितहुँ?

"बजैत किएक नहि छह?"

हमसभ तैओ चुप..

एतबहिमे नेताजीक फोनक घंटी बाजि उठल ।

"अहाँकेँ राज्यप्रमुख निवासपर बजाहटि अछि।"

"बात की छैक?"

"से की जाने गेलिऐक?

"किछु तँ अंदाज होएत?"

“किछु नहि कहि सकैत छी । राज्यप्रमुखजी से सभ किछु नहि कहलनि अछि । सोझे कहलाह जे देबन बाबूकेँ बजाबह ।”

ओहिकात राज्यप्रमुखजीक आप्तसचिव फोनपर रहथि ।

नेताजी नव राज्यप्रमुखजीक ओहिठाम पहुँचैत छथि । फटकिएसँ खुफिआसभ हुनका पछोड़ केने चलि रहल छल । आगू-पाछू पुलिसक लोक तँ छलहे । राज्यप्रमुखजीक आवासपर पहुँचतहि हुनकर स्वागतमे राज्यप्रमुखजी स्वयं आगू अबैत छथि । दुनूगोटे अंदर जाइत छथि । बाहर हँसी-ठट्ठाक अबाज सुनाइ पड़ैत रहैत अछि । कहि नहि ओ सभ घंठा भरि की-की करैत रहि गेलाह? मुदा जखन ओ बाहर निकललाह तँ हुनकर प्रसन्नता देखएबला छल। सरकारी कारसँ हुनका वापस अपन घर पहुँचा देल गेलनि । नेताजी आइ कतेक दिनक बाद आश्वस्त लागि रहल छलाह । संभवतः हुनकालोकनिकेँ आपसमे किछु सौदा पटि गेल छलनि । घर पहुँचि भरि छाँक दारू पीलाह आ चैनसँ सुति रहलाह ।

नेताजीक गेलाक बाद हम आ शक्तिनाथ मुस्टंडसभक कब्जामे छलहुँ । चोट लगलासँ हमरा दुनूगोटेक हालत गड़बड़ा रहल छल । हमसभ बेर-बेर ई बात ओकरासभकेँ कहिऐक । मुदा ओकरासभकेँ कोनो असरिए नहि होइक । जहन हमसभ बहुत परेसान भए गेलहुँ तँ ओ सभ नेताजीकेँ फोन केलक ।

“एकरसभक हालत ठीक नहि छैक । जहाँ-तहाँसँ खून निकलि रहल छैक । ओ सभ दर्दसँ परेसान अछि ।

“तँ की करबाक छैक?”

“एकरासभकेँ अस्पताल लए जाएब बहुत जरूरी अछि ।”

“तँ लए किएक नहि जाइत छीही?”

“भेल जे अहाँसँ पूछि ली ।”

“हद्द भए गेल । हम अखन जरूरी काजमे लागल छी । जे जेना जरूरी होइ से करह ।”

तकर बाद ओ सभ हमरा दुनूगोटेकेँ कारमे बैसाकए अस्पताल पहुँचल । अस्पतालक गेटेपर पुलिस ठाढ़ छल । कारसँ उतरलाक बाद आपातकालीन विभागमे पहुँचबासँ पहिनहि पुलिस हमरासभक पछोड़ करए लागल ।

अस्पतालमे मामूली उपचारक बाद साँझ धरि हमरा दुनूगोटेकेँ छुट्टी दए देल गेल । मुदा पुलिस पछोड़ केनहि रहल । चोट कोना लागल,की भेल ,अहाँसभ नेताजी ओहिठाम की कए रहल छलहुँ? तरह-तरहक प्रश्नसँ जान बँचाएब मोसकिल भए गेल। शक्तिनाथ बहुत कहलकैक,खुसामद केलकैक मुदा पुलिस किछु सुनबाक हेतु तैयार नहि भेलैक । शक्तिनाथ बूझि गेलैक जे बिना लेने-देने ई सभ जान नहि छोड़त । जेबीमे हाथ देलक आ जतेक टाका रहैक से पुलिसकेँ जेबीमे चुपचाप राखि देलक । कातमे जा कए ओ सभ टाका गनलक। तुरंते ओकरसभक आव-भाव बदलि गेलैक । पुलिसक कस हल्लुक भए गेलैक ।

“ठीक छैक । अहाँसभ अपन डेरा चलि जाउ । जरूरी हेतैक तँ हम स्वयं संपर्क कए लेब ।”

हमरासभक जानमे-जान आएल । रिक्सा पकड़ि अस्पतालसँ बिदा भेलहुँ ।

12

अस्पतालसँ छुटलाक बाद हमसभ अपन ग्रामीणक डेरापर पहुँचलहुँ । संयोगसँ ओ अपने नहि छलाह । हुनकर परिवारक लोक सेहो नहि रहए । हुनकर भागिन रहथिन । हमसभ अपन परिचय देलिअनि । ओ अपन मामसँ फोनपर गप्प केलाह। हमरासभकेँ ग्रामीणसँ फोनेपर गप्प भेल । तकरबाद निचैनसँ हमसभ ओतए रातिभरि विश्राम केलहुँ । चोटसभमे दर्द होइत रहैत छल । डाक्टर किछु दबाइसभ देने रहए , से खाइत रहलहुँ । तकरबाद जे निन्न पड़लहुँ से भोरे उठलहुँ ।

रातिभरि हम आ शक्तिनाथ भविष्यक दिशा आ दशापर चिंतन करैत रहि गेलहुँ । ने हम सुति सकलहुँ ने ओ । जहलसँ लए कए नेताजीक शक्तिपुरम स्थित घर धरि घटित घटनाक्रम बेर-बेर मोनमे आबि रहल छल । बिना कोनो गलतीकेँ नेताजी हमरा जहल पठा देलथि । हम ओतए कतेको दिन धरि बंद रहलहुँ । बाबू हमर जमानतक हेतु की नहि केलाह? खेत बेचि ओकीलक फीस दैत रहलाह । तारीखपर-तारीख पड़ैत रहल । मुदा जमानत नहि भेल । हम जहलसँ तखने छुटि सकलहुँ जखन नेताजी चाहलथि। कारण,किछु नहि बूझि सकलिऐक। मुदा आब बूझा रहल अछि जे नेताजीकेँ हमरापर सक भए गेल रहनि जे हम हुनका बारेमे बहुत किछु जानि रहल छी,जानि गेल छी । चुनाओक समयमे हमरासँ एकहुटा बात बहराइत तँ ओ बमसँ कम विस्फोटक नहि होइत । नेताजीक राजनीतिक भविष्य हवामे उड़िआ सकैत छल । तेँ तरह-तरहक ब्योंत कए ओ हमरा जहलमे पठओने होएत ।

“मुदा आब की कएल जाए?”-हम ई सबाल बेर-बेर शक्तिनाथसँ पुछलिऐक ।

“हौ! हमरा तोरासँ बेसी थोड़बे बूझल अछि । मुदा एतबा तँ हमहु जनैत छी ,तुहूँ जनैत छह जे देश,समाजक हालत ठीक नहि चलि रहल अछि । नेताजी सन-सन लोक देशक समस्त व्यवस्थाकेँ अपहरण कए लेने अछि । बेसक देशमे कानूनमे सभ बराबर अछि मुदा असलिअत की छैक,से के नहि जनैत अछि? जकरा ने रहबाक ठेकान छैक,ने खेबाक उपाय छैक ,से अपन मत की देत? ओकरा तँ केओ अपना हिसाबसँ बहका लेत । जे चाहत से करबा लेत । ”

“ई समस्या तँ पुरान अछि । कोनो आइ ई सभ भए रहल अछि से बात तँ नहि अछि । समाधान तँ बताबह ।”

“समाधान कोनो भगवान तँ करथिन नहि । हमरे-तोरा आगू आबए पड़त ।”

“हम तँ सभ तरहें तैयार छी । मुदा केमहर की करी से मार्गदर्शन चाही ।”

“से सभ के करत? जकरा कनीको अकील छैक से अपन स्वार्थमे लागि जाइत अछि । के विवादमे पड़ए? ”

“देखहक, कोनो नव दल बनाएब, ओकरा चलाएब आ एहि योग्य बनाएब जे ओ चुनाओ लड़ए आ जीतए बहुत कठिन बात छैक । एहिमे सालो लागि सकैत अछि । तथापि, बात बनए, नहि बनए तकर कोनो ठेकान नहि अछि । कारण जे सत्तामे बैसल जे लोकसभ अछि, से कोनो चुप तँ रहत नहि । ओहो सभ हमरसभक किछु-ने किछु काट निकालबाक प्रयास करत, हमर आदमीसभकेँ तरह-तरहक प्रलोभन दए फोड़बाक प्रयास करत, जे

नहि ओकर बात सुनतैक तकरासभकेँ कोनो-ने-कोनो तरहें फँसेबाक प्रयास करत ।"

"तखन?"

"हमरा हिसाबे तँ जे विरोधी दल अछि, ओकर सहयोग ली। तखनहि हमसभ किछु कए सकब ।"

"कहक माने जे जनक्रान्ति दल(जेकेडी)क संग मिलि जाइ।"

"आओर की? मौकापर झुकनाइ जरूरी छैक । जे संठी जकाँ ठाढ़े रहैत अछि,से टुटि जाइत अछि ।"

"मुदा एकटा बात नीकसँ बूझि लएह । समग्र विकास दल (एसभीडी) अखन शासनमे अछि । ओकरा खिलाफ केओ जल्दी सामने नहि आबए चाहतह।"

"देखहक । डरेलासँ तँ बात नहि बनत । जकरा जे करबाक होइक से करओ । हमसभ तँ अपन विचारमे स्पष्ट होइ । ई दुनिआ डरपोक, कायरक लेल नहि छैक । जे जीबए से खेलए फाग । लड़नाइ तँ छैहे । जखन सभ जाने बँचेबामे लागल रहि जाएत तँ परिवर्तन होएत केना?"

"ठीक छैक, हमसभसँ संपर्क करी सएह ने ।"

"आओर की?"

हमसभ दुनूगोटे गप्प कइए रहल छलहुँ की संदीप ओतए पहुँचल । हमरासभकेँ देखि ओ कनी अचंभित जरूर भेल मुदा जल्दीए सही मुद्रामे आबि गेल ।

"तूँ सभ एहिठाम?"

“संयोगेसँ काल्हि एहिठाम अएलहुँ । मुदा गौंवा नहि छथि। हुनकर भागिन छथिन । ओएह हमरासभकेँ स्वागत कए रहल छथि।”

“हमहु तँ हुनकेसँ भेंट करबाक हेतु आएल रही ।”

हम संदीपकेँ देखैत रहि जाइत छी । ओ भीतरसँ किछु परेसान लागि रहल अछि । किछु बाजि नहि रहल अछि ।

ओ बेर-बेर पाछू दिस ताकि रहल अछि । ओकर मानसिक स्थितिकेँ देखैत शक्तिनाथ बाजि उठैत छथि-

“बात की अछि? तूँ बहुत परेसान बुझा रहल छह? बेर-बेर पाछू दिस किएक देखि रहल छह? ”

मुदा संदीप किछु नहि बाजल । चुप्पे रहि गेल ।”

13

देबनक नेताजी बनबाक खिस्सा बहुत रोचक अछि । हुनकर घरक नाम देबन रहनि । देबनक पिता बहुत गरीब रहथि । बहुत मोसकिलसँ जीवन-यापन करथि । गाममे बहुत कम जमीन रहनि । किछु जमीन बँटाइपर सेहो करथि । आमक मासमे हाटपर आम बेचि लेथि । कुसिआरक मासमे कुसिआर पेरि कए गूंर बनाबथि,सेहो बेचथि । जखन एहूसभसँ काज नहि चलनि तँ कहिओ काल कलकत्ता सेहो चलि जाथि । ओतए भनसिआक काज करथि । देबन हुनकर एकमात्र पुत्र रहथिन । सदिखन हुनका अपने संगे राखथि । जखन कखनहु ओ कलकत्ता जाथि तँ देबनकेँ

सेहो संगे लेने जाथि । नेताजीक माएक मृत्यु बहुत कम बएसेमे भए गेल रहनि । तेँ हुनकर पिता माएक काज सेहो करथि । एकटा बेटी छलनि,जकर बिआह गामे लग सरिआ (संदीपक गाममे) भेल छलनि । नेताजीक नेनपनेसँ ओहिगाममे आवागमन रहैत छलनि। ओहीक्रममे संदीपोसँ हुनकर परिचय भेलनि ।

नेताजी अपन पिताक गरीबी देखने रहथि । ओ अपन परिवारक रक्षा करैत-करैत एकबेर कलकत्तेमे बिमार पड़लाह आ अनचोकेमे चलि जाइत रहलाह । नेताजी ओहि समयमे बीएमे पढ़ैत छलाह । जेना-तेना कलकत्तेमे हुनकर अंतिम संस्कार कए गाम घुरि गेलाह । तकर बादक श्राद्धकर्म गामेमे केलथि । पिताक देहान्तक बाद ओ एकदम असगर भए गेलथि । आब की करथि ? जेना-तेना बीएक परीक्षा देलनि । तकर बाद शक्तिपुरम चलि गेलाह । ओतए जे काज भेटनि से करए लगलाह । क्रमशः हुनकर शक्तिपुरममे परिचय बढ़ए लगलनि ।

शक्तिपुरममे रहैत ओ ट्युसन सेहो करथि । ओहीक्रममे समग्र विकास दल (एसभीडी)क तत्कालीन अध्यक्ष सुमंतजीक बेटी-महिमाकेँ सेहो ट्युसन पढ़ाबथि । संयोग एहन भेलैक जे हिनकासँ पढ़लाक बाद ओकर परीक्षाफलमे निरंतर सुधार होइत गेलैक । बेटीक परीक्षाफल नीक भेलासँ अध्यक्षजी गदगद रहथि । नेताजीक मानदान बढ़ैत गेलनि। अध्यक्षजीक घरमे नेताजीक समय-कुसमय आवागमन सेहो होइत रहलनि। महिमा सेहो हुनका संगे बेसी समय बितबए लगलि । कहिओ काल बजार-हाट सेहो जाए लगलि । जँ कोनो काज होइतैक तँ देबनक संग कए ओ चलि जाइत । अध्यक्षजीक परिवारमे हुनका प्रतिए ततेक विश्वास रहैक जे केओ कोनो प्रकारक आशंका सोचिओ नहि सकैत छल । किछु

दिनक बाद महिमाक मैट्रिकक परीक्षाफल बहराएल । ओ प्रथमश्रेणीमे नीक नंबरसँ परीक्षा पास केलक।

अध्यक्षजीक नेताजीक प्रति विश्वास बढ़िते गेलनि । ओ हुनकर परिस्थितिसँ सेहो चिंतित रहैत छलाह । एकदिन मौका देखि हुनका पार्टी कार्यालयमे काज धरा देलखीन । तकरबाद हुनकर जीवन किछु आसान होबए लगलनि । देबन बहुत इमान्दारीसँ अध्यक्षजीक सेवा करथि । संगहि हुनकर घरपर महिमाक ट्युसन तँ करिते रहथि ।

महिमा आ देबन समय-कुसमय एक-दोसरसँ भेंट करिते रहैत छलाह । अध्यक्षजीक पारिवारिक वातावरण उनमुक्त रहबाक कारण ककरो एहिसभ विषयपर ध्यान नहि गेलैक । ककरो चिंता करबाक प्रयोजन नहि भेलैक । ओहुना अध्यक्षजीक घरक बारेमे तरह-तरहक खिस्सा सौंसे शक्तिपुरममे सुनल जाइत छल । मुदा तँ की? ककरो साहस रहैक जे हुनकर सामनेमे किछु बाजि लेत। कोनो प्रयोजनो नहि रहैक।

एकदिन महिमा आ देबन गंगा कातमे बहुत देरी धरि बैसल रहि जाइत गेलाह । समयपर घर वापस घुरबाक होस नहि रहि गेलनि। इजोरिआ पसरि गेल रहैक । गंगाक प्रवाह आगू-पाछू होइत रहैत छलैक । ओहिना हुनको सभक मोनमे तूफान मचल रहनि। बड़ी कालक बाद अन्हर अएबाक संभावना बनैत देखि ओ सभ उठलाह आ वापस घर दिस बिदा भए गेलाह । तकर बाद ई क्रम चलिते रहल । अध्यक्षजीकेँ समय नहि रहनि,परिवारमे ककरो कोनो मतलब नहि रहनि । महिमा आ देबनकेँ कथुक परबाह नहि रहि गेल रहनि । परिणाम भेल जे एकदिन साँझमे ओ सभ निर्णय केलथि । ओहि निर्णयकेँ लागू करबाक हेतु दोसरे दिन आर्य समाज

मंदिर पहुँचलथि आ ओतए अपन किछु मित्रसभक उपस्थितिमे बिआहक विधि पूर्ण कए लेलथि । बिआह केलाक बाद हुनकासभकेँ साहस नहि होनि जे घर वापस जाइ । सोझे शक्तिपुरम टीसन चलि गेलथि । ओतए विजयपुरमक रेलगाड़ी लागल रहैक । जेना-तेना टिकटक जोगार केलथि आ ट्रेनमे बैसि गेलथि ।

दोसर दिनसाँझमे विजयपुरम टीसन पहुँचलाह । प्लेटफार्म नंबर एक पर ट्रेनसँ उतरि दुनूगोटे बेंचपर जा कए बैसि गेलथि । संजोग देखिऔक जे ओही समयमे अध्यक्षजी विजयपुरमसँ शक्तिपुरम वापस जेबाक हेतु ओतए पहुँचलाह । ओतए दुनूगोटेकेँ एतेक लगीचमे बैसल देखि कनीकाल तँ हुनका विश्वास नहि भेलनि जे ओएहसभ छथि। मुदा लग अएलाक बाद बात परिछा गेलनि ।

“महिमा! महिमा!”-अध्यक्षजी अबाज देलनि । ई तँ बाबूजी बूझा रहल छथि । महिमा हुनकर अबाज सुनि पाछू दिस घुमलीह। अपन पिताकेँ सामने देखि ओ हड़बड़ा गेलीह । देबन सेहो अकचका कए बेंचपरसँ उठलाह । महिमाक माथमे सिन्नुर देखि अध्यक्षजीकेँ बात बुझबामे देरी नहि भेलनि । कनीकाल तँ बहुत छगुन्तामे रहथि। फेर अपनाकेँ सम्हारलाह ।

“जखन तोरासभकेँ बिआह करबेक छलौक तँ हमरा तँ कहितह? नीकसँ उत्सव मनबितहुँ । लोकसभकेँ बजबितहुँ । गीत-नाद होइत । मुदा कोनो बात नहि । जे भेलैक,से भेलैक । आब सभगोटे शक्तिपुरम चलैत छी । ओतहि आगूक कार्यक्रम मनाएब। मोनक किछुओ अभिलाषा तँ पूर्ण होअए । ओतए स्वागत समारोह आयोजित कएल जाएत । तकर बाद तोरासभकेँ जतए जेबाक होअए से जइअह ।”

सभ किछु अनुकूल देखि दुनूगोटे अध्यक्षजीक संगे ट्रेनसँ शक्तिपुरम वापस बिदा भए गेलाह।

14

अध्यक्षजीक बेटीक बिआहक स्वागत समारोह शक्तिपुरममे धूमधामसँ मनाओल गेल । एक सप्ताह धरि विविध कार्यक्रम चलैत रहल । तरह-तरहक नृत्य-संगीतसँ महफिल दिन-राति आनंदमय बनल रहैत छल । जकरा जे मोन होइ से खाउ,जेहन गीत सुनबाक मोन होअए से सुनु । फिल्म देखबाक होअए तँ सएह देखू। कहि नहि सकैत छी जे ओहिठामक वातावरण कतेक आनंदमय रहए । शक्तिपुरमक समस्त गणमान्य लोकसभ एहिमे सम्मिलित भेलथि। जय-जय भए गेल ।

महिमाक संग देबनक बिआह ओकर जीवनक एकटा जबरदस्त परिवर्तनकारी घटना साबित भेल । अध्यक्षजी बहुत दिनसँ एकटा सही उत्तराधिकारीकेँ ताकि रहल छलाह । दिन-राति पार्टीक काज करैत-करैत थाकि गेल रहथि । देबनपर हुनकर ध्यान बहुत दिनसँ छलनि । आब तँ ओ हुनकर जमाए बनि गेल छलखिन। सोचलाह जे हुनके आगू कएल जाए । ओना ओ महिमाकेँ पहिने मौका देबए चाहथि । मुदा ओ राजनीतिमे जेबासँ साफे मना कए देने रहनि ।

“राजनीतिमे हमरा कोनो रूचि नहि अछि ।”-ओ साफे जबाब दए देने रहनि । मुदा आब तँ ओ विकल्प भेटि गेल रहनि । तेँ बिना कोनो विलंबकेँ आगू बढ़बाक निर्णय केलनि । एकदिन

साँझमे ओ महिमा आ देबनक संगे गप्प-सप्प करैत छलाह । माहौल अनुकूल देखि बजलाह-"हम आब राजनीति करैत-करैत थाकि गेल छी । बहुत दिनसँ एकटा सही उत्तराधिकारीकेँ ताकि रहल छलहुँ । संयोगसँ देबन हमरासभकेँ बहुत उपयुक्त बूझा रहल छथि । हम चाहैत रही जे पार्टीक कमान परिवारेमे रहि जाए । सेहो अभिलाषा हमर पूरा भए जाएत। हमरा जीबैत ककरो साहस नहि छैक जे हमर प्रस्तावक विरोध करत । सभक फाइल हमर आलमीरामे बंद अछि । जँ केओ अनट करत तँ परिणाम भोगत । ई बात सभ जनैत अछि । तेँ हमरा विचारसँ जल्दीए देबनकेँ पार्टीक कार्यकारी अध्यक्ष बनेबाक घोषणा कए देल जाए। तोहर सभक की विचार?"

देबन स्वीकृतिमे मुड़ी हिला देलनि । तकर बाद अध्यक्षजी बिना कोनो विलंबकेँ आगू बढ़ैत गेलाह । देबन पार्टीक कार्यकारी अध्यक्ष बना देल गेलाह । ततबे नहि,तकर बाद जतेक पदसभ रहैक ताहिपर गोट-गोट कए देबनक पसिंदक लोकसभकेँ बैसा देल गेलनि। अध्यक्षजीक कामना इएह रहनि जे देबन निष्कंटक राज करथि । पार्टी आ सरकार दुनूमे । अध्यक्षजीक ओहिठाम संबंध भेलासँ देबनक भाग्य पलटी लेलकनि । ओ हुनकर अकूत संपत्तिक महिमाक संग उत्तराधिकारी भए गेलथि। संगहि पार्टीक कार्यकारी अध्यक्षक पद सेहो दहेजमे भेटि गेलनि ।

मुदा सभटा सोचलाहा थोड़बे होइत छैक?पार्टीक बहुत वरिष्ठ लोकनिसभ कहि नहि कहिआसँ आश लगओने छलाह जे अध्यक्षजी आसन खाली करताह तँ हमरे नंबर आओत। मुदा अचानक देबन कतहुँसँ टपकि गेलाह। एकहि बेर कार्यकारी अध्यक्ष सेहो बनि गेलाह। सभटा शक्ति हुनकेमे केन्द्रित भए

गेलनि। बँकिए लोकसभक हाथमे फोकला । अध्यक्षजीक एहि काजक सामना-सामनी तँ केओ विरोध नहि केलक ,मुदा पार्टीमे भीतरे-भीतर दू गुट बनि गेल । एकगुटमे वरिष्ठ लोकसभ छलाह जे अपना-आपकेँ ठगल महसूस कए रहल छलाह । दोसर दिस देबन आ हुनकर समर्थक छलाह । सही मानमे ओ सभ देबनक कोनो शुभचिंतक छलाह से बात नहि रहैक । देबनक संग देबामे हुनका सभकेँ तात्कालिक फएदा भेलनि । पार्टी आ सरकारमे महत्वपूर्ण पदसभ भेटलनि । मुदा थोड़बे दिनक बाद चुनाओ भेलैक । अध्यक्षजीक प्रभावसँ वा जेना-तेना हुनकर पार्टी चुनाओ जीति तँ गेल मुदा राज्यप्रमुखक पद केओ आओर हथिआ लेलक । पार्टीक चुनल गेल जन प्रतिनिधिमे सँ बहुमत देबनक खिलाफ चलि गेलनि। परिणाम सामने छल।

चुनाओ जितबाक हेतु नेताजी कोनो कर्म छोड़ने नहि छलाह। हमसभ सेहो शुरुमे ओकर पाछू-पाछू घुमैत रहलहुँ । मुदा साँप संगे दोस्ती कतेक काल चलैत? मौका पबितहि ओ हमरासभकेँ डंक मारलाह । आओर जे भेल,से भेल मुदा हमसभ नेताजीकेँ नीकसँ चिन्हि गेलहुँ । नेताजीकेँ तँ हमरासभपर कहिओ विश्वास रहबे नहि करनि। ओ तँ हमरासभकेँ मात्र इस्तमाल करैत छलाह। मुदा कतेक दिन एना चलितैक? आखिर हम,शक्तिनाथ आ संदीप एकठाम भए गेलहुँ । एकठाम आबि तँ गेलहुँ मुदा हमरासभक पासमे साधन बहुत सीमित छल । आइ-काल्हिक राजनीति तँ मात्र टाकाक खेल अछि । जँ टाका अछि,लाठी अछि तखनहि सिद्धान्तक बात करू ।

15

संदीप अचानक हमरा सभक लगीच आबि गेल छल । एहिसँ पहिने बहुतदिन धरि ओ नेताजीक खासम-खास रहए । आब की भेलैक की नहि ओ ओहिठामसँ जान बँचा कए भागल । आएल तँ रहए गौंवासँ भेंट करए मुदा भेटि गेलिऐक हमसभ । ओ ततेक आहत लगैत छल जे मौका भेटितहि मोनक बात उगलैत गेल । चुप्प रहब ओकरा बसमे नहि रहैक । ओ कहए लागल-

"किछु करैत जाउ । लगैत अछि जे माथ फाटि जाएत ।"

"की भेलह?"

"की कहू? बाजल नहि जाइत अछि । ई नेताजी बड़ अन्यायी अछि,नीच अछि । सभ तरहें बरबाद कए देलक ।"

"रे! भेलैक की से तँ बुझिऐक?"-शक्तिनाथ बाजल ।

"कोनो एक दिनुका बात छैक जे कहि दिअ आ अहाँ खिस्सा बूझि जेबैक । अन्याय करब, निर्दोष लोकक शोषण करब ओकर चालि छैक ।"

"मुदा तोरा ई देवज्ञान अचानक केना भए गेलह? सालक-साल तँ ओकरे सेवामे लागल छलह?"

"से की कहूँ? जे की करी आ किएक करी? आ जँ कहबे करब तँ अहाँसभकेँ विश्वास होएत? कदापि नहि? लोक एतबे कहत जे अखन नेताजीक शक्ति कम भए गेलनि अछि तेँ ई बदला निकालि रहल अछि ।"

“देखहक । लोकक काज छइ कहनाइ । ओ तँ कहबे करत आ हमसभ सुनबो करब । मुदा ताहिसभसँ सत्य नेने बदलि जेतैक ।”

“तखन तूँही कहह जाहिसँ तोहर किछु मदति कए सकी आ हमहुसभ किछु शांत होइ ।”

संदीपक हालत बहुत गड़बड़ लागि रहल छल । तथापि,ओ वारंबार बाहर दिस इसारा करए । माने ओमहर देखिऔक । आखिर हम शक्तिनाथकेँ बाहर जा कए देखबाक हेतु कहलिऐक । ओ तुरंत बाहर गेल । सड़कक कातमे एकटा महिला बैसल कानि रहल छलि । संदीप ओहि महिला लग जाकए ठाड़ भए गेल । ओ किछु नहि बजलैक, कनिते जा रहल छलि । आखिर शक्तिनाथे पुछलकैक-

“अहाँ संदीपक संगे छिऐक?”

ओ सहमतिमे मुड़ी हिला देलकैक ।

“तँ एहिठाम किएक बैसल छी?”

“संदीपक बाट ताकि रहल छी। ओ कहलथि जे हम गौंवासँ भेंट कए कनीके कालमे वापस होएब, तखन संगे चलब ।”

“मुदा ओ तँ हमरेसभ लग छथि । ओकरो मोन ठीक नहि बुझाइत छैक । अहाँ हमरा संगे चलू ।”

ओ महिला शक्तिनाथक बात मानि कए ओकरा संगे बिदा भए गेलि । शक्तिनाथ ओहि महिलाक संगे अबैत छथि । ने संदीप ने ओ महिला किछु कहबाक स्थितिमे बुझाइत छथि । हम बेर-बेर प्रयास केलिऐक जे संदीप किछु कहए जाहिसँ वस्तुस्थितिक सही

अनुमान लगा सकी आ समाधानक बारेमे सोचि सकी । मुदा ओ किछु बजबे नहि करए । ओकरासभकेँ कतहु कोनो चोट नहि लागल छलैक । देहमे बोखार नहि रहैक। कोनो स्पष्ट शारीरिक परेसानी नहि देखाइक । तखन कष्ट की छैक?

हम आ शक्तिनाथ आपसमे किछु चर्चा करैत छी । सड़कक कातमे बनल दोकानपर जाइत छी । ओतए सिंघारा आ घुघनी टटका बनल छल । हम पर्याप्त मात्रामे सिंघारा आ घुघनी कीनि लैत छी । शक्तिनाथ चाह बनबैत अछि । दुनूगोटेकेँ चाह क संग सिंघारा आ घुघनी दैत छिऐक । हमहुसभ संगे चाह पिबैत छी, सिंघारा, घुघनी खाइत छी । सिंघारा, घुघनी आ चाहक जोगसँ ओकरासभक जेना भक्क टुटलैक। आकृतिपर हरिअरी अएलैक । हम कहलिऐक-

“तोरासभकेँ अस्पताल लेने चलैत छी । संभवतः डाक्टरक इलाजसँ बेसी फएदा हेतह ।”

“नहि, नहि । हमसभ कतहु नहि जाएब । नेताजीक गुंडासभ हमरासभक पछोड़ कए रहल अछि । जँ हमसभ पकड़ेलहुँ तँ गेल घर छी ।”

“एकटा काज करह”-शक्तिनाथ बाजल ।

“की? कनीके हटि कए एकटा औषधालय छैक । ओतए एकटा डाक्टर रहैत छथि । हुनके बजा लैत छिअनि ।”

“ठीक कहलह । सएह करह ।”

शक्तिनाथ ओहि डाक्टरक ओतए जाइत अछि । हुनका सभटा बात कहैत छनि । डाक्टर तुरंत अपन स्कुटरसँ शक्तिनाथक संगे बिदा भए जाइत छथि ।

16

हमरासभक समयमे राजापुरमे हाइ इसकूल रहैक । ओहिमे लगपासक विद्यार्थीसभ मैट्रिक धरि पढ़ैत छल । इलाकाक मानल इसकूल छल ओ । इसकूलक प्रधानाध्यापककेँ राष्ट्रपति पुरस्कार भेटल रहनि । ओहि इसकूलकेँ चमकाबएमे हुनकर जबरदस्त योगदान छल । ओहि इसकूलक कतेको विद्यार्थीसभ एकसँ एक पद धरि पहुँचल छलाह। सलाहकार,अधिकारी,अभियंता,डाक्टर,बनि इलाकामे नाम केने छलाह। ओही इसकूलमे हम,संदीप आ शक्तिनाथ आठमामे नाम लिखओने रही । तकर बाद मैट्रिक धरि हमसभ संगे-संगे पढ़ल रही। तीनूगोटेक गाम लगे-पासमे छल । तँ हमसभ संगे इसकूल जाइ,संगे वापस गाम आबी । गाम पहुँचबासँ पहिनहि हाटसँ तीन दिस रस्ता फुटैत छलैक । सरिआ,मदनपुर आ सतटोलक हेतु । ओहिठामसँ हमसभ अपन-अपन घरक रस्ता पकड़ी । इसकूलसँ मैट्रिक पास केलाक बाद हमसभ आनन्दपुर कालेजमे नाम लिखओलहुँ । ओहीठाम नेताजीसँ परिचय भेल । नेताजी समय-समयपर अबैत जाइत रहैत छलाह । हुनकर प्रयास रहैत छलनि जे अधिक सँ अधिक युवककेँ अपना संग जोड़ी । अपन वर्चस्व बनाबी । ताहि हेतु युवक लोकनिकेँ तरह-तरहक प्रलोभन सेहो देथि। संदीप हुनके चक्करमे फँसैत चलि गेल रहए आ कालांतरमे बहुत मोसकिलमे पड़ि गेल रहए । हमहुसभ नेताजीक संपर्कमे तँ अएबे केलहुँ आ परेसानीमे सेहो परबे केलहुँ ।

एक-दू दिनक बाद संदीपक हालतमे सुधार भेलैक । ओकरा संगे आएलि महिलाक हालत सेहो सुधरलैक । दुनूगोटे साँझमे बिदा भए गेल । जाइत-जाइत संदीप कहलक-

“हम हिनका पहुँचओने अबैत छी । तकर बाद चैनसँ आगूक काजपर लागि जाएब ।”

संदीपक गेलाक बाद हम आ शक्तिनाथ रातिभरि माथापच्चीमे लागल रहलहुँ ।

“कहीं एहन ने होअए जे संदीप नेताजी दिससँ काज करैत रहए, हमरसभक सभटा समाचार ओकरा दैत रहैक आ कहिओ हमसभ मोसकिलमे पड़ि जाइ ।”

“बात तँ वाजिब छैक । हमसभ थोड़े दिन सतर्क रहब । ओकरापर नजरि राखब । तकर बादे ओकरा अपन बातसभक जानकारी होबए देबैक ।”

“मुदा ई नहि बुझा रहल अछि जे ओ एकटा महिलाक संगे एना किएक घुमि रहल अछि? ओकरासभक आपसी की संबंध छैक?”

“धैर्य राखह । समयसँ सभबात अपनहि स्पष्ट भए जाएत।”

संदीप अपन बातक पक्का निकलल । दोसरे दिन वापस ओहीठाम आबि गेल । ओ महिला के छलथि,आ संदीप हुनका कतए पहुँचा देलकनि,से ने ओ किछु कहलक आ ने हमसभ किछु पुछलिऐक ।

संदीप घुरि आएल । गामसँ हमर गौंवा ताधरि नहि आएल छल । हमसभ आब ओतए कतेक दिन रहितहुँ,ओहो घरबैआ बिना। तेँ सभसँ पहिने शक्तिपुरममे एकटा डेरा लेलहुँ । शक्तिपुरममे रहनाइ एहि लेल जरूरी छल जे ओ राजनीतिक गतिविधिक केन्द्र अछि । ओतए तरह-तरहल जानकारी भेटैत रहैत अछि । बड़ीटा खाली प्लाटमे कोनटापर एकटा कोठरी चौकीदारक हेतु बनल छलैक । संप्रति ओतए कोनो काज नहि भए रहल छलैक। तेँ ओकर मालिक ओकरा मामुली किरायापर हमरासभकेँ दए देलक । कम सँ कम जगहक देख-रेख होइत रहतैक आ किछु किराया सेहो भेटैत रहतैक। ओह कोठरीमे हमसभ निचैनसँ रही । दिन-राति जतेक गप्प करबाक मोन होअए गप्प करी। केओ टोकनाहर नहि,केओ सुननाहर नहि ।

डेरा भेटि गेलाक बाद हमसभ दिन-राति अपन लक्ष्यपर ध्यान केन्द्रित केनाइ शुरु कए देलहुँ । संदीपक प्रतिए जे हमरासभकेँ सक शुरुमे रहए से कालान्तरमे समाप्त भए गेल । ओ मोनसँ हमरासभक संगे लागि गेल छल । एकदिन हमसभ सोझे जनक्रांति देलक मुख्यालय पहुँचलहुँ । ओतए सौंसे भम्ह पड़ि रहल छल । चुनाओ हारि गेलाक बाद जनक्रांति दलक संयोजकजी खाट धए लेने रहथि । स्वास्थ्य गड़बड़ा गेलनि । पार्टीक आमदनी घटैत गेल । कर्मचारीसभ काज छोड़ि-छोड़ि चल गेल । कैकटा सहयोगीसभ दल बदल कए लेलनि । जे केओ बाँचल रहथि सेहो अपन-अपन जोगारमे लागल रहथि जाहिसँ पार्टीकेँ कब्जा कए लेथि । संयोजकजीकेँ दुखित भए गेलासँ ओकरासभकेँ तदनुकूल अवसर सेहो भेटि गेलैक ।

एहन माहौलमे हमसभ ओतए पहुँचल रही । हमरासभकेँ देखि संयोजकजी बहुत प्रसन्न भेल रहथि । भरि मोन गप्प-सप्प भेल। ओहिदोन साँझ कोना पड़ि गेल से पता नहि लागल । शक्तिनाथ इसारासँ कहलक जे आब चलक चाही । हमसभ आब चलबाक हेतु तैयार होइत छी । हमरा सभकेँ जेबाक उपक्रममे देखि ओ बहुत उदास भए गेलाह ।

"अहाँ बहुत उदास लागि रहल छी?"-हम पुछलिअनि।

"फेर असगर भए जाएब से चिंता सता रहल अछि ।"

"कोनो बात नहि, हमसभ फेर काल्हि आबि जाएब ।"

डेरा पहुँचि हमसभ राति भरि हुनके बारे मे चर्च करैत रहलहुँ । ओ बहुत परेसान बुझा रहल छलाह । हुनकर हार्दिक इच्छा रहनि जे हमसभ हुनकर दलमे सामिल भए जाइ । हमहु सभ तँ सएह सोचैत रही । एकर बाद बरोबरि हमसभ हुनकासँ भेंट करए अबैत -जाइत रहलहुँ । नित्य जखन वापस होबए लागी तँ ओ उदास भए जइतथि । बुझाइत जेना किछु कहए चाहैत छथि ।

17

शक्तिपुरम सन सहरमे डेरा भेटि गेलाक बाद हमसभ कनी निचैन भए गेलहुँ । कम सँ कम रहबाक ठेकान तँ भेल । किराया सेहो मामुली,नहिए बुझू । मालिक बूझथि जे मगनीमे प्लाटक रखबारी भए रहल अछि ,सएह कोन कम । नहि तँ ओही लेल सभ मास खर्चा होइतनि । हमसभ दिन-भरि एमहर-ओमहर बौआइ आ

साँझमे तीनूगोटे संगे भानसक ओरिआनमे लागि जाइ । संगे गप्प -सप्प तँ चलिते रहए । संदीपक खिस्सासभ तँ बेस रमनगर होइत छलैक । पहिने ओकर मान्यता जे किछु रहल होइक,मुदा आब ओ हमरासभक संग सभप्रकारें एक छल । जखन साँझमे हमसभ चाहपर बैसी आ आपसमे चर्च करी तँ संदीप शुरु भए जाइत । गप्प कतहुसँ शुरु होइत मुदा नेतेजीपर जा कए अटकि जाइत । नेताजी जेना ओकर मोनमे धसि गेल रहथि। बातो सही रहैक,कारण सालक-साल ओ नेताजीकेँ आदर्श मानि कए हुनका हेतु प्राण-प्रणसँ लागल रहल ,जहाँ-तहाँ बौआइत रहल । मुदा नेताजी तँ छलाह महाधूर्त । ओ सदिखन अपन काज सुतारबामे ओकर उपयोग करैत रहलाह। चलू,ओतबो बुझलहुँ । मुदा बादमे तँ ओकरासँ ओ गलत-गलत काज करबैत छलाह,एक हिसाबे ब्लैकमेल करैत छलाह ।

एकदिन अपन डेरापर हमसभ संचमंच बैसल रही । संदीप बजैत जाइत छल । ओ कहिते जा रहल छल -

“नेताजी नीक आदमी कहिओ नहि छल । हमरासभकेँ ओकरा चिन्हबामे देरी भेल से तँ हमरे सभक दोष थिक ।”

“से की?”

“कोनो एकटा घटना भेलैक । होइते रहलैक । हम तँ ओकरा संगे पहिल बेर शक्तिपुरम गेलहुँ । तखने ओकरा डेरापर बहुत रास गड़बड़ बात सभ बुझाएल । मुदा ओ हमरा चुप्प कए दितए-

“खबरदार! एहिठामक कोनो बात बाहर नहि जेबाक चाही। जँ से भेल तँ जानोसँ हाथ धोबए पड़ि सकैत अछि ।”- नेताजी हमरा कहने रहए ।

“ओतहि गामक बैसारमे बम फोड़बाक योजना बनल रहैक। हमरे हाथमे ओ झोरा धरा देने रहए । हम ओहि झोराकेँ मंच लग राखि घसकि गेल रही । तकर बाद तँ जे भेलैक से तँ देखबे केलहक ।”

“मुदा ओहि कांडमे तँ हमरा फँसा देलक ।”

“ओहो नेतेजीक काज रहैक । जे केओ ओकर लगीच अबैत छल तकरा संगे ओ एहिना विश्वासघात करैत छल, ओकरा कोनो-ने-कोनो तरहें फँसा दैत छल । तकरबाद ब्लैकमेल करैत छल, उल्टा-पुल्टा काज करबैत छल ।”

ओहि घटनाक बाद हम भागल-भागल नेताजीक शक्तिपुरम डेरामे नुकाएल रही । नेताजी हमरा सुनबैत रहितथि-

“पुलिस तोहर पाछू पड़ि गेल छह । बँचि कए रहिअह ।”

हम एहिसभसँ बहुत डराएल रही । जे नेताजी कहथि से करैत चलि जाइ । एहि तरहें हम एक सँ एक गलत काज करैत रहलहुँ । बुझिओ कए हुनकर विरोध नहि कएल होअए । बात एतबे रहितए तँ चलू । मुदा नेताजी तँ सभकर्मक आदमी छलाह। ओ हमरा नेपालक सीमापर पठबए लगलाह । ओहिठामसँ हम एकटा डिब्बा आनी आ ओकरा पंजाबमे कतहु पहुँचाबी । ओहि डिब्बामे की रहैक से हम आइ धरि नहि बूझि सकलिऐक । हमरा आगू-पाछू सदिखन ओकर आदमीसभ लागल रहैत छल । कखनो काल इसारासँ हमरा पेस्तौलो देखा दैत छल। हमरा तँ होअए जे बेहोस

भए ओतहि खसि पड़ब । मुदा साहस करी । करवनो-करवनो अपनोपर तामस होइत छल । मुदा ओहि जंजालसँ निकलबाक कोनो रस्ता नहि देखाइत छल । जखन कखनहु नेताजी शक्तिपुरम डेरापर आबथि,हम हुनका लग जेबाक प्रयास करी । मुदा ओ से हिसाब केने रहितथि जे कहुना हुनकासँ भेंट नहि होइत छल । जखन ओ शक्तिपुरम डेरापर रहथि तँ हमरा कोनो-ने-कोनो काजे कतहु कोनो काजमे पठा दैत छलाह। हमहु की करितहुँ? जान बँचेबाक प्रयासमे सभटा सहि जाइ ।

एक राति तँ हद भए गेल । एक बजैत रहल हेतैक । हम निभेर सुतल रही की घंटी बाजल । फ्लैट खोलैत छी तँ देखैत छी नेताजी पीने बुत्त एकटा महिलाकेँ पँजिऔने ठाढ़ छथि। जाबे हम केबार खोली-खोली ताबे तँ कैकबेर घंटी बजा देलथि । धरफरा कए केबार खोलैत छी । ओहि महिलाक सामनेमे हमरा दस हजार फज्जति केलथि । ओतेक रातिमे फसाद करब हमरा उचित नहि बुझाएल । चुप्पे रहि गेलहुँ । । नेताजी ओहि महिलाक संगे अपन कोठरीमे चलि गेलथि । घंटा भरिक बाद हमर केबारपर हल्लुक अबाज बुझाएल । लागल जेना केओ केबार खटखटा रहल अछि। हम केबार लग अबैत छी । भुरकीसँ देखैत छी । ई तँ ओएह महिला अछि । हम ओकरा अंदर आबए दैत छिऐक । ओकर हालत कहबाक जोगर नहि छल । ओ निरंतर कानि रहल छलि। हमरा बुझेबे नहि करए जे की करी? कहीं नेताजी बुझलथि तँ गेल घर छी।

“अहाँ एतेक परेसान किएक छी?”

“हमरा तुरंत बाहर लए चलू, नहि तँ .. ।”

“मुदा नेताजी.”

“ओ तँ पीने बुत्त भेल पड़ल अछि । होसमे नहि अछि । ओकर कोठरीक केबार खुजले रहि गेल छलैक । तेँ मौका देखि हम ओकर चांगुरसँ घसकि गेलहुँ अछि । हमरा बाहर लए चलू, देरी नहि करू।”

“मुदा एतेक रातिमे ..हम कतए लए जा सकब ।”

“कतहु चलू । मुदा एहिठामसँ लए चलू ।”

हम मोने-मोन हनुमानजीकेँ गोहरेलहुँ आ ओहि महिलाक संगे फ्लैटसँ बाहर निकलि गेलहुँ ।

ओहिठामसँ निकलि हमसभ जेना-तेना शक्तिपुरम टीसन पहुछ गेलहुँ । राति भरि ओतहि नुकाएल रहलहुँ । भोर भेलापर ओतहि नित्यकर्म केलहुँ । ओहिठामसँ कतए जाइ.की करी किछु फुरेबे नहि करए । हम ओहि महिलाकेँ किछु पुछिऐक तँ जबाबमे बस कानए लागए । हम तँ बहुत मोसकिलमे पड़ि गेल रही । कैकबेर ओकर नाम,गाम पुछलिऐक । बहुत मोसकिलसँ ओ अपन नाम कहलक-“शिखा” । तकर बादे हम ओकरा संगे घुमैत-फिरैत ओहि डेरापर पहुँचल रही । अहाँसभकेँ ओतए देखि बहुत आफियत बुझाएल रहए । भेल जे साइत आब जान बँचि जाएत ।

18

कालक्रमे जनक्रान्तिदलक सभटा कार्यभार हमरापर बजड़ि गेल । तकर प्रमुख कारण छल जे तत्कालीन संयोजकजीकेँ हमरासभपर बहुत विश्वास भए गेल रहनि । पुरनका सहयोगीमे सँ

अधिकांश तँ पार्टी बदलि लेने रहथि । किछुगोटे आब राजनीतिमे निष्कृय भए गेल रहथि । तेँ ओ सोचलथि जे युवकसभकेँ आगू आनबाक चाही । तखनहि जा कए परिवर्तनक उमीद कएल जा सकैत अछि । नहि तँ पार्टीक सत्यानाश तय अछि । एक हिसाबे ओ बहुत त्याग केलाह ,नहि तँ आइ-काल्हि नेताजीसभ मरलाक बादे अपन पदक त्याग करैत छथि । ने हुनका देश सँ कोनो मतलब रहैत छनि,ने पार्टीसँ । अपन स्वार्थ सिद्ध हेबाक चाही । ताहि लेल जे करए पड़नि,जतेक बेर पार्टी बदलए पड़नि । जे जायज,नाजायज करए पड़नि । एहने सोचक कारण नेताजी चुनाओसँ पहिने अपने चुनाओ सभामे बम विस्फोट करबा कए जनताक सहानुभूति अनबाक प्रयास केने छल । कतेको निर्दोष युवकसभकेँ बहका-बहका कए गलत-सलत काज करबैत रहैत छलाह। जखन बाहर कतहु निकलितथि तँ श्वेत वस्त्रमे चमकैत रहैत छलाह। जँ हुनकर भाषण सुनितहुँ तँ लागैत जेना एहन आदमी साइते केओ भेटत । मुदा कथनी-करनीमे कोनो समन्वय नहि रहैत छलनि । जेना हाथीक दूटा दाँत होइत अछि,तहिना नेतोजीक हाल रहनि । जनता लग नेताजी किछु रहैत छलाह आ असल जीवनमे किछु आओर । कतहुसँ नहि लगैत जे ई ओएह आदमी छथि ।

हमसभ ई निश्चय केलहुँ जे राजनीतिक वर्तमान स्वरुपकेँ बदलि कए रहब । ताहि ले जे करबाक होएत से करब । एकटा एहन व्यवस्थाक स्थापना करब जाहिमे संविधान आ कानून मात्र संपन्न लोकक वस्तु नहि रहि जाएत। सही मानमे समतामूलक आ जनकल्याणकारी समाजक स्थापना करबाक प्रयास करब जाहिमे जाति,धर्म,लिंग,वर्ण आदिक आधारपर कोनो भेदभाव नहि कएल जाएत। ओना तँ सभ एतबे करबाक गप्प करैत रहैत अछि ,मुदा

ओकरसभक व्यवहार आ काजमे जमीन आसमानक अंतर रहैत छैक । तेँ हमसभ समाजक सामने एकटा उदाहरण प्रस्तुत करए चाहैत छलहुँ जाहिसँ गरीब सँ गरीब व्यक्तिकेँ लगैत जे ओहो एही देशक नागरिक अछि । ओकरो एहि देशमे रहबाक,इज्जतिसँ जीबाक ओतबे अधिकार छैक जतेक धनीक आ सुविधा संपन्न लोकसभकेँ । लोककेँ जाति,धर्मक आधारपर बाँटि कए किछुगोटे समाजकेँ असल लक्ष्यसँ फटकी लए जेबामे सफल भए जाइत छथि। भोटबैंकक राजनीति कए ओ सभ सत्ता हथिआ लैत छथि। तकर बाद अपन स्वार्थपूर्ति हेतु अपन अधिकारक दुरुपयोग करैत छथि । एहि स्थितिकेँ बदलबाक अछि। हमसभ आपसमे एहि तरहक दृढ़ निश्चय कएल आ ताहि हेतु दिन-राति लागि गेलहुँ । संयोगसँ हमरासभकेँ जनक्रान्तिदलक आधारभूत संरचना भेटि गेल अछि । तकर सदुपयोग करबाक अछि । हम ,शक्तिनाथ आ संदीप एहि विषयसभपर एकमत रही आ निश्चय कए लेने रही जे दिन-राति एक कए एकर समर्थनमे जनतामे जागृति आनल जाए ।

जनक्रान्ति दलक काज आगू बढ़एबाक हेतु सभसँ बेसी जरूरी छल जे अधिक सँ अधिक लोककेँ खास कए युवक लोकनिकेँ एहिसँ जोड़ल जाए । ताहि हेतु गामक-गाम सदस्यता अभियान चलाबक निर्णय भेल । पार्टीक काज सुचारु रुपसँ चलेबाक हेतु एकर कार्यसमितिकेँ पनुर्गठित कएल गेल । ओहिमे एकछाहा युवकलोकनिकेँ राखल गेलनि । एहन लोकसभ चुनि-चुनि कए ताकल गेलाह जे राजनीतिकेँ अपन पेशा नहि अपितु सेवाक माध्यम बनाबए चाहैत छथि ।

मुदा किछु पुरान लोकसभ हमरसभक प्रयासकेँ अपन राजनीतिक आस्तित्वपर एकटा जबरदस्त आघात बूझलनि । ओ

सभ जी-जानसँ हमरसभक प्रयासकेँ असफल करबाक हेतु लागि गेलाह । जे किछु हमसभ अंदरमे निर्णय करी तकरा तुरंते नेताजी लग पहुँचाबए लगलाह । नेताजी तँ छटल बदमास छलाह,संगहि षड्यंत्र करबामे सेहो माहिर छलाह। ओ हमरसभक प्रयासकेँ निष्फल करबामे लागिए नहि गेलाह,अपितु किछु हद धरि सफलो होबए लगलाह । हमसभ किछु करबाक प्रयास करी ताहिसँ पहिनहि अपने पार्टीमे हंगामा होबए लागए । एहिसभसँ हमसभ बहुत परेसान भए गेलहुँ । किछु बुझेबे नहि करए जे की करी? कोन रस्ता पकड़ी जाहिसँ बिना बेसी झंझटिकेँ लक्ष्य दिस बढ़ल जा सकए ।

19

ओहि दिन हम, शक्तिनाथ आ संदीप राति भरि एही विषयसभपर चर्चा करैत रहि गेलहुँ । ककरो निन्न नहि होइत रहए। सभ चिंतासँ परेसान छल । कएल की जाए? नेताजीक आक्रमणसँ बचाओक की रस्ता होएत?हमसभ इएहसभ सोचि रहल छलहुँ की बुझाए जेना किछुगोटे हमरेसभक डेरा दिस बढ़ल चलि आबि रहल अछि । बीच- बीचमे टार्चसँ फोकसीन मारि रहल अछि । हमसभ सतर्क भए जाइत छी । संदीप,शक्तिनाथ लाठी लेने डेराक केबारसँ सटले ठाढ़ भए जाइत छथि । थोड़बे कालमे केबारपर केओ जोर-जोरसँ लात मारि रहल छल । आबाज क्रमशः बढ़िते जा रहल छल। हमसभ पूराशक्तिसँ केबारकेँ बँचेबाक प्रयासमे लागल रहलहुँ। मुदा ओ कतहु बाँचए । अंततोगत्वा, केबार टुटि कए खसि पड़ल।

बदमाससभ घरमे घुसिते चिचिआए लागल-

“कहाँ अछि शिखा? जल्दी निकाल ओकरा नहि तँ तोहरसभक वलिप्रदान तय छौक ।” डरसँ संदीप थर-थर काँपि रहल छल । बदमाससभ ओकरे दिस मुखातिब छल । ओहिमेसँ एकगोटे ओकरापर पिस्तौल तानि देने छल । दोसर ओकर गट्टा पकड़ने छल । तेसर हाथमे चाबुक भाँजि रहल छल । पाँचमक हाथमे दिआ सलाइ आ मटिआ तेलसँ भरल डिब्बा छल।

“बाज-जल्दी बाज । की चाहैत छैं? जँ कनीको देरी केलैं वा छल करबाक प्रयास केलैं तँ नामो-निसान मिटा देबौक । सभ किछु तैयार अछि ।”

संदीपक सीटीपीटी गुम्म छल । ओ किछु बाजि नहि पाबि रहल छल । जेना माथासँ सभकिछु बिला गेल रहैक । शक्तिनाथकेँ नहि रहल गेलैक । ओ किछु प्रतिरोध करबाक प्रयास केलक । किछु बजाबक प्रयास केलक ।

“तूँ सभ के छह आ एना किएक कए रहल छह?”

“तोरासभकेँ एहिठाम के पठओलक?” -हम पुछलिऐक ।

एतबहिमे ओहि बदमासमेसँ एकगोटे बाजल-

“एकरा दुनूक हाथ-पैर बान्ह । बहुत फटर-फटर कए रहल अछि ।”

औ बाबू! देखिते-देखिते ओ सभ हमरा दुनूगोटेक हाथ-पैर बान्हि घरक कोनमे पाड़ि देलक । मुँहमे पट्टी सेहो साटि देलक । ऊपरसँ मटिआ तेलक डिब्बा तेनाक रखने छल जेना आब देहपर

ढारिए कए रहत । बुझाएल जेना हमसभ आब क्षणे भरिक पाहुन छी ।

हमरा दुनूगोटे ई दुर्गति देखि संदीप चिचिआ उठल-

“हिनकासभक किछु गलती नहि छनि । हिनकर जान बकसि दिअनु । किछु आफियत दिअ । हमसभटा बात कहैत छी।”

फटर-फटर केनाइ बंद करह । जे पुछल गेलह अछि से जल्दी आ सही-सही बाजह । नहि तँ तोहरसभक पकिआ इलाज तैयार अछि । सामने पिस्तौल बला अपन हाथ ऊपर दिस केलक आ क्रमशः संदीप दिस बढ़ए लागल ।

“ठहरह, ठहरह । हम तोरासभकेँ शिखा लग लेने चलैत छी ।”

“ओ अछि कतए से बाजह?”

“नहि ताकि सकबहक । हमरा संगे चलह । हम शिखासँ तोरासभक भेंट करा देबह ।”

“आ जँ किछु छल-प्रपंच करबह तखन?”

“तखन जे मोन होअह से कए लिअह ।”

“रे! एकर बातक कोन विश्वास? अखन जान बँचेबाक हेतु किछु बकि रहल अछि। की पता जे बादमे बात पलटि दिअए । किंवा कोनो षड़यंत्रे कए बैसए? ”

“सही कहि रहल छह । शत्रुपर कखनहु विश्वास नहि करी। ई साँप थिक, साँप । दिन-राति नेताजीक नून खेलक आ आब ओकरे जड़ि काटएपर लागल अछि ।”

"हम की केलिअनि अछि हुनका?"

"खबरदार! जे फटर-फटर केलह । नेताजी संगे तूँ विश्वासघात तँ केबे केलह अछि । एहिमे कोन सकक बात छैक। फिलहाल जाहि काजे हमसभ आएल छी ताहिपर ध्यान दी । बादक बात बादमे देखल जाएत । हमरासभकेँ शिखा चाही, सेहो तुरंत । जँ से नहि करबह तँ परिणाम भोगबाक हेतु तैयार भए जाह ।"

"जाबे विश्वास नहि करब आ हमरा ओतए नहि लए जाएब ताबे शिखा हम कोना सुनझा सकैत छी । हमरा ओतए लए चलू । तखनहि शिखा भेटि सकतीह । ताबे हिनका दुनूगोटेकेँ तँ छोड़ि दिअनु ।"

"हिनकरसभक चिंता तूँ छोड़ह । जे मूल काज अछि से पहिने करह । तकर बाद हिनकर सभक भविष्यपर निर्णय होएत।"

"ठीक छैक । हमरा संगे चलह ।"

संदीपकेँ एकटा कारमे बैसा देल जाइत अछि । किछुगोटे ओकर आगू-पाछू बैसि जाइत अछि । किछुगोटे हमरा दुनूगोटेकेँ घरेमे घेरने रहि जाइत अछि । संदीप ओकरासभक संगे बिदा होइत अछि । ओ रस्ता बतबैत चलि जाइत अछि । बीच-बीचमे बदमाससभ ओकरा चेतौनी दैत रहैत अछि ।

"खबरदार! जौँ किछु गड़बड़ केलह तँ गेल छह ।" से कहि पिस्तौल ओकरापर तानि देल जाइत छल ।

हमसभ राति भरि ओहिना पड़ल रहि जाइत छी । बीच-बीचमे लघुशंका लगैत अछि । मुदा ताहू हेतु ओ सभ मोहलति नहि दैत अछि । सभ किछु ठामहि करबाक हेतु विवश छी ।

आब फरीछ भए रहल छल । हमसभ ओही हालतमे पड़ल रही । बदमाससभ हमरा दुनूगोटेकेँ घेरने छल । ओहिमे सँ एकगोटेकेँ पोखरि दिस जेबाक भेलैक । शौचालय बाहर रहैक । ओ बाहर निकलैत अछि । सामनेमे दूधबला टकरा गेलैक । हमरासभकेँ भोरे-भोर चाह पीबाक आदति छल । तेँ भोरे दूध मंगबैत रही से आबि गेल रहए । मुदा हमरासभकेँ नहि देखि ओ वापस होइत रहए । ताबतेमे हमर कोठरीसँ ओहि आदमीकेँ निकलैत देखि दूधबलाक कान ठाढ़ भेलैक ।

"बात की छैक? ई आदमीक जेबीमे पिस्तौल किएक छैक? ई तँ बदमास लागि रहल अछि ।"

इएह सभ सोचैत दूधबला कनी आओर फटकी चलि गेल। सामनेसँ एकटा पुलिसक जीप जाइत छल । ओ इसारा कए ओकरा रोकबेलक । पुलिस जीपसँ उतरि जाइत अछि-

"की बात छैक?"

"सर! सामनेबला कोठरीक शौचालयमे एकटा बदमास पिस्तौल लेने बैसल अछि ।"

"से तूँ केना बुझलहक? हम ओकरा शौचालयमे जाइत देखलिऐक । ओकरा देखि चुपचाप घसकि गेलहुँ ।"

"ठीक छैक । तूँ हमरा सभक संगे चलह ।"

"नहि, नहि । हमरा नहि लए चलू । जँ हमरेपर पिस्तौल तानि देलक तखन?"

"एतेक डरेबाक बात नहि छैक । हमसभ तोरा संगे छी ने।"

"ओ बदमास शौचालयसँ निकलिए रहल छल की पुलिस ओकरा चारूकातसँ घेरि लेलक ।"

अचानक पुलिसकेँ देखि ओ बहुत परेसान छल । एकटा पुलिसबला ओकरा पाछूसँ पकड़लक आ दोसर जेबीमेसँ पिस्तौल छिनि लेलक ।

"खबरदार! जँ बुधिआरी करबह तँ जानसँ हाथ धोबह । चुपचाप आत्मसमर्पण करह ।"

ओ बदमास हाथ ऊपर उठा देलक ।

20

पुलिस ओहि बदमासकेँ पकड़ि कए सड़क दिस बढ़ि रहल छल । हमरसभक कोठरीसँ ओकर संगीसभ ई दृश्य देखलक । ओहीमेसँ एकगोटे ककरो फोन लगओलक । तकरबाद तँ देखएबला दृश्य उत्पन्न भए गेल । पुलिस ओहि बदमासक पैरपर खसि पड़ल । घटी मांगि रहल छल । सड़कक लगपासमे ठाढ़ लोकसभ से देखि छगुन्तामे रहए ।

"कमालक बात छैक । पुलिसक ई हाल अछि जे बदमासक आगू नतमस्तक अछि । कहू केहन समय आबि गेल ।"

"कोनो सिपारसी हेतैक ।"

"कोनो नेताक आदमी हेतैक ।"

तरह-तरहक बात लोकसभ कए रहल छल । पुलिस पाछू-पाछू आ बदमास आगू-आगू चलि रहल छल। दुनूगोटे हमरसभक

कोठरी लग पहुँचल । पुलिस हमर कोठरीक ओसारापर ठहरि गेल। हमसभ ओहिना कोठरीमे पड़ल रहलहुँ । हमर कोठरीक बाहर लोकसभ जमा भेल जा रहल छल । मामिला बढ़ैत देखि ओ बदमाससभ ककरोसँ फोनपर गप्प केलक । तकरबाद हमरासभकेँ छोड़ि देलक । हमसभ जाबे किछु बुझितहुँ ताबे ओ बदमाससभ पुलिसक जीपसँ चलि जाइत रहल । राति भरिक दुर्दशाक कारण हमसभ किछु बजबाक स्थितिमे नहि रही । अपनोसँ बेसी संदीपक चिंतामे रही । जाइत-जाइत बदमाससभ चेतौनी देने गेल रहए-

"खबरदार! जँ किछु एमहर-ओमहर करबह तँ हमसभ फेर आबि जाएब आ तकर बाद की होएत तकर कल्पनो तूँ नहि केने हेबह।"

सोचल जा सकैत अछि जे एहन माहौलमे हमसभ की प्रतिकार करितहुँ? जान बँचि गेल सएह उपलब्धि लगैत छल । मुदा एतबा तँ स्पष्ट छल जे एहि घटनाक पाछू राजनीति काज कए रहल अछि । हमरासभक राजनीतिक सक्रियताक जानकारी सरकारी पक्षकेँ भेटि गेल रहैक । तकरबादे ई फसादसभ शुरु भेल छल । पता नहि आगू की-की होएत? ई तँ अखन शुरुए भेल अछि।

ओहीदिन साँझमे नेताजी शक्तिपुरममे संवाददाता सम्मेलन केलथि । नानाप्रकारक मीडिआ,समाचारपत्र,रेडिओक संवाददातासभक भीड़ जमा भए गेल छल । सभ एक-दोसरसँ प्रश्न कए रहल छल-बात की अछि? नेताजी एकाएक संवाददाता सम्मेलन किए कए रहल छथि?

"लगैत अछि ओ अपन पार्टीसँ बहुत तमसाएल छथि।"

"नहि, नहि । ई बात नहि भए सकैत अछि । अखने तँ हुनका राज्यप्रमुखजीक संगे सेटींग भेल छलनि । तकरबादसँ तँ ओ हुनकर गुणगाने कए रहल छथि ।"

"जरूर किछु आओर बात अछि ।"

"कनी काल हमसभ ठहरिए जाइत छी । अपने पता लागि जाएत जे बात की अछि ।"

"सही कहलहुँ ।"

संवाददातासभ अपनामे चर्चा करैत छलाह। ताबते पान खाइत,मुस्काइत नेताजीक प्रवेश होइत अछि। नेताजीकसगे दूगोटे आओर हुनकर लगपासमे बैसि जाइत अछि । नेताजी बजनाइ शुरु करैत छथि -

"अहाँसभकेँ अचानक बजेबाक कारण ई भेल जे आइ रातिमे पुलिस एकटा अत्यन्त महत्वपूर्ण घटनाक रहस्योदघाटन केलक अछि। ताहि विषयमे जनताकेँ जानकारी देब बहुत जरूरी अछि । तँ अपने सभकेँ बहुत कम समयक सूचनापर बजाओल गेल अछि ।

"बात की छैक, से स्पष्ट करू ।"

"रातिमे पुलिसकेँ किछु गुप्त जानकारी भेटल जे नवोदित प्रतिपक्षी नेता अंकुर आ हुनकर संगीसभ नारी निकेतनक एकटा महिलाक संगे अनुचित काजमे लिप्त पाओल गेलाह । पुलिस छापामे ओ आ हुनकर संगीसभ पकड़ल गेलाह अछि । मुदा संदीप ओहि महिलाकेँ संगे कतहु भागि गेल । पुलिस ओकरा सभकेँ पकड़बाक पूरा प्रयास कए रहल अछि । आशा करैत छी जे ओहो जल्दीए पकड़ल जाएत ।"

“मुदा ओ महिला के छथि?”

“हुनका संदीप कतए नुकओने अछि ।”

तरह-तरहक सबालसभ पत्रकारसभ पूछि रहल छल । मुदा नेताजी बिना किछु आओर कहने उठि गेलाह । हुनकर सचिव जरूर कहलखिन- “एहिसभ विषयपर कोनो जानकारी प्राप्त भेलापर फेर प्रेस कान्फ्रेंस कएल जाएत । संप्रति एतबे ।”

21

संदीपक संगे बदमाससभ ओकर गाम सरिआ पहुँचल । शिखा ओही गामक छलि। नेनपनेमे ओकर माता-पिताक देहांत भए गेल रहैक । ओकर पालन-पोषण पितामह केलखिन। मुदा ओहो किछु सालक बाद एहि दुनिआकेँ छोड़ि गेलाह । ओहि समयमे शिखाक बएस एगारह वर्ष रहल होएत । ओ गामेक मिडिल इसकूलमे पढ़ि रहल छलि ।

तकरबाद शिखाक पालन-पोषण एकटा समस्या भए गेल। आखिर ओकर मामा अपना लग आनि लेलखिन । ओएह ओकर आगूक पढ़ाइक व्यवस्था केलनि । नेताजीक ओकर मामाक ओहिठाम आवागमन होइत रहैत छलनि । हुनकर ध्यान शिखापर पड़लनि। ओहि समयमे ओ बी.ए.पास कए चुकल छलि । आब ओकर मामाक इच्छा रहनि जे बिआह करबा दिऐक जाहिसँ ओ एहि जिम्मेबारीसँ मुक्त होथि । ताही दिशामे ओ प्रयास कए रहल छलाह । एक दिन नेताजीक हुनकासँ भेंट भेलनि । गप्प-सप्पक क्रममे ओ ओकर बिआहक चर्च केलनि । नेताजी कहलखिन-

“अखन एकर बिआहक कोन धरफरी छैक । हम एकरा शक्तिपुरममे सरकारी नौकरी लगा देबैक । अहाँ एकरा लेने शक्तिपुरम आउ। नौकरी भए गेलाक बाद दहेजो नहि लागत आ नीक ठाम बिआहो भए जेतैक ।”

“बात तँ अहाँ बहुत नीक कहि रहल छी । मुदा शक्तिपुरममे हमसभ रहब कतए? संगमे शिखा सेहो रहति। ओतए तँ हमरा कोनो जोगार नहि अछि ।”

“अहाँ तकर चिंता छोड़ि दिअ । हम सभटा ओरिआन करबा देब । बस अहाँ अपन कार्यक्रम दू दिन पहिने सूचित कए देब ।

“हमर कार्यक्रमक कोन छैक? जहिए कहब तहिए बिदा भए जाएब । हमहु तँ बैसल-बैसल बरबाद होइत रहैत छी । एही बहन्ने कनीक घुमिओ लेब ।”

नेताजी बातपर विश्वास कए शिखा अपन मामाक संग हुनकर डेरापर शक्तिपुरम पहुँचलि । जे बात छैक नेताजी दोसरे दिन भेने शिखाकेँ एकटा इसकूलमे शिक्षिकाक काज दिआ देलखिन। डेराक व्यवस्था सेहो इसकूले परिसरमे भए गेलैक । ओहिठाम कैकटा महिला शिक्षकासभ पहिनेसँ रहैत छलि । तेँ शिखाकेँ ओतए जल्दीए मोन लागि गेलैक । सभ किछु अनुकूल देखि ओकर मामा निश्चिंत मोनसँ अपन गाम लौटि गेलाह । किछुदिनक बाद जखन नेताजी गाममे ओकरा भेटलखिन तँ हुनकर बहुत स्वागत केलथि । दस आदमीक सामनेमे हुनकर गुणगान केलथि । गाम-घरमे देखाउस लागि गेल । कैकगोटे अपन बचिआसभकेँ नेताजीकेँ सहयोगसँ शक्तिपुरम पठा देलथि । सभ

नेताजीक जयगान करैत वापस भेल रहथि । मुदा ओ सभ की जाने गेलथि जे नेताजीक असलिअत की अछि ?

संदीप नेताजीक बहुत पुरान विश्वासपात्र छल । क्रमशः नेताजी ओकर दुरुपयोग बढ़बैत गेलाह । ओ ई बात नहि बूझए से बात नहि छैक । सभ किछु बुझैत छल । मुदा हुनकर चक्रव्यूहमे तेना कए ओझरा गेल छल जे ओहिसँ निकलब आब असंभव लगैत छलैक । नेताजीक लगपासमे जतेक उल्टा-पुल्टा काज होइत छल तकर भार ओकरे कपारपर दए देल गेल छल । किछु आओर गोटेसभ सेहो नेताजीक संगे एहिना ओझराएल छल । मुदा सभक कार्यक्षेत्र फराक-फराक छलैक । इसकूलक छात्रावासमे रहि रहल महिला लोकनिक देख-रेख जिम्मा संदीपेक छलैक । ई बात सभ ककरो किछु पता नहि छलैक ।

सभ किछु शांतिपुर्ण रूपसँ चलि रहल छल आ साइत चलिते रहैत । मुदा संजोग एहन भेलैक जे एक राति शिखा विद्रोह कए देलकैक? कतबो नेताजी बुझेलखिन मुदा ओ टस सँ मस नहि भेलैक । नेताजी बहुत तमसाएल रहथि। मुदा सामनेमे किछु नहि बजलथि। संदीपकेँ बजा कए कहलखिन-

“एकरा छात्रावास पहुँचा दहक ।”

संदीप शिखा संगे बिदा भेल । शिखाकेँ इएह मौका भेटलैक । ओ सभटा बात संदीपकेँ कहि देलकैक । संदीप लाखे डराएल छल,नेताजीक चक्रव्युहमे फँसल छल,मुदा कतहु-ने-कतहु ओकरामे मनुष्यता बाँचल छलैक । ओ शिखाक कष्ट देखि बहुत दुखी भए गेल छल । तकर बाद बिना विलंबकेँ शिखाक संगे भागल आ भागले चलि गेल ।

नेताजीक पठाओल बदमास सभ ओकर पछोड़ करैत रहल। आखिर संदीप पकड़ाइए गेल । संदीप ओकरासभक संगे अपन गाम पहुँचल । मुदा शिखा गाममे नहि छलैक । ओ गामसँ करवन आ कतए चलि गेलि से संदीपोकेँ नहि बूझल रहैक । आब तँ बदमाससभ ओकरापर सभटा तामस निकालए लागल । हल्ला सुनि कए गौंवासभ जमा भए गेल । चारूकात लोकक करमान लागि गेल । बदमाससभ अपनाकेँ घेराइत देखि इएह-ले,ओएह-ले भागल ।

22

गाम पहुँचिओ कए शिखा बेचैन रहए । नेताजी आ ओकर संगीसभक अन्यायपूर्ण व्यवहारसँ ओकर सौंसे देहमे आगि लागि गेल रहैक ।

“हम आब ई सभ नहि सहब । अन्यायीसभकेँ दंड दिआ कए रहब । समाजक सामनेमे एकरसभक सही रूप आनि कए रहब ।”

वारंबार इएह संकल्प ओकर मोनमे उठैत रहल । ओ थाना गेलि । अपना भरि बहुत प्रयास केलक जे प्राथमिकी दर्ज कराबी । मुदा थानेदार टस सँ मस नहि भेलैक । ओ उनटे तरह-तरहक बातसभ बाजए लागल । शिखाक सामनेमे थानेदार कैकबेर मोंछपर हाथ फेरैत रहल । मुस्की दैत रहल । थानेदारकेँ ऊपरसँ शिखाक बारेमे गुप्त संदेश नेताजी पठबा देने रहथि। कारण हुनकर मोन तँ अदकल छलनिहे । दरोगाक चालि देखि ओकरापर शिखा

ततेक जोरसँ हुरकलकैक जे थानेदारकेँ जेना लकबा मारि देलकैक। तकर बाद शिखा कुर्सीपरसँ ऊठैत अछि,आ थानासँ बिदा भए जाइत अछि । जाइत-जाइत बजैत जाइत अछि-

"तूँसभ रावणक रूप छैं । सभक सही इलाज हेतौक। ओ समय आब लगीछ अछि ।" थानेदार जाबे होसमे अबितए, किछु करितए, ताबे तँ शिखा थानासँ निकलि गेल छलि ।

थानासँ बिदा भए शिखा सोझे टीसन पहुँचलि । ओतए विजयपुरमक ट्रेन लागल छल । जेना-तेना टिकटक जोगार केलक आ ट्रेनसँ विजयपुरम बिदा भए गेलि । राजधानी विजयपुरम जे इतिहासक कतेको परिवर्तनक गवाह रहल अछि,शिखाक जीवनक क्रान्तिक गबाह बनए जा रहल छल । केओ सोचिओ नहि सकल होएत जे शिखा एहन रूप धए लेति,सक्षात दुर्गा जकाँ राक्षसमंडलीक विनाशक हेतु कृतसंकल्प भए जाएत। दोसरदिन भेने ओ विजयपुरम टीसनक प्लेटफार्म नंबर आठपर पहुँचलि । ट्रेन ठाढ़ होइतहि यात्रीसभ अपन-अपन समानसभक संगे उतरि रहल छल। कुलीसभ यात्रीसभक समानकेँ उठा-उठा कए यात्रीसभक संगे आगू बढ़ि रहल छल । मुदा शिखा जस-के-तस ठाढ़ि छलि। ओकरा बुझेबे नहि करैक जे केमहर जाए? की करए?

थोड़े काल ओहिना बैसल रहि गेलि । लगीचेमे चाहक दोकानसँ चाह कीनलक । चाह पीबि रहल छल की ओकरा महिला सहायता केन्द्रक फोन नंबरपर ध्यान गेलैक । ओ ओहि नंबरपर फोन करैत अछि । दोसर दिससँ तुरंत एकटा महिला बजैत अछि-

"हम महिला सहायता केन्द्रसँ बाजि रहल छी ।"

“हमर नाम शिखा अछि । हम अखनहि ट्रेनसँ विजयपुरम पहुँचलहुँ अछि । हम बहुत परेसानीमे छी । हमरा अहाँसभक मदति चाही।”

“हमसभ अहाँक की मदति कए सकैत छी? की परेसानी अछि? अहाँ संगे के छथि? ”

“हम असगरि आएल छी । हमर परेसानी बहुत गंभीर अछि आ फोनपर हम सभटा बात नहि कहि सकैत छी । हमरा एहिठामक किछु जानकारी नहि अछि । तेँ ककरो हमरा मदतिक हेतु पठाउ ।”

“अहाँ अखन कतए छी?”

“हम विजयपुरम टीसनक प्लेटफार्म नंबर आठपर बैसल छी।”

“ठीक छैक । अहाँ ओतहि रहू । हमसभ आबि रहल छी।”

थोड़बे कालमे तीन-चारिटा महिलासभ पुलिसक संगे शिखा लग प्लेटफार्म नंबर आठपर पहुँचि जाइत छथि । ओ सभ शिखाकेँ अपन परिचयपत्र देखबैत छथि । ओकरा संगे चलबाक आग्रह करैत छथि । शिखा हुनकालोकनिक संगे बिदा भए जाइत छथि । दस मिनटक बाद ओ सभ महिला सहायता केन्द्रक कार्यालय पहुँचि जाइत छथि । ओ सभ शिखाकेँ प्रसन्न करबाक भरिसक प्रयास करैत छथि। हुनका जलखै करबैत छथि, चाह-पान करबैत छथि । बहुत दिनक बाद शिखाकेँ लागि रहल छलनि जे ओ मनुक्खक बीचमे आबि गेल छथि , सुखी छथि । शिखाकेँ आश्वस्त देखि महिला सहायता केन्द्रक स्वयंसेवकसभ बहुत खुस होइत छथि । ओ सभ शिखाकेँ अपन सिकाइत लिखितमे देबाक आग्रह

करैत छथि जाहिसँ ओहिपर पुलिस कारबाइ कए सकत । शिखा हुनकरसभक बात मानि अपन सिकाइत लिखैत छथि ।

ओ सभ शिखाक सिकाइत पढ़िए रहल छलीह की पुलिस आयुक्त गश्तीपर घुमैत-फिरैत ओतए पहुँचि जाइत छथि । शिखाकेँ देखि ओ पुछैत छथि-

"ई के छथि?"

"ई आइए ट्रेनसँ विजयपुरम अएलीह अछि । हमरासभकेँ फोनसँ हिनकासँ गप्प भेल छल । तकरबाद टीसन पहुँचि हिनका एतए लेने अएलिअनि अछि ।"

"ओ मुदा बातकी छैक? हिनकर परेसानी की छनि ?"

महिला स्वयंसेवीसभ एकदोसर दिस देखए लगैत छथि । फेर शिखाक लिखल आवेदन पत्र हुनकर हाथमे राखि दैत छथि । पुलिस आयुक्त महोदय शिखाक आवेदन पढ़ए लगैत छथि ।

ओहि आवेदनमे शिखा लिखने छथि-

"हमर माता-पिताक बहुतकमे बएसमे देहान्त भए गेल रहनि । तकर बाद हमर मामा हमर पालन-पोषण केलनि । हम मामागामेमे बहुत दिनधरि रहलहुँ । ओतहिसँ पढ़ाइ केलहुँ । ओतए देबन उर्फ नेताजीक आवागमन होइत छलनि । हुनकर हमर मामाक संग नीक संबंध रहनि । हम जखन छेटगर भेलहुँ तँ हमर मामा हमर बिआह करबाक प्रयासमे लागि गेलथि । हुनकर कहबाक रहनि-"बिना बापक बेटी थिक । एहि हेतु एकर बिआह नीकसँ नीक ठाम करब हमर कर्तव्य थिक ।" ताहि हेतु दिन-राति एक केने रहथि । नेताजी लग सेहो ओ एहि बातक चर्च केलनि जे जँ कोनो नीक वरक जानकारी होनि तँ सूचित करथि । नेताजी

हुनका नीकसँ बुझा देलकनि जे ओ हमरा नौकरी दिआ देत जाहिसँ आगू बहुत नीक रहत । बिआहमे तँ मदति हेबे करत । हमर मामा बहुत सोझ आदमी छलाह । फेर हुनकर नेताजीसँ बहुत नीक संबंध रहनि । हुनका पर बहुत विश्वास रहनि । ओ नेताजीक बातमे आबि कए तीनदिनक बाद हमरा लेने हुनकर शक्तिपुरम स्थित डेरापर पहुँचि गेलाह । जे बात छैक,नेताजी हमरा दोसरे दिन एकटा इसकूलमे नौकरी धरा देलक । हमर रहबाक हेतु ओही इसकूलक आवासमे ओरिआन कए देलक । सभ किछु अनुकूल देखि हमर मामा बहुत प्रसन्न भेलाह । नेताजीकेँ हार्दिक धन्यवाद देलनि आ हुनकर आज्ञा लए गाम वापस बिदा भए गेलाह । तकर बाद हम अपन काजमे लागि गेलहुँ । शुरुमे तँ बहुत नीक लागल । इसकूलमे कैकटा शिक्षिकासभसँ दोस्ती भए गेल । समय बहुत नीकसँ कटए लागल। ओहीसभमे सँ किछुगोटेक नेताजीक संग बहुत अंतरंग संबंध रहैक। ओ सभ हमरो नेताजीक बैसारमे लए जाए लागल । ओना शुरुमे तँ सभकिछु ठीक-ठाक बुझाइत रहल । मुदा बादमे नेताजी क्रमशः अपन असली रूप देखबए लागल ।

संजोगसँ एकदिन हमसभ बहुत राति धरि नेताजीक ओहिठाम अँटकि गेल रही । भेलैक ई जे फगुआक समय रहैक । नेताजीक ओहिठाम तरह-तरहक आयोजन रहैक । इसकूलसँ लगभग सभटा स्टाफ आएल रहैक । बाहरोसँ बहुत रास लोकसभ आएल रहैक । नारी निकेतनक सभ आश्रमवासी सेहो नोतल गेल रहथि । माने नेताजीक ओतेक अइल-फइल डेरा सेहो छोट पड़ि गेल रहैक । बगलक बंगला खाली रहैक । बहुत रास लोकसभ ओमहरो छलाह । ओही बंगलामे एकटा एकांत स्थान सेहो बनाओल गेल छल । रातिमे भोजनक समयमे हम अपन

संगीसभक संगे जखन ओतए भोजनक हेतु पहुँचलहुँ तँ किछुगोटे हमरासभकेँ ओहि एकांत कक्ष दिस लेने चलि गेल । बाहरसँ तँ ओतए किछु गड़बड़ नहि बुझाइक। मुदा जँ जँ भीतर पैसैत गेलहुँ,तँ तँ ओहिठामक असली रूप बुझबामे आबए लागल । तखन तँ ओतएसँ भागबाक प्रयत्नमे लागि गेलहुँ । मुदा आओर ककरो कोनो प्रकारक चिंता नहि देखिऐक । हम अपन संगीसभकेँ कहबो केलिऐक-

"हम एहिठामसँ जाए चाहैत छी ।"

"से किएक? एहन नीक आयोजन छोड़ि कए डेरामे की करब? फेर हमहुसभ तँ छीहे ।"

हमरा मोनमे खटका तँ भेल । मुदा ई नहि बुझाए जे हमर संगीसभ सेहो नेतेजीक दिससँ काज कए रहल अछि । मुदा असलियतमे बात सएह रहैक । दूपहर रातिमे जेना-तेना असगरि हम ओहिठामसँ भागल रही । तकरबाद कैक दिन धरि बकोर लागल रहि गेल । सौंसे देहमे दर्द होइत रहल । बुझेबे नहि करए जे आखिर भेल की? एना अचानक मोन किएक खराब भए गेल?"

क्रमशः थोड़े दिनक बाद हमर मोन ठीक भए गेल । सभ बात बिसरा गेल । मुदा एकदिन अखबारक मुख्यपृष्ठपर नारी निकेतनक समाचार छपल देखाएल। ओकर शीर्षक छल-

"नारी निकेतन गुंडागर्दीक अड्डा भए गेल अछि । ओहिठाम काल्हि पुलिस छापा मारलक । कैकटा महिलासभ गायब छलीह । पुलिस हुनकासभकेँ पछोड़ करैत-करैत शक्तिपुरमक महत्वपुर्ण स्थानसभसँ निकाललक । सौंसे सहरमे हरकंप मचि गेल अछि ।"

पक्ष-प्रतिपक्षक समस्त नेतालोकनिमे हरकंप मचि गेल । सभ एहि घटनाकेँ शांत करबामे लागि गेलाह । ओहीक्रममे नेताजी संदीपकेँ हमरा आ किछु आओर महिलासभक पाछू लगा देलक । संदीपकेँ ई सभ नीक नहि लगैत रहैक । ओ एहिसभसँ दुखी रहए,बाहर होबए चाहए । मुदा नेताजीक चांगुरसँ निकलब एतेक आसान नहि रहैक । मुदा ओकरा हमर हालत देखि बहुत दुख रहैक आ एकदिन ओ हमरा संग कए ओहिठामसँ भागल । तकर बातक बात तँ पुलिसक जानकारीमे अछिए । हम चाहैत छी जे दोषी व्यक्तिसभकेँ कानूनक मोताबिक दंड देल जाए आ निर्दोष महिला लोकनिकेँ ओकरासभक चांगुरसँ मुक्त कराओल जाए ।

निवेदक,

शिखा

23

शिखाक सिकाइतपर पुलिस आयुक्त तुरंत संज्ञान लैत जीरो प्राथमिकी दर्ज करबा देलनि । साँझमे प्रेस सम्मेलनमे एहि मामिलासँ जुड़ल सभटा प्रसंगकेँ प्रकाशमे अनलनि । ततबे नहि,नारी निकेतनक स्थिति आ परिस्थितपर सीबीआइक जाँच बैसबाक आदेश सेहो सरकार दिससँ कएल गेल । कहबाक माने जे थोड़बे कालमे मामिला घनघना गेल । एकर साक्षात प्रभाव

शक्तिपुरमक राजनीतिमे देखबामे आएल । कतहु-ने-कतहुसँ एकटा भीडिओ टेलीवीजनपर देखाओल जा रहल छल । ओहिमे राज्यप्रमुखक सामिल होइत स्पष्टतासँ साबित भए रहल छल । आब तँ हुनकर अपने लोकसभ हुनकर शत्रु भए गेल । पार्टीक आंतरिक बैसकमे हुनका जनहितमे आ पार्टीक भविष्यक हेतु तुरंत त्यागपत्र देबाक दबाब बनाओल गेल । संगहि इहो कहल गेल जे हुनका लोकनिक जानकारीमे एहूसँ बेसी बेपर्द भीडिओसभ आएल अछि जाहिमे राज्यप्रमुख स्वयं असमाजिक काजमे लागल देखाइत छथि । राज्यप्रमुखजी माथ पकड़ि लेलनि । ओ ठामहि उठलाह आ राजभवन जाए अपन त्यागपत्र दए देलनि । ओना एहिसभ घटनाक प्रभाव पड़बे करितैक,मुदा एतेक जल्दी,सेहो राज्यप्रमुखपर,से केओ साइते सोचने रहल होएत । मुदा भेल सएह । राज्यप्रमुखक इस्तिफाक समाचार सौंसे गनगना गेल । तकर बाद तँ जकरा जे मोन होइक से बाजए ।

"इस्तिफा देलासँ की हेतनि । जे पाप कएलाह अछि, ताहि आगू तँ ई किछु नहि अछि । हिनका तँ जहल जेबाक चाही ।" जतेक मुँह ततेक तरहक बात सुनबामे आबि रहल छलैक । मुदा नेताजीक खिलाफमे केओ एक शब्द नहि बजैक । मीडिआ तँ हुनकर आदर्श छवि प्रस्तुत करबामे जी-जानसँ लागि गेल छल । एना सन जेना ओ अगिला राज्यप्रमुख भइए गेलाह ।

भोरे भेने शक्तिपुरमक राजनीतिक परिदृश्य बदलि गेल छल । नेताजी राज्यप्रमुख बनताह ,से घोषणा टेलीवीजनपर वारंबार कएल जा रहल छल । ओ राजनीतिमे सुचिता अनताह,राज्यकेँ विकासक उत्कर्ष धरि पहुँचा कए रहताह,ककरो संग अन्याय नहि होबए देथिन,से वारंबार उद्घोषणा भए रहल छल।

ततबे नहि,नारी सशक्तिकरण हेतु एकटा नवीन मंत्रालय बनओताह जकर काज सोझे ओ स्वयं देखताह। नारी निकेतन कांडमे दोषी पाओल गेल ककरो नहि बकसताह,चाहे ओ कतबो पैघ आदमी ने होअए । राज्यकेँ बदलि कए रहताह । चाहे हुनकर जान रहनि की जानि । दिनभरि टेलीवीजनपर इएहसभ अबैत रहल। सौंसे माहौलमे नेताजीक छवि नीक करबाक प्रयास परिलक्षित भए रहल छल ।

हम,शक्तिनाथ आ संदीप अपन डेरासँ एहि समाचारसभकेँ देखि क्षुब्ध रही । देहमे जेना आगि लागि गेल होअए। मुदा करितहुँ की? नेताजीक काट ताकब आसान काज नहि छल । हुनका संगे बहुमत छलनि आ लोकतंत्रमे बहुमतक कोनो काट नहि छैक । ओसभ जे चाहत सएह होएत । कानून ओकरे संग रहतैक । जरूरी पड़लापर ओ सभ कानूनकेँ बदलिओ देत जाहिसँ सभकिछु मनमाफिक भए सकत ।

ओमहर नेताजीक शपथग्रहण समारोह आयोजित भए रहल छल आ नारी निकेतनक सामनेमे जबरदस्त हंगामा पसरि गेल छल। जनक्रान्ति दलक कार्यकर्तासभपर दनादन लाठीक प्रहार पुलिस कए रहल छल। अश्रुगैस छोड़ल जा रहल छल । नेताजीक विरोध कए रहल प्रदर्शनकारीसभ जान लए भागि रहल छल । संदीपकेँ तँ प्रदर्शनकारीसभ अगुआ बनओने छल । कतबो इसारा करिऐक जे मंत्रणा हेतु कोठरीमे आबए,ओ आबिए नहि पाबए। हंगामा बढ़िते जा रहल छल आ पुलिस सेहो पाछू नहि हटि रहल छल । लगैत छल जे किछु अनिष्ट भइए कए रहत । मामिला बिगड़ैत देखि पुलिस गोली चला देलक । कहि नहि कैक राउंड गोली चलल । कतेकोगोटे जमीनपर घायल पड़ल छल। लोकसभ

जहाँ-तहाँ भागल । कैकगोटेकेँ पुलिस पछोड़ कए टांग-हाथ तोड़ि देलक । सायरन बजबैत रोगी वाहन आएल,फाएर ब्रिगेड आएल । पुलिस जमीनपर पसरल खूनकेँ साफ करबएमे लागि गेल । थोड़बे कालक बाद लगलैक जेना ओतए किछु भेले नहि होइक । देखिते-देखिते ओहिठाम नितांत एकांत पसरि गेल ।

ओही माहौलमे केओ बाजल-

“शिखा हवाइ जहाजसँ शक्तिपुरम आबि रहल छथि ।”

असलमे शक्तिपुरममे राजनीतिक घटनाक्रमसँ ओ उद्वेलित भए गेल छलि । जे असली दोषी छल से तँ राज्यप्रमुख बनि रहल छल । बेसक विजयपुरम जा कए ओ पुलिसमे प्राथमिकी दर्ज करबा सकलि मुदा परिणाम तँ उल्टे देखा रहल छलैक । जकरा जहलमे हेबाक चाहैक छलैक सएह राज्यप्रमुख बनए जा रहल छल । ई बात ओकरा बरदास नहि भए रहल छलैक । विजयपुरममे पुलिस ओकरा शक्तिपुरम जेबासँ मना करैत रहि गेल,मुदा ओ अड़ि गेलि आ शक्तिपुरम पहिल उपलब्ध हवाइ जहाजसँ पहुँचि गेलि । ई बात हमरा शक्तिनाथ सभसँ पहिने सूचित केलथि ।

24

कहबी छैक जे एक तँ करैल ओहो नीमपर चढ़ल। सएह हाल नेताजीक रहनि। ओ तँ जन्मजात बदमास छलाहे। सभदिन लोककेँ ठकैत रहल,अपन स्वार्थ केना पूर्ति होएत ताहि ब्योंतमे लागल रहलाह। ककरो नीक होउक,बेजाए होउक हुनका कोनो मतलब नहि रहैत छलनि। मुदा लोकक सामनेमे तेना ने अभिनय

करितथि जेना ओकर ओ सभसँ पैघ शुभचिंतक होइक । नेताजी शुरुएसँ एहि फिराकमे रहथि जे कहुना राज्यप्रमुखक कुर्सी हथिआ ली,तकर बाद देखल जेतैक । से मौका हुनका भेटिओ गेलनि । जनताक आक्रोशक समाचार सुनि ओ असगरमे ठहाका पाड़ि रहल छलाह। जेना जे किछु भए रहल अछि तकर हुनका कोनो परबाह नहि रहनि।

"पैघ आदमीक ई सभ गहना छैक । थोड़े दिनक बात छैक, सभ पानिक बुलबुला जकाँ अपने खतम भए जाएत । ताबे चैनसँ दारू पिबल जेतैक । आओर किछु करबाक काज नहि ।"

"नारी निकेतन कोनो आजुक अछि? एहन-एहन घटना तँ होइते रहलैक अछि । कहाँ कहिओ केओ विरोध केलक? किछु नवका छौंड़ासभ जनक्रान्ति दलक नामसँ समाजमे आगि लगाबए चाहैत अछि से हम होअए देबैक? कदापि नहि । आखिर हम राज्यप्रमुख छी कथीक लेल?"

जखन ओकरा शिखाक शक्तिपुरम हवाइ अड्डापर पहुँचि जेबाक समाचार भेटलैक तँ ओ तुरंत पुलिसक आला अधिकारीसभकेँ ओकरा पाछू लगा देलाह।

"कोनो हालतमे ओकरा हवाइ अड्डासँ बाहर नहि जाए देबाक छैक । ओ चाहए तँ विजयपुरम वापस चलि जाए, नहि तँ सोझे जहल जाए । राज्यमे आगि लगाबक स्वतंत्रता ओकरा नहि देल जा सकैत अछि ।"

एहि आज्ञाक संगे पुलिस उच्च अधिकारीलोकनि हवाइ अड्डा पहुँचि गेल रहथि ।

हम,शक्तिनाथ आ संदीप सेहो हवाइ हड्डापर शिखाक स्वागत करबाक हेतु पहुँचि गेल रही । हमरासभक संगे जनक्रान्ति दलक किछु कार्यकर्तासभ सेहो हवाइ अड्डाक बाहर झंडा लेने नारा लगा रहल छलाह-

“शिखा जिंदाबाद । इनकिलाब, जिंदाबाद ।”

किछुगोटे पताका लेने छलाह-“ अन्यायीसभक विनाश भए कए रहत ।”

पुलिस रहि-रहि कए ओकरासभकेँ खिहाड़ि रहल छल । शिखाक हवाइ जहाज बड़ीकाल धरि आकाशमे घुमि रहल छल । ओकरा उतरबाक अनुमति नहि देल जा रहल छलैक। हवाइ जहाजमे बहुत सीमित मात्रामे इंधन बाँचल छल । हवाइ जहाजक चालक दल बहुत चिंतामे छल । ओ सभ वारंबार नियंत्रण कक्षकेँ संवाद पठा रहल छल । मुदा ओहोसभ की करितए? ऊपरसँ आज्ञा आएल छलैक। हवाइ जहाजक भीतर यात्रीसभ बेचैन छलाह । चालक दल बेर-बेर कहैक-

“हमसभ जहाजकेँ उतारबाक आज्ञाक प्रतीक्षा कए रहल छी । चिंताक बात ई थिक जे हवाइ जहाजमे आब बहुत कम इंधन बाँचल अछि । देरी भेलापर किछु भए सकैत अछि ।”

यात्रीसभ बहुत परेसान भए गेल रहथि । शिखा तँ तामसे आगि भेल रहए । करवनो काल ओकरा अफसोचो होइक जे ओकरे कारणे आनो यात्रीसभक प्राणपर संकट आबि गेल छल । अंतमे चालक देल कंट्रोलरूमकेँ आपातकालीन सूचना देलकैक आ हवाइ जहाजकेँ उतारि देलक । कारण आओर देरी भेलासँ जहाजमे ऊपरेमे आगि लागि जाएत । ककरो जान नहि बँचितैक ।

हवाइ जहाजकेँ उतरितहि ओकरा पुलसभ चारूकातसँ घेरि लेलक । ओकरसभक इच्छा इएह रहैक जे जँ शिखा हवाइ जहाजसँ उतरि कए बाहर निकलबाक प्रयास करैत अछि तँ ओतहिसँ जहलक रस्ता देखा देल जाएत ।

बाहर जनक्रान्तिदलक कार्यकर्त्तासभक हंगामा चलिए रहल छल । क्रमशः लोकक संख्यामे इजाफा भेल जा रहल छल । हम कतबो बुझेबाक प्रयास करिऐक,लोकसभ किछु सुनबे नहि करैक । किछु फुरेबे नहि करए जे आब की कएल जाए ? कहीं फेर अनिष्ट ने भए जाइक । हम आ शक्तिनाथ एही विषयसभपर मंत्रणा करैत रही । संदीप प्रदर्शनकारीसभकेँ सम्हारबामे लागल छल । एतबहिमे हवाइ जहाज घुसकल । घुसकैत-घुसकैत मुख्य भवन धरि आबि गेल । ओहिठामसँ तँ पैरे बाहर आएल जा सकैत छल । शक्तिपुरम हवाइ अड्डा अछिए कतेकटा । मौका देखि शिखा हवाइ जहाजसँ उतरल आ एक-एक कए सभटा वस्त्र अपन देहसँ उतारए लागल । आब तँ गर्द पड़ि गेल ।

“हाँ, हाँ ई की कए रहल छी?

“हौ लोकसभ! कहुना हिनका रोकह? ई तँ महा अनर्थ भए रहल अछि ।”

लोकसभ शिखाकेँ बुझेबाक प्रयास करए । तरह-तरहक आश्वासन दिअए । मुदा शिखा सुनबाक हेतु तैयार नहि रहए ।

“की नाटक कए रहल छी? जखन शासनक सर्वोच्च शिखरपर असवार लोकसभ हमरा सन-सन कतेको महिलाकेँ नाङट करबाक हेतु दिन-राति लागल अछि तखन अहाँ सभक आश्वासनपर कतेक भरोसा कएल जा सकैत अछि? ”

से कहि ओ हवाइपट्टीपर बैसि गेलि । हवाइ जहाजक आवागमन बाधित भए गेलैक । आकाशमे जहाजसभ चक्कर लगबैत रहल । मुदा उतरबाक अनुमति नहि भेटैक । चारूकात हाहाकार मचि गेल । हवाइ अड्डाक अधिकारीलोकनि परेसान छलाह । किछु फुरेबे नहि करनि जे की कएल जाए?सभ ओकरा बुझेबाक प्रयास कए रहल छल । मुदा ओ अड़ल छलि,अड़ल रहि गेलि । हमसभ एहि दृश्यकेँ देखैत रहि गेलहुँ । एहनो हेतैक से सपनहुमे नहि सोचने रही।

25

बहुत मोसकिलसँ किछु महिला पुलिससभ शिखाकेँ हवाइपट्टीपरसँ उठओलक आ कतहु कात बाटे एकांत भवनमे लए गेलनि । शिखाक विद्रोहसँ सरकार हिलि गेल छल । नेताजी सभकाज छोड़ि एहि आगिकेँ मिझएबामे लागि गेलथि । मुदा शिखा अड़ल छलि । जाहिठामक सरकारेक मुखिआ एहन होइक, लोककेँ जबरदस्ती नाङट करबाक हेतु दिन-राति एक केने होइक ताहिठाम ई नाटकसभ करबाक कोन प्रयोजन अछि? हमरा तंग नहि करू । जहिना छी,जे छी से रहए दिअ । नाटक छोड़ैत जाउ ।”

जखन शिखा अपन बातपर अड़ल रहि गेलि आ रहि-रहि कए खिड़की लग आबि जाए,ओहि कोठरीसँ भागि जेबाक प्रयास करए तखन महिला पुलिससभ चारूकातसँ घेरि लेलक आ ठामहि बैसल रहबाक हेतु मजबूर कए देलक । मुदा ओ तँ जेना सनकि गेल छलि । कैकटा महिला संगठनक अधिकारीलोकनिकेँ

बजाओल गेल । शिखाकेँ तरह-तरहसँ बुझेबाक प्रयास भेल । केओ अपन प्रयासमे सफल नहि भेल । ताधरि बाहर हमसभ समर्थकक संगे अड़ल रही । बुझेबे नहि करए जे आखिर,भए की रहल अछि? शिखा बाहर किएक नहि आबि रहल अछि?

हम आ शक्तिनाथ बाहर ठाढ़ छलहुँ । आपसमे किछु मंत्रणा कए रहल छलहुँ । ताबते पुलिसक किछु आला अधिकारी हमरासभ लग अबैत छथि । ओ सभ शिखाक विद्रोही स्वरुपसँ भयाक्रान्त छथि । ऊपरसँ बहुत दबाब पड़ि रहल छनि जे जल्दी एहि विवादकेँ खतम करू । अपना भरि ओ सभ प्रयास केबो केलाह। मुदा किछु नहि कए सकलाह । शिखा अडिग अछि । सभकेँ नाङट कए देबाक हेतु कटिवद्ध अछि ।

"अहींसभ हुनका बुझबिऔन । एना तँ समाज नहि चलि सकैत अछि । विरोधक ई तरीका तँ कानून सम्मत नहि अछि। हमरासभकेँ हारि कए किछु करहि पड़त ।"

हम हुनका लोकनिकेँ की जबाब दितिअनि । तथापि,कहलिअनि-

"जखन अहाँलोकनि सभटा उपाय कइए रहल छी आ एतेक शक्तिसंपन्न छी तखन हमरासभ लग की करए अएलहुँ अछि? हमसभ तँ बदनाम छीहे? मुदा एतबा नीकसँ बूझि लिअ जे नेताजीक पाप आब दबाओल नहि जा सकत । संपूर्ण समाज जागि गेल अछि। ओकर विनाश आब तय छैक ।"

"अहाँसभ अपन राजनीति करैत रहब । मुदा एखन जे समस्या अछि तकर तँ किछु समाधान कए दिऔक।"

"एकर समाधान हम की करबैक? हमरासभकेँ तँ नीकसँ बुझलो नहि अछि जे बात की भेलैक जाहि कारण ओ एतेक उग्र रूप धए लेलनि अछि ?"

"कम सँ कम हुनका कहि सकैत छिअनि जे हवाइ अड्डासँ बाहर आबि जाथि। तकरबाद जे करबाक होनि से करिहथि?"

"आ अहाँसभ चैनसँ पान-सुपारी खाइत रहब?"

राति भरि मंत्रणाक चलैत रहल । शिखा अपन बातपर अड़ल छलि । दोसर दिन प्रतिनिधि सभाक सत्र प्रारंभ होइतैक । नेताजीक प्रयास रहैक जे ताहिसँ पहिने किछु समाधान भए जाइक। ताहि हेतु भरिसक प्रयास कएलो गेल । बड़का-बड़का हाकिमसभ लागल रहलाह । मुदा जखन शिखा टस सँ मस नहि भेलि तँ अधिकारीलोकनि हारि कए हमरासभ लग पहुँचलथि । हमहु की कए सकैत छलहुँ? जाबे शिखासँ गप्प नहि होइत ताबे ओकर मोनक बात कोना बुझितिऐक? आखिर अधिकारीलोकनि मोबाइलसँ हमरासभक गप्प शिखासँ करबओलनि । शिखा अपन बात किछु कहबाक बदला भोकासी पाड़ि कए कानए लागलि । हमरो ओकर स्थितिपर बहुत कष्ट भेल । शक्तिनाथ तँ उग्र भेल जा रहल छल । हम इसारासँ ओकरा रोकबाक प्रयास केलहुँ । ओमहर संदीपक हालत सेहो बहुत पस्त रहैक। प्रदर्शनकारीसभ लस्त पड़ि गेल छलाह । मामिला शांत हेबाक बदलामे गरमाइते जा रहल छल।

"तखन कएल की जाए?"

"शिखासँ आग्रह कएल जाए जे धैर्य राखए । ई कोनो व्यक्तिक समस्या नहि अछि। नेताजी सन-सन लोक समाजक कोढ़

अछि। ओ सभ बहुत जड़िआएल अछि । शासनमे प्रमुख स्थानपर बैसल अछि । तेहनमे तँ जँ हमसभ बुद्धिसँ काज नहि लेब तँ किछु नहि कए सकब । अस्तु, हमरासभकेँ शांतिपूर्वक विचारि कए काजकेँ आगू बढ़ेबाक होएत ।"

ई बातसभ शिखा सुनलक ।

"मुदा हम एहि नेताजीक विनाश केने बिना अपन पूर्वरूपमे नहि आबि सकैत छी ।"

"नहि आउ । मुदा समाजमे रहबाक हेतु ओकर नियमकेँ तँ मानहि पड़त । आखिर, हमरा लोकनिक आंदोलनो तँ समाजक बीचेमे आ समाजक कल्याणेक हेतु होएत ।"

बहुत आग्रह केलापर ओ अपन निर्णयमे संशोधन करैत घोषणा केलक-

"जाधरि एहि दुष्टसभक अंत नहि होएत हम आइसँ श्वेतवस्त्रा रहब ।"

हमरा लोकनिक प्रयाससँ पुलिसक आला अधिकारी लोकनिक जान मे जान अएलनि । एकटा महिला आगू बढ़ि कए ओकरा श्वेतवस्त्र देलकैक । ओ एकहिटा श्वेतवस्त्रकेँ ऊपरसँ नीचा धरि पहिरने हवाइ अड्डासँ बाहर भेलीह। देहमे आओर किछु नहि । मीडिआबलासभ सेहो एहि मौकाकेँ जाए देबए नहि चाहैत छल । तरातर हजारो फोटो खिंचा गेल । जकरा ककरो मोबाइल रहैक से चुकल नहि ।

पुलिसक सुरक्षामे ओ हमरासभक संगे जनक्रान्ति दलक मुख्यालय पहुँचि गेलीह । समर्थकलोकनि सेहो पाछू लागल ओतए आबि गेलथि ।

26

श्वेतवस्त्र धारण केने हाथमे तिरंगा झंडा लेने शिखा हवाइ अड्डासँ बाहर भेलि । काल्हि धरि जकरा केओ नहि जनैत छल से आइ सौंसे देशमे चर्चाक विषय बनि गेल छलि । सभ अखबारक मुख्यपृष्ठपर ओकरे फोटो छल,ओकरे बारेमे समाचार छल। प्रतिनिधि सभासँ सड़क धरि जेना तूफान आबि गेल छल । माननीय सदस्यलोकनि सरकारक इस्तिफाक हेतु अड़ि गेल रहथि। सरकार दिससँ कतबो कहल गेल जे नारी निकेतन प्रकरणक सीबीआइसँ जाँच कराओल जाएत,शिखाकेँ पूर्ण न्याय भेटत, कानून तोरनिहार केओ नहि बकसल जाएत चाहे ओ कतबो पैघ आदमी किएक ने होथि,मुदा लोककेँ एहिसभ बातपर कनीको विश्वास नहि भेलैक । जखन सरकारेक आदमी एहिसभ कुकांडमे सामिल छथि तखन हुनका खिलाफ कोनो जाँचसँ की निकलत? ई तँ जनताकेँ ठगब भेल । पहिने सरकार इस्तिफा दिअ ,तखनहि कोनो जाँच निष्पक्षतासँ संभव भए सकत। पहिलका राज्यप्रमुख तँ इस्तिफा देलाक बाद कतए चलि गेल से किछु पता नहि चलि सकलैक । लोकसभ कहैक जे सरकारे ओकरा कतहु नुका कए रखने अछि जाहिसँ सभकिछु शांत भेलाक बाद ओ सुरक्षित बाहर आबि सकत। मुदा ई सही नहि रहैक । ओ तँ स्वयं बहुत डरा गेल रहथि। सुनबामे इहो आएल जे रातिएमे किछु विश्वस्तक संगे केदारनाथ दिस चलि गेलाह । तकरबाद हुनकर किछु खबरि सरकारोकेँ नहि भेटि रहल छलैक । केओ-केओ इहो बजैक जे ओ सन्यास लए आब पहाड़ेमे आध्यात्मिक चिंतनमे समय बितओताह ओहिठामक माहौल बहुत गरमा गेल छल । ताहिपरसँ शिखाक

प्रचंड उग्र रूप, जे देखितहि कैकगोटेकेँ सीटीपीटी गुम्म पड़ि गेल रहैक । शिखा जहिना बाहर आएलि,ओहिठाम प्रतीक्षारत लोकसभ एकस्वरसँ चिचिआ उठल-

"इनकिलाब! जिंदाबाद!"

आगू-आगू शिखा आ ओकर पाछू-पाछू लोकक हुजुम चलि रहल छल । हम,शक्तिनाथ आ संदीप जेना-तेना शिखाकेँ सम्हारने ओकरे संगे पाछू-पाछू चलि रहल छलहुँ । हमसभ जनक्रान्ति दलक मुख्यालयक बहुत लगीच पहुँचि गेल छलहुँ । साइत दस मिनटमे हमसभ ओतए पहुँचि जइतहुँ । ताबतेमे एकटा जबरदस्त विस्फोट भेल । चारूकात धुँआ-धुआँ पसरि गेल । लगातार पाँच मिनट धरि विस्फोट होइते रहल । पुलिस कतहु नहि देखा रहल छल । सड़कपर कतेको घायल लोकसभ यत्र-तत्र पड़ल छल । के ककरा देखैत? जे बाँचि गेल छल से बँचेबाक हेतु जहाँ-तहाँ भागि रहल छल । बँचबाक कोनो संभावना नहि लागि रहल छल । एक मिनटक लेल तँ हमरा लागि रहल छल जेना प्रलय आबि गेल । हम केना -ने-केना सड़कक दहिना भागक दोकानमे फेका गेल छलहुँ । लागल जेना कोनो अदृश्य शक्ति हमरा सड़कपरसँ उठा कए दोकानपर राखि देलक । मुदा शक्तिनाथ,संदीपक कोनो पता नहि छल । शिखाक सेहो कोनो पता नहि छल ।

ई समाचार बिजली जकाँ सौंसे पसरि गेल । प्रतिनिधि सभाक कार्यवाही स्थगित कए देल गेल । नेताजी गुप्त स्थानमे नुका गेलाह। ओहि दिन तँ सरकार नामक किछु होइत अछि से लगबे नहि करए। सभ एतबे कहैक जे एहिमे नेताजीक हाथ थिक । अपन कुर्सी बँचेबाक हेतु आ लोकक ध्यान कतहु आओर लए जेबाक हेतु ई विस्फोट कराओल गेल अछि । जतेक मुँह,ततेक तरहक बात

चलि रहल छल । मुदा हंगामा सेहो रूकि नहि रहल छल । राति भरि सौंसे सहरमे बम फुटबाक अबाज होइत रहल,कतहु-कतहु गोली चलबाक अबाज सेहो होइत रहल । लगबे नहि करए जे ई ओएह सहर थिक । चारू कात अशांतिक साम्राज्य पसरि गेल छल ।

मुदा हमरा सामने तँ सभसँ पैघ समस्या छल जे शिखाक कोनो जानकारी नहि भेटि रहल छल । संदीप आ शक्तिनाथ सेहो नहि भेटि रहल छलाह । कहि नहि जीबितो छथि की नहि? ई प्रश्न भरि राति हमरा परेसान केने रहल । हम इएहसभ सोचैत अपन कोठरीमे असगर पड़ल छलहुँ की खटकैं अबाज भेल ।

हम केबार खोलैत छी । देखैत छी जे शक्तिनाथ ठाढ़ अछि । सौंसे देहमे खून लागल रहैक । पैरसँ माथ धरि कैकटा पट्टी लागल छलैक । मुदा ओ होसमे छल । चलि सकैत छल ।

"तूँ?"

"हँ ।"

"कतए छलह?"

"हम आ संदीप शिखाकैं घेरने सड़कपर ठाढ़ रही । विस्फोटक बाद शिखाक टांगमे बड़ीजोरसँ खून बहए लागल रहैक । चारू कात अन्हार गुज्ज, किछु नहि देखा रहल छल । संजोगसँ एकटा पुलिसक जीप आएल । हमसभ ओहिमे बैसि अस्पताल पहुँचलहुँ ।

"मुदा शिखा अछि कतए? संदीपक की हाल छैक?"

"शिखा अस्पतालेमे अछि । संदीप ओकरे लग अछि । ओकरो मामुली चोट लागल छैक । मुदा शिखाक देहसँ बहुत खून

निकलि गेल छैक । बड़ीकाल धरि खून खसैत रहि गेलैक । डाक्टर बहुत देरीसँ पहुँचल । डाक्टरसभ किछु बता नहि रहल छैक । किछुटाकाक तुरंत काज छैक, किछु गोटेकेँ खून सेहो चढ़एबाक हेतु लए जाए पड़त । हम ताही हेतु भागल- भागल एहिठाम अएलहुँ अछि ।”

27

नेताजी एहि घटनाक्रमसँ हिलि गेल रहथि । कुर्सी बाँचब असंभव लागि रहल छलनि । असलमे हालत एहन भए जाएत तकर अनुमान हुनको नहि रहनि । नेताजीक अंतरराष्ट्रीय तस्कर गिरोहसँ पुरान संबंध रहनि । असामाजिक तत्वसभ तँ हुनकर चुनाओक खर्चा कहिआसँ उठबैत रहल छल । इलाकाक नामी गुंडासभ सेहो समय-समयपर अपन सेवा हुनका दैते छलनि । मुदा ई सभ कोनो निःशुल्क तँ रहैक नहि। एक लगाउ,दस पाउक सिद्धान्तपर ओ सभ काज करैत छल । घटनाक निर्माता ओएह सभ रहैत छल । ओएहसभ उत्पातो करबैत छल आ अंतमे शांति स्थापनाक नामपर समाजमे आगू आबि कए नेताजीक छविकेँ चमकबैतो ओएह सभ छल । आम आदमी तँ पाकल आम छल,करखन गाछसँ खसि पड़त आ ओकरा कँ लोकि लेतैक,के ओकर उपभोग करत तकर कोनो ठेकान नहि रहैत छल । ओ सभ तँ मात्र मूकदर्शक छल । असली कर्त्ता-धर्ता तँ केओ आओर छल। कुलमिला कए एकटा दुष्चक्रमे जनता फँसि गेल छल आ ओहीमे फसले रहि जाइत छल । चुनाओ तँ एकटा नाटक छलैक । केओ

जितउ,सभकेँ गुंडा,अबारा चाहबे करी नहि तँ पार्टी चलतैक कोना,सरकारी धनक दोहन होएत कोना?पार्टीफंड मजगुत हेतैक कोना? समस्या बहुत गहींर छलैक । कतेको लोक सुधारक प्रयास करैत-करैत एहि दुनिआकेँ छोड़ि गेलाह । मुदा समस्या जस -के-तस रहि गेल । नेताजी सन-सन लोकक वर्चस्व बनले रहलैक ।

असलमे नारी निकेतन कांडक जड़ि कतए-कतए पसरल छल तकर अनुमान लगाएब बहुत मोसकिल छल । केओ नहि चाहैत छल जे एहि घटनाक्रमसँ जुड़ल जानकारी बाहर आबए । तेँ विजयपुरम जा कए बेसक शिखा प्राथमिकी लिखबा देलक मुदा बात आगू नहि बढ़ि सकल । उल्टे ओकर शक्तिपुरम पहुँचतहि हवाइ अड्डेपर मुसीबत भए गेल । सभलोकक ध्यान ओमहर बँटि गेल। सभ अपन जान बँचबएमे लागि गेल । अपन संबंधीक इलाज करबामे लागि गेल । जिनकर संबंधी,इष्ट-मित्रक एहि घटनामे मृत्यु भए गेलनि से सभ हुनकर अंतिम संस्कारमे लागि गेलाह,श्राद्ध करए लगलाह । तकर बाद बम विस्फोटक जाँच शुरु भेल । नित्य किछुगोटेकेँ जाँचक हेतु बजाओल जाए। लोकसभ एहिसभसँ बहुत परेसान भए गेल । बहुत रास निर्दोष लोकसभक नाम ओहि मामिलामे दए देल गेलैक । एकरसभक मूल उद्येश्य असली दोषीसभकेँ बँचाएब छल । नेताजीक कुर्सी सलामत रहत तँ बँकिए लोक सभ बँचले रहत । तेँ तमाम असामाजिक तत्व,बड़का-बड़का ठीकेदार,व्यापारी सभ जी-जानसँ नेताजीकेँ बँचबएमे लागि गेल रहए । ओहीक्रममे शिखाकेँ शुरुएमे डरा देबाक हेतु बम बिस्फोट कराओल गेल रहैक । मुदा मामिला जरूरतिसँ बेसी बढ़ि गेलैक । बहुत रास लोक घायल भए गेल । कतेको निर्दोष लोक मारल गेल। मुदा शिखा ठामहि बँचि गेलि । घायल ओहो भेल रहए,मुदा जान

बँचि गेलैक । संजोगसँ अस्पतालमे नीक डाक्टर पकड़ा गेलखिन । ओ दिन-राति एक लए देलनि । हुनके परिश्रमक परिणाम भेल जे पनरह दिनक भीतरे शिखा स्वस्थ भए अस्पतालसँ वापस भए गेलि। ओहिना श्वेतवस्त्रा, नेताजीक विनाशक हेतु कृत संकल्प ।

नारी निकेतन मामिलाक कोर्ट स्वयं संज्ञान लेलक । परिस्थितिकेँ देखैत कोर्ट एहि मामिलाक जाँच सीबीआइकेँ दए देलक । तकर बाद तँ सौंसे हरकंप मचि गेल । नारी निकेतनक कर्ता-धर्तासभ पकड़ल गेलाह । सभटा कागजातसभ जब्त कए लेल गेल । किछु स्थानीय लोकसभक साक्ष्यक आधारपर नारी निकेतन लगपासमे जमीनक नीचाँसँ कतेको मृत लोकसभक कंकाल भेटल । नारी निकेतनसँ कतेको युवतीसभ गायब छलि । ओकरासभकेँ जेना-तेना पता लगाओल गेल । अखबार,मीडिआ एहि समाचारसभसँ पाटल रहैत छल । एहिसभ घटनाक बाद नेताजीक कुर्सी जाएब निश्चित लागि रहल छल ।

ऊपरसँ शिखा श्वेतवस्त्राक नामसँ सौंसे परिचित भेल जा रहल छलि । हमसभ जनक्रान्तिदलक मुख्यालयमे भेल बैसारमे शिखाकेँ पार्टीक अध्यक्ष बनेबाक प्रस्ताव केलहुँ । मुदा ओ साफे मना कए देलक ।

“हमरा कोनो पद नहि चाही । कोनो सम्मान नहि चाही । बस न्याय चाही । न्याय हमरेटा नहि चाही, ओकरासभकेँ भेटबाक चाही जे सुरक्षाक नामपर नारी निकेतनमे रहबाक बाद घोर असुरक्षित भए गेल छलि, समाजक तथाकथित पैघ-पैघ लोकक वासनाक शिकार भए गेल छलि । से जँ नहि भेल तँ हम एहि हेतु प्राण उत्सर्ग कए देब । मुदा रूकब नहि, झुकब नहि । जीवन पर्यंत लड़ैत रहि जाएब । इएह हमर जीवनक एकमात्र उद्येश्य अछि ।”

नारी निकेतन कांडक जाँच जेना-जेना आगू बढ़ए लागल,नेताजीक स्वास्थ्य तहिना गड़बड़ाइत गेलनि । डाक्टरसभ दिन-राति लागल रहए । मुदा बिमारीक किछु थाह लगबे नहि करैक। मुदा नित्य एकटा नव समस्या हुनका होइत गेलनि । नेताजीक स्वास्थ्यक समाचार आखिर बाहर आबिए गेल । लोकसभमे चर्चा होबए लागल –

"एकर पाप डिड़िआ रहल छैक ।"

"कर्मक फल तँ भोगहि पड़ैत छैक ।"

"एकर नाश हेबे करतैक । भगवान सभ देखैत छथिन । तरह तरहक बातसभ लोकसभ करए । नेताजीक असली बिमारी की रहनि से मुदा डाक्टर नहि बूझि सकल । एहिना अनुमानसँ इलाज करैत रहल ।

28

शिखाक विद्रोही रूखि देखि संदीपक हृदयपर बहुत आघात लगलैक । कष्टमे हमहु सभ रही। मुदा समस्याक समाधानो कोनो आसान नहि छल,एकदिनमे तँ होबए बला बात नहिए रहैक। निठ्ठाह कए सड़ि गेल व्यवस्थाकेँ कानून सम्मत तरीकासँ बदलि देब आसान काज नहि छलैक । मुदा विकल्पो नहि छलैक । तेँ हम आ शक्तिनाथ राति-राति भरि जागि कए भविष्यक आंदोलनक प्रारुप बनबएमे लागल रही । मुदा संदीपकेँ बहुत अनमनस्यक देखिऐक। गप्प-सप्पमे ओ आब बेसी रूचि नहि लैत छल । एकदिन हम पुछबो केलिऐक-

"की बात छैक? आइ-काल्हि तूँ बहुत गुम्म रहैत छह?"

परंतु ओ किछु जबाब नहि देलक । आओर गंभीर भए गेल। हमहु बेसी नहि कहलिऐक । मोनमे होअए लागल जे की पता कहीं उल्टे भए जाइक । ओ कोनो नवालिग तँ अछि नहि । तेँ समयक प्रतीक्षा करबे उचित बुझाएल । ई बात हम नीकसँ बुझिऐक जे शिखाक संग भेल कुकांडक ओकर मनोदशापर बहुत प्रतिकूल प्रभाव पड़ल अछि । उमीद रहए जे कालक्रमे ओ स्वयं संतुलित समाधान दिस बढ़त । मुदा से भेल नहि । कैकबेर ओकरा हम शिखाक संगे एकांती करैत देखिऐक । हमरा चिंता होअए जे कहीं ई सभ कोनो गलत रस्ता ने पकड़ि लिअए ।

एकदिन रातिमे हम उठलहुँ तँ संदीप नहि रहए । ओकर ओछाओन खाली रहैक । बाहर रस्ता दिस देखलहुँ । सौंसे सुन्न छल। कतहु केओ नहि देखाइत छल । रहि-रहि कए एकटा कुकुरक भुकबाक अबाज जरूर सुनाइत छल । हमरा चिंता भेल । भेल जे शक्तिनाथकेँ उठाबी । मुदा ओ निचैन सुतल रहए । दिन भरि काज करैत-करैत बहुत थाकि गेल रहए । प्रात भेने फेर ओहिना काज करबाक छलैक । गामे-गाम जन-जागरण करबाक हेतु घुमबाक छैक । तेँ ओकरा किछु नहि कहलिऐक, सुतले छोड़ि देलिऐक । हम उठि बैसलहुँ । करवनहु बाहर करवनहु अंदर होइत रहलहुँ । मुदा संदीप कतहु नहि देखाएल ।

दूपहर रातिएमे संदीप अपन डेरासँ निकलल । ओकरा नेताजीक बहुत रास रहस्य बूझल रहैक । नेताजी एहिबातसँ बहुत चिंतित रहबो करथि। मुदा कोनो तरहें ओकरा काबूमे नहि कए सकल । संदीप हमरासभक संगे आबि गेल । नेताजीक घोर विरोधी भए गेल । दिन-राति जनक्रान्ति दलक कार्यक्रमकेँ आगू बढ़एबामे

लागल रहल । मुदा शिखा कांडसँ ओकर दिशा बदलि गेलैक । ओ जल्दी सँ जल्दी नेताजीक विनाश चाहैत छल । ओही क्रममे ओ ओहि राति बिदा भेल रहए । ओकरा नीकसँ पता रहैक जे नेताजी राति कए सरकारी निवासमे नहि,अपितु थोड़बे फटकी एकटा ठीकेदारक मकानमे रहैत अछि । ओतए हुनकर रासलीलाक ओरिआन रहैत छनि। भोर होएबासँ पहिनहि ओ अपन सरकारी निवासपर लौटि जाइत छथि। ताही अनुमानक अनुसार ओ ठीकेदारक घर लग पहुँचल । ओहि घरक आगू-पाछू किछु नहि छलैक । ओतए कोनो सरकारी सुरक्षा व्यवस्था सेहो नहि रहैक । ओ मकानक पछिला गेटसँ घुसल । खिड़कीसँ भीतर देखलक । नेताजी महिलाक संगे पड़ल छलाह। ओहि कोठरीक बगल बला कोठरी लग गेल । कनीके प्रयाससँ ओकर छिटकिनी नीचाँ सड़कि गेलैक । ओ कोठरीमे पैसि जाइत अछि । जेबीमे सँ छुरी निकालैत अछि । दुनू कोठरीक बीच केबार खुजले रहैक । ओ सावधानीपूर्वक आगू बढ़ैत अछि । नेताजी फोंफ काटि रहल छलाह। हुनकर बगलमे सुतल महिला सेहो निन्नमे छलि । संदीप आगू बढ़ल । छुरीकेँ कसि कए पकड़लक । एकबेर फेर ध्यानसँ नेताजीकेँ देखलक आ जोरसँ छुरी हुनकर छातीमे घुसेबाक हेतु चला देलक। संजोग एहन भेलैक जे छुरी नेताजीक छातीमे नहि लागि हुनकर बामा हाथमे लगलनि। ओ चिचिआ उठलाह। हुनका एना चिचिआइत देखि बगलमे सुतलि ओ महिला उठि बैसलि । संदीप ओही छुरीसँ दोबारा नेताजीपर आक्रमण करबाक प्रयास केलक । ताबे ओ महिला सजग भए गेल छलि । ओकरा भरि पाँज पकड़ि लेलक । नेताजी सेहो उठि गेल छलाह। ओकरा धर दए चिन्हि गेलाह । ओहने हालतमे उठि संदीपक हाथसँ छुरी छिनि लेलक ।

मोबाइल उठओलक आ ककरो फोन कए देलक । औ बाबू! देखिते-देखिते चारिटा मुस्टंड ओतए हाजिर भए गेल । संदीप ठामहि पकड़ल गेल ।

संदीपक योजना असफल भए गेलैक । उल्टे आब ओ संकटमे फँसि गेल । प्रायः ओकरा ई नहि बूझल रहैक जे नेताजी बहुत घुटल आदमी अछि । बेसक ओ गुप्त स्थानमे आनंद मना रहल छल,मुदा संकटसँ निपटबाक अपन निजी सुरक्षाक ओरिआन तँ केनहि छलाह। आब तँ संदीप पकड़ाइए गेल छल । मुस्टंडसभ ओकरा बड्ड मारि मारलकैक । मोबाइल छिनि लेलकैक। जेबीमे जे कनी-मनी टाका रहैक सेहो छिनि लेलकैक । ओ अधमरु भए गेल छल । ओहने हालतमे मुस्टंडसभ ओकरा बीच रस्तापर फेकि घसकि गेलैक ।

29

मुस्टंडेमेसँ केओ नेताजीक पत्नी महिमाकेँ फोन कए घटनाक सूचना देलकनि । ओ तँ अपने परेसान छलीह । रातिमे नेताजीकेँ गायब देखि चिंतामे रहथि । ओना ई कोनो नव बात नहि छल । नेताजी अहिना करिते रहैत छलाह। महिमा एहिबात सँ बहुत दुखी रहैत छलीह । कैकबेर मोन होनि जे नेताजीसँ संबंध विच्छेद कए ली । मुदा नेताजी घटी मानि लैत छलाह,फेरसँ एहन गलती नहि करबाक प्रतिज्ञा करैत छलाह। मुदा प्रात भेने फेर ढाकक तीन पात। ओ पुरने चालि पकड़ि लैत छलाह। नेताजीक राजनीतिक भविष्यकेँ ध्यानमे रखैत महिमा सेहो बातकेँ बेसी नहि बढ़बैत

छलीह । मुदा ओहि दिन तँ बात स्वतः सार्वजनिक भए गेल छल । नेताजी घायल भए गेल रहथि। हुनका संगे सुतल महिला हुनका अस्पताल लए गेलनि। अस्पतालमे लोकक करमान लागि गेल छल। पुलिससभ पुछ-ताछ हेतु ओहि महिलाकेँ पकड़ि लेलकैक । पुलिसकेँ इसारा करैक । मुदा ओ सभ अपना हिसाबे जाँचमे लागल रहल । पुलिस ततेक दबाब देलकैक जे आखिर ओ महिला बाजिए देलकैक-

"हम नारी निकेतनमे रहैत छलहुँ । एक राति किछु बदमाससभ हमर अपहरण कए लेलक । तकर बादसँ दोबारा ओतए नहि जा सकलहुँ । दिनमे कतहु, रातिमे कतहु पहुँचा देल जाइत छी । सालक-साल एहिना समय बीति रहल अछि। केओ देखनाहर नहि अछि ।"

नारी निकेतन कांडक जाँच कए रहल सीबीआइ अस्पताल पहुँचि ओहि महिलाकेँ अपन कब्जामे लए आगूक पूछ-ताछ हेतु अपन कार्यालय लेने चलि गेल । नेताजीक बामा हाथमे लागल घावपर टाका लगा देल गेल । तकर बाद विशेष कक्षमे राखि देल गेल । संदीप सेहो अस्पताल आनल गेल । ओकर हालत बहुत खराब छलैक । यत्र-तत्र चोटक निसान छलैक । कैकठामसँ खून बहि रहल छलैक । होसो नहि छलैक । लोकसभ तँ कहैक जे ओकर बँचनाइ मोसकिल अछि । अस्पतालमे डाक्टरसभ किछु नहि बजैत छल । एक दिस नेताजी आ दोसर दिस ओकर शत्रु संदीप । एकहि अस्पतालक एकहि विभागमे । मुदा दुनूक सुबिधामे आकाश-पतालक अंतर छल । यद्यपि नेताजीक स्थिति ठीक छल,सभ डाक्टर ओकरेपर लागल रहैत छल । संदीपकेँ ओकर भाग्यपर छोड़ि देल गेल छलैक । सत्य बात तँ ई छलैक जे

अस्पतालक डाक्टरसभ ओकरा एहि अस्पतालमे भर्ती नहि करए चाहैत छल । संजोगसँ हम आ शक्तिनाथ ओहिठाम पहुँच गेल रही। अस्पतालक चारूकात हमर पार्टीक कार्यकर्तासभक मेला लागि गेल छल । हमसभ अस्पतालक अधीक्षककेँ भेंट केलिऐक । तकर बादे संदीपक इलाज शुरु भए सकल ।

संदीप बँचि गेल । नेताजी सेहो बँचि गेलाह। मुदा एहि घटनासँ नेताजीक राजनीतिक भविष्य डमाडोल भए गेलनि। प्रतिनिधि सभामे भारी हंगामा भेल । नेताजीक खिलाफमे पक्ष-विपक्षसभ एकमत भए गेल । एहन आदमी राज्यप्रमुख नहि रहि सकैत अछि ।

“पहिने ई इस्तीफा दिअए तकर बादे आओर किछु ।”

आखिर प्रतिनिधि सभा स्थगित भए गेल । नेताजी बहुत मोसकिलमे फँसि गेल छलाह । अपन खास-खास लोकसभसँ मंत्रणा केलथि। सभ एकमतसँ नेताजीक इस्तिफापर सहमत छल। आखिर नेताजी एकर समाधान तकलथि–

“ठीक छैक । अहाँ लोकनिक ई बात हम मानि लैत छी । मुदा अहूँसभ हमर एकटा बात मानि लिअ।”

“बाजू की प्रस्ताव अछि?”

“हमरा बदलामे हमर श्रीमतीजी राज्यप्रमुख बनतीह ।”

“एहनो कहीं भेलैक अछि? ओ की जाने गेलथि राजनीति?”

“केओ पेटसँ सिखने नहि अबैत अछि । आखिर ई महिला सशक्तीकरणक युग छैक । ताहि समयमे अहाँसभ एहन बात कोना कए सकैत छी?”

“पार्टीक अंदर एक सँ एक अनुभवी लोक छथि, वरिष्ठो छथि, हुनकासभकेँ मौका देल जाए ।”

“हमर बात मानि लिअ । नहि तँ सभक फाइल हमरा लग अछि । सभक गुप्त बातसभ बाहर आबि सकैत अछि । तखन जँ गड़बड़ होएत से अहाँलोकनि जानी ।”

नेताजीक ओहिठामक भेल बैसारक जानकारी असामाजिक तत्वसभकेँ भेलैक। ओकरासभक हेतु ई स्वर्णकाल छल । सरकार बनाएब-खसाएब ओकरसभक साबिक धंधा छल। सभ अपन-अपन जासूस नेताजीक लगपासमे राखि देलक । ओकर एक-एक गतिविधिक जानकारी लेबए लागल । जखन ई बात तय भए गेलैक जे नेताजी आब राज्यप्रमुख नहिए रहताह,तखन ओसभ नेताजीपर सबार भए गेल । बेरा-बेरीसभ नेताजीकेँ घेरलक आ अपन-अपन हिसाब-किताब साफ करबाक दबाब बनबए लागल ।

“अहाँ सभ अनेरे चिंतामे छी । हम तखनहि हटब जखन महिमा राज्यप्रमुख बनतीह ।”

“एहनो कहीं भेलैक अछि ।”

“एहने हेतैक । हमसभकेँ ई बात साफ कए देलिऐक अछि। इहो कहि देलिऐक अछि जे जँ केओ गड़बड़ करत तँ तकर हाल हमरोसँ खराब भए जेतैक । सभक फाइल तैयार छैक । बस मीडिआमे जेबाक देरी अछि ।”

“असामाजिक तत्वसभ मोंछपर हाथ देलक । बाजल-

“जँ से होइक तँ हमसभ अहाँक संगे छी । हमरसभक हितक ध्यान राखल जेबाक चाही । बस एतबे । हमरासभकेँ एहिसँ कोनो मतलब नहि अछि जे राज्यप्रमुख अहाँ छी, की महिमा बनैत छथि, की केओ आओर ।”

“तखन निश्चिंत भए अपन काजमे लागल रहू । किछु पार्टीफंडमे जमा कए दिऔक । कारण अखन खर्च बढ़ि गेल छैक। आगू हम देखि लेब ।

“एवमस्तु ।” -सभ एकस्वरसँ बाजि उठल ।

30

ओमहर महिमाक शपथग्रहण समारोह भए रहल छल,नेतासभ सलाहकार बनबाक हेतु पाँतिसँ बैसल छलाह,इलाकाक असामाजिक तत्वसभ उत्सव मना रहल छलाह। सदर बजारक मिष्ठान्न भंडार जनताक हेतु खोलि देल गेल छल । जे जतेक मिठाइ खा सकए,जतेक अपना संगे लए जा सकए कोनो मनाही नहि,कोनो शुल्क नहि । सहरमे रसनचौकी बाजि रहल छल। नव राज्यप्रमुखक स्वागतमे सहर भरिमे तोरनद्वार बनाओल गेल छल । रंग-विरंगक फूलसभसँ सौंसे रस्ताकेँ पाटि देल गेल छल। जनतामे एहन संदेश देबाक प्रयास कएल जा रहल छल जे बितल बातकेँ बिसरि जाउ,आब सभकिछु नीके होएत । जनताक हेतु शासन दिन-राति काज करत । जरुरतिक सभ चीज सुलभ रहत। बिजली मुफ्त,भानसक हेतु गैस मुफ्त ,ततबे नहि गृहणीसभकेँ मासे-मास पाँच हजारक पेनसन सेहो देल जेतैक ।

ककरो किछु करबाक काज नहि । सभटा भार सरकार उठाओत । लोकसभ बस स्नान,ध्यान कए पलथा मारि कए बैसि जाएत आ जलखै,चाह,भोजन सभ किछुक ओरिआन मुफ्तमे सरकार करतैक। ततबे नहि,जे सभ दारू पिबैत छथि तिनका हेतु साँझमे दारू सेहो मुफ्त । जतेक पिबथु कोनो कमी नहि रहतनि । एहिसभक बदलामे जनतासँ अपेक्षा कएल जाएत जे ओ सभ नव सरकारक आँखि मूनि कए समर्थन करैत रहताह । सरकार विरोधी तत्वकेँ राष्ट्रद्रोही बूझताह । विपक्षक बातमे नहि अओताह आ जहिआ कहिओ भोट होइ,सरकारक पक्षमे मतदान करताह ।

सरकारी घोषणासँ जनता बहुत खुस रहए । मासे-मासे पानि-बिजलीक बिल नहि देबए पड़ैक । मासमे दूबेर किलोक-किलो मंगनीमे रासन भेटि जाइक । सभ अपन-अपन दरबाजापर तास खेलाए, भोजन करए आ साँझ पड़ितहि सुति रहए ।

लोकसभ आपसमे गप्प करैत रहैत छल -

“भाइ! एहिसँ नीक सरकार नहि भए सकैत अछि? अनेरे लोकसभ नेताजीक फज्जति करैत छल । ओकरा खिलाफ तरह-तरहक आरोप-प्रत्यारोप लगा रहल छल ।” लोकसभ खुस छल । ओमहर नेताजीक समर्थनमे असामाजिक तत्वसभ दिन-राति एक केने छल।

नेताजी आ हुनकर गिरोहक तमाम दुष्टताक अछैत शिखा अपन अभियानमे लागल रहलि । सरकार बदलि गेलैक । नव राज्यप्रमुख बनि गेलैक । जनताकेँ प्रलोभन दए मिला लेबाक सरकारी प्रयास चलैत रहलैक । मुदा शिखा अपन अभियानमे अड़ल छलि । एकदिन एहिना भोरे अपन समर्थकसभक संगे

शिखा निकलल छलि की ठीक सामनेसँ एकटा ट्रक टक्कर मारि देलकैक । ओकर जीपक अगिला हिस्सा चुकरी-चुकरी भए गेल । कैकगोटे नीचाँ खसल । कैकगोटे घायल भेल । शिखाकेँ सेहो कैकठाम चोट लगलैक । कार्यकर्तासभ ओकरा उठा-पुठा कए सरकारी अस्पताल पहुँचओलक । बदमाससभक योजना शिखाकेँ दुर्घटनामे खतम कए देबाक रहैक । मुदा से सफल नहि भेलैक । मुदा ओ सभ शिखाक पछोड़ केने अस्पताल धरि पहुँचि गेल । अस्पतालमे इलाज करा रहलि शिखाकेँ ओतहि साफ कए देबाक चेष्टामे लागल रहल । कोनो सिस्टरकेँ मिला लेने छल । ओ शिखाकेँ जहरक सुइआ घोपए जाइए रहल छल की एन मौकापर एकटा डाक्टर ओतए पहुँचि गेल । सुइआक डिब्बासँ ओ बूझि गेल जे बात की अछि । ओ सिस्टरकेँ धएले चमेटा कसि देलक । सिस्टरक हाथसँ सुइआ खसि पड़लैक । सिस्टर हतप्रभ छलि । जाबे किछु बूझितए,सम्हरितए ताबे डाक्टर फेर एक चमेटा लगा देलक । ताबे पाछूसँ चारिटा मुस्टंड दौड़ल । लगपासमे इलाज करा रहल रोगीसभक संबंधी सभ सेहो सहटि कए ओतए आबि गेल । शक्तिनाथ तमाकुल खेबाक हेतु ओसारापर गेल छल । हल्ला सुनि कए ओहो आबि गेल । पुलिससभ सेहो दौड़ल । कनीके कालमे लागल जेना ओतए बिहारि उठि गेल । बिहारिओ एहन जे शांत हेबाक नामे नहि लए रहल छल ।

एहनो माहौलमे मुस्टंडसभ प्रयास केलक जे सिस्टरकेँ घिचने बाहर चलि जाए । किछु मुस्टंड शिखाक लगीच पहुँचि गेल। ओ सभ प्रयास केलक जे शिखाक गला दबा दी । एतबहिमे दे-दनादन दे दनादन जनक्रान्तिदलक कार्यकर्तासभ ओतए पहुँचि गेल। ओतए पुलिससभ सेहो आबि गेल । मुदा करए किछु नहि ।

पुलिससभ मुरुत जकाँ तमासा देखैत रहि गेल । बात बढ़ैत देखि मुस्टंडसभ जान बँचा कए भागल । सिस्टर पकड़ल गेलि । शिखाकेँ रक्षार्थ जनक्रान्तिदलक कार्यकर्तासभ ओकरा चारूकातसँ घेरि लेलक । मीडिआबलासभकेँ सेहो ई समाचार पता लगलैक । देखिते-देखिते अस्पतालक दृश्य सौंसे देशमे टेलीँवीजनक माध्यमसँ प्रसारित होबए लागल । सभ एतबे पूछि रहल छल-

"आखिर ई सभ केलक के?"

"जरूर एहिमे नेताजीक षड़यंत्र अछि ।"

"सएह कहू ओ एतेक नीचतापर उतरि जाएत से नहि बूझा रहल छल ।"

एहि तरहक गप्प गामक-गाम होबए लागल ।

थोड़े कालक बाद शक्तिनाथ हमरा फोन केलक-

"कतए छी?"

"डेरेमे?"

"जल्दी निकलू । हम ओतहि आबि रहल छी ।"

"की भेलैक?"

"आहि रे बा! अहाँकेँ सेहो नहि बूझल अछि? सौंसे दुनिआमे हल्ला भए गेल आछि ।"

"बात की छैक से कहह ने ।"

"शिखापर ट्रक चढ़ा देने रहैक । संजोगसँ ओकर जान बँचि गेलैक । मुदा..."

"मुदा की?"

"तकर बादो ओ सभ शिखाक अस्पताल धरि पछोड़ केने रहल, चाहलक जे ओतहि साफ करबा दी ।"

"से केना?"

"एतेक बात फोनपर करब ठीक नहि । हम पहुँचिए रहल छी । संगे ओतए चलब । सभ बात अपने बूझि जेबैक ।"

"ठीक छैक आबह ।"

31

नारी निकेतन कांडक कोर्टमे फैसला आबक रहैक । साल भरिसँ बेसीसँ ई मामिला चलि रहल छल । कतेको गोटेक गबाही लेल गेल । साक्ष्यसभ नेताजी आ ओकर कुनबाक संलिप्तता साबित करबामे बहुत सहायक भेलैक । स्थानीय लोकसभ सेहो बहुत मदति केलखिन। नारी निकेतनमे पाओल गेल दस्ताबेजसभ सेहो मामिलाकेँ मजगूत केलक । जज साहेब एहि बातसँ बहुत कुपित रहथि जे सरकार एहि मामिलाकेँ झँपबाक कोनो प्रयास बाँकी नहि रखलक । जज साहेबकेँ व्यक्तिगत रूपसँ प्रभावित करबाक प्रयास सेहो कएल गेल । हुनका बदमाससभ डराबक प्रयास सेहो केलक । मुदा जज साहेब अड़ल रहि गेलाह । अंततः फैसला आएल । नेताजी समेत हुनकर तमाम संगीसभकेँ आजन्म कारावासक दंड देल गेल । अफसोचक बात जे संदीप सेहो फँसि गेल । ओकर संलिप्ततामे बहुत रास सबूत नेताजीक आदमी कोर्टकेँ उपलब्ध करबा देने रहैक । ओकर सभक प्रयास रहैक जे संदीपक नाम आगू केलासँ आओर लोकसभकेँ बँचाओल जाए ।

मुदा से नहि भेलैक । मुदा संदीपो नहि बँचि सकल । असलमे ओ बहुत दिन धरि एहिसभमे लागल रहए । जाबे होस अएलैक ताबे बहुत देरी भए गेल रहैक । जखन मामिला सीबीआइक हाथमे अएलैक तखनहु हमसभ प्रयास केने रही जे संदीपकेँ सरकारी गबाह बना देल जाए। मुदा से भेल नहि । आखिर एहि मामिलामे न्याय भेल । न्यायो एहन भेल जे सरकारकेँ हिला कए राखि देलक। दर्जन भरि सलाहकार सेहो नेताजीक संगे एहि मामिलामे आजन्म कारावाससँ दंडित भेलाह ।

असलमे ई मामिला भइए गेल छल भयावह । नारी निकेतनक लगपासमे कतेको नरकंकाल भेटल छल। कतेको लापता महिलासभक हड्डी ओहिमे भेटल जकरा डीएनए जाँचसँ पहिचान कएल गेल । कहबाक माने जे आओर अपराधक संग-संग हत्याक जघन्य अपराध सेहो भेल छल । परिणाम सामने छल । फैसला सुनेबाक बाद जज साहेब कहलनि जे ई फैसला अखन अपूर्ण अछि कारण बहुत रास अपराधी अखनहु कोर्टक सामने नहि आनल जा सकल अछि । तेँ मामिला बंद नहि कएल जा सकत,अपितु चलिते रहत । एक-एकटा दोषीखेँ दंड देलाक बादे ई मामिला बंद कएल जा सकत । जज साहेबक उपरोक्तिसँ कोर्टमे उपस्थित नेताजीक समर्थकसभ भीतरसँ हिलि गेलाह । सभक ठोरपर फिफरी पड़ि रहल छल । आब की होएत? के बाँचत,के जहल जाएत तकर कोन ठेकान?

नारी निकेतन कांडक फैसला कोर्ट एहन समयमे केलक जखन चुनाओ माथपर छलैक । शासनक प्रमुख-प्रमुख आदमीकेँ जहल चलि गेलाक बाद महिमाक हाथ-पैर फुलि रहल छलनि । हुनका राजनीतिक कोनो अनुभव नहि रहनि। नेताजी जबरदस्ती

हुनका आगू कए देने रहथि जाहिसँ कुर्सीसँ हटि गेलाक बादो असली शक्ति हुनके हाथमे रहनि। मुदा नेताजी समेत सभ प्रमुख आदमीसभ जहल पहुँचि गेलाह। पार्टीपर असामाजिक तत्वसभक कब्जा भए गेल । तकर बाद ओ सभ आपसमे बैसार केलक।

“ई समय हमरासभक लेल स्वर्ण काल अछि । महिमाकेँ आगू रखने रही आ सभटा शक्ति हमरासभ लग रहए । पहिनहुसँ बेसी नीकसँ अपन सभक कारोबार चलैत रहत ।”

“मुदा हमसभ चुनाओ कोना जिति सकब?”

“महिमाकेँ के जनैत छैक?”

“चुनाओ टाकासँ लड़ल जाइत छैक । जातिक नामपर लड़ल जाइत छैक । धर्मक नामपर एकमुस्त भोट पड़िते अछि, आगू सेहो पड़त । बस लोककेँ जगेबाक छैक । तकरबाद देखबैक की हाल रहैत छैक।”

“से कोना होएत ।”

“हेतैक ने । दू-चारिठाम दंगा करबा देल जेतैक । कोर्टसँ आरक्षणक खिलाफ फैसला करबा देल जेतैक । गरीब जनतासभकेँ टाकाक बले कीनि लेल जाएत । ट्रकक-ट्रक लोक प्रदर्शन करत । मीडिआमे अपन लोकसभ छथिहे । ओ सभ कहिआ काज अओताह? टाकामे बहुत शक्ति छैक । जतेक काज हेतैक लगा देल जेतैक । एक लगाउ,दस पाउ । फेर जखन अपन सरकार बनि जाएत,सभ सुदि-मुरक संगे ओसुल भए जाएत । कोनो चिंताक बात नहि ।”

“एहिमे बहुत खतरा बुझा रहल अछि । जँ हमरसभक योजना सफल नहि भेल तखन?”

"खतरा कथीमे नहि छैक? एतेक डरा कए जिनगी नहि चलि सकैत अछि । हमरा लोकनिक धंधामे तँ ई सभ चलिते रहल अछि। आगूओ चलत ।"

"ठीक छैक । हमसभ सएह करी ।"

एहि तरहें विचार-विमर्शक बाद ओ सभ महिमा लग पहुँचलाह । ओ एकरासभकें देखितहि तामसे लाल भए गेलीह ।

"तोरासभकें एहिठाम बिना सूचनाकें अएबाक प्रयोजन?"

"हमसभ सभदिनसँ अहाँक परिवारक शुभचिंतक रहलहुँ अछि । नेताजीक लेल अहूँसँ बेसी हमसभ चिंतित छी । ओ जरूर छुटि कए अओताह । तखन कानूनी प्रक्रियामे किछु समय तँ लगिते छैक । ताबे हमरा लोकनिकें धैर्य रखबाक होएत ।"

"हम ई सभ नहि जानी । आब बहुत भए गेल । हम एहिसभमे पड़ल नहि रहि सकैत छी । हम आइए राज्यप्रमुखक पदसँ इस्तिफा देबए जाए रहल छी । अहाँ लोकनि अपन दोसर नेता चुनि लेब । एहि काजमे लागल रहब हमरा वशक नहि अछि। हमर स्वभाव आ परिस्थिति ई सभ करबाक अनुमति नहि दए रहल अछि।"

"अहाँ अगुताइ जुनि । चुनाओक घोषणा भए गेल अछि। नेताजी आ हुनकर सहयोगीलोकनि जहलमे छथि । एहन संक्रमण कालमे जँ अहूँ धैर्य नहि राखब तखन हमसभ कोना जितब?"

"से अहाँ लोकनि जानू ।"

"मुदा अहाँकें अपन धिआ-पुताक चिंता तँ होएत?"

"से की?"

"ओ सभ ताबते सुरक्षित अछि... ।"

"खबरदार! जँ आगू किछु बजैत गेलहुँ तँ हमरासँ खराब केओ नहि होएत ।"

मामिला बिगड़ैत देखि किछुगोटे आगू बढ़ि कए महिमाकेँ बुझेबाक हेतु एकांतमे लए गेलथि । आखिर चुनाओ धरि महिमा राज्यप्रमुखक काज करबाक हेतु तैयार भए गेलथि । सभगोटे निश्चिंत भए अपन-अपन घर वापस गेलथि ।

32

सरकारक मुफ्त योजनासभसँ सरकारी खजाना खाली भए गेल छल । सेवानिवृत्त कर्मचारीक पेनसन देब मोसकिल भए रहल छल। कार्यालयसभक बिजली,पानिक बिल तँ कम भेल मुदा आओर जरूरी समानसभक घोर अभाव भए गेल । कैकटा कार्यालयसभमे कर्मचारी/ अधिकारीक दरमाहा भेटनाइ सेहो पराभव भए गेलनि । महगाइ ततेक बढ़ि गेल जे झोरा भरि कए टाका लए गेलाक बादो एकहु सप्ताहक हेतु समानसभ नहि भेटैत छल । कहबाक मतलब जे सौंसे घोर अराजकता पसरि गेल छल । चुनाओक माहौलमे हालति बिगड़िते गेल । महिमा लाख प्रयास करथि जे एहि दलदलसँ बाहर होइ मुदा से हेबे नहि करनि ।

"एहि समयमे अहाँ कोना हमरासभकेँ छोड़ि सकैत छी?"

"मुदा हमरा वशकेँ ई सभ अछि नहि । जनतामे त्राहिमाम मचल अछि । लोक परेसान अछि । धिआ-पुताक भविष्य संकटमे

अछि । एहन ठाम हम चुनाओ जँ जितिए जाएब तँ कोन फएदा होएत ।”

मुदा ओकर तथाकथित समर्थकसभ नहि मानैक । पार्टीक किछु प्रमुख नेतासभ टिकट नहि भेटबाक कारण अलग गुट बना लेलक । पार्टीक हालत ओहुना नीक नहि छलैक । नारी निकेतन कांडक बाद पार्टीक प्रतिष्ठा बहुत घटि गेल छलैक । मुदा बदमाससभक घमंड कम नहि भेल रहैक । ओकरासभकेँ विश्वास रहैक जे ओ सभ जेना-तेना चुनाओ जिति लेत,सरकार फेरसँ ओकरेसभक बनतैक । मुदा महिमा एहि बातसभसँ आश्वस्त नहि रहथि । ओ चुनाओ नहि लड़बाक घोषणा कए देलथि । ऊपरसँ पार्टीमे फूट भइए गेल रहैक । एहिसभसँ आम कार्यकर्ताक मनोवल बहुत खसि गेलैक ।

आखिर महिमा अपनाकेँ राजनीतिसँ अलग करबाक दृढ़ निश्चय केलक आ ताहि दिशामे आगू बढ़ि गेलि । हम अपन कोठरीमे शक्तिनाथक संगे गप्प करैत रही । वर्तमान राजनीतिक परिदृश्यमे भविष्यक योजना बनबएमे लागल रही कि महिमाकेँ अबैत देखलहुँ ।

“आउ, आउ ।”

महिमा असगरे रहथि । ओ बहुत परेसान बुझा रहल छलीह । हम हुनका आश्वस्त करैत छी । शक्तिनाथ चाह अनैत छथि । हमसभ चाहक संगे गप्प करैत रहैत छी ।

शक्तिनाथ पुछलखिन-

“एहि असमयमे अहाँक आगमनक कारण?”

“कारण तँ बुझले होएत । सौंसे तबाही मचल अछि । लोक परेसान अछि । सरकारी तंत्रपर गलत लोकक नियंत्रण अछि । एहन परिस्थितिमे हम एहि फसादसभमे नहि रहए चाहैत छी । ओना हमरा एहिसभमे कहिओ रूचि रहबो नहि करए । मुदा हमरा एहिमे फँसा देल गेल । अहाँसभकेँ तँ सभबात बुझले अछि । मुदा हम आगू एहिमे लागल नहि रहि सकैत छी ।”

“मुदा एहिमे अहाँकेँ रहबाक हेतु कोनो मजबूरी नहि अछि। अहाँ जखन चाही हटि सकैत छी ।”

“बात एतेक आसान नहि छैक । हमर पार्टीपर असमाजिक तत्वक कब्जा छैक । ओ सभ हमरा घेरने अछि । लाख कहैत छिऐक छोड़िए नहि रहल अछि । मुदा हम आब तय कए लेने छी। हम एहिमे नहि पड़ब । हम अपन त्यागपत्र पठा देलिऐक अछि ।”

“अहाँक निर्णय सही बुझाइत अछि । हमसभ सभ तरहें अहाँक मदति करब ।”

“ताही आशासँ हम एतए आएल छी ।”

एन मौकापर महिमाकेँ राजनीतिसँ सन्यास लेबाक घोषणासँ समग्र विकास दलमे निराशाक माहौल बनि गेल । बहुत रास नेतासभ पहिने पार्टी छोड़ि देने रहथि । किछु आओरगोटे ओएह रस्ता धेलनि । पार्टीमे हाहाकार मचि गेल । जनतामे एहि दलक छवि ओहुना खराब भए गेल छल । बदमाससभक कोनो प्रयास सफल नहि भए रहल छलैक । जतहि देखू,ओतहि शिखाक जयगान भए रहल छल । शिखाक बैसारमे लोकक हुजुम जमा भए जाइत छल । हम आ शक्तिनाथ दिन-राति शिखाकेँ संगे गामे-गाम

घुमि रहल छलहुँ । शिखाकेँ ने भूख लागनि,ने प्यास । अर्जुन जकाँ लक्ष्यक अतिरिक्त किछु नहि सुझा रहल छलनि ।

“जाबे एहि दुष्टसभकेँ कुर्सीसँ हटा नहि देब ताबे चैन नहि लेब ।” ओ बस एतबे बजैत छलि ।

जनतामे तँ जेना क्रान्ति आबि गेल छल । लोक स्वेच्छासँ दिन-राति शिखाक समर्थनमे काज करैत छल । गामे-गाम प्रचार करैत छल । मतदातासभसँ संपर्क करैत छल । शिखाक समर्थनमे माहौल बनैत देखि विरोधी सभकेँ खास कए बदमास सभकेँ सीटीपीटी गुम्म रहैक । हालात काबूसँ बाहर जाइत देखि समग्र विकास दलक लोकसभ चुनाओ स्थगित करबाक प्रयास करए लागल ।

“देशक परिस्थिति चुनाओक हेतु उपयुक्त नहि अछि । पहिने हालति ठीक होअए देबाक चाही तखनहि चुनाओ करेबाक हेतु आगू बढ़ल जाए ।”

ताहि उद्येश्यसँ ओ सभ चुनाओ आयोग पहुँचल । मुदा चुनाओ आयोग अड़ि गेल ।

“एहनो कहीं भेलैक अछि । चुनाओक घोषणा भए चुकल अछि । चुनाओ समयेपर होएत । सभकेँ एही दिशामे काज करबाक चाही ।”

चुनाओ आयोगक एहि घोषणासँ बदमाससभकेँ बहुत निराशा भेलैक । मुदा कइए की सकैत छल?

33

समग्र विकास दलक तमाम विरोधक अछैत जनता जनार्दन शिखाक समर्थनमे एकजुट भए गेल छल । जतए कतहु ओकर कार्यक्रम बनैत छल,लोकसभक मेला लागि जाइत छल । लोक शिखाकेँ सुनितहि नहि छल,अपितु किछुटाकाक योगदान सेहो केने जाइत छल । एहि तरहें प्रचुरमात्रामे धन जमा भए गेल जे चुनाओक लेल तँ पर्याप्त तँ छलहे , तकर बादो बहुत बँचि जेबाक संभावना छलहे । शक्तिनाथ एक-एक पाइक हिसाब रखैत छलाह । संगहि अगिला कार्यक्रमक योजनाकेँ अन्तिम रूप देबाक काजो ओएह देखैत छलाह । जौँ जौँ चुनाओ लगीच अबैत गेल,ई स्पष्ट होइत गेल जे विजय तँ जनक्रान्तिदलेक होएत । जखने ओ श्वेतवस्त्र पहिरने जनताक समक्ष उपस्थित होइतए तँ बिना किछु कहनहि जनताक ओकरा प्रतिए सहानुभूति भए जाइत छलैक । सभ पुछितए-

“एना किएक? बात की छैक? कोन एहन घटना भेल जे हिनका ई रूप धारण करए पड़लनि ।”

लोकसभ आपसमे चर्च करितए। एहि तरहें शिखा संगे घटित घटनासभ काने-कान यत्र-तत्र-सर्वत्र प्रचारित होइत रहितए। शिखाक जादू जनतापर काज कए रहल छलैक। लोकसभ ओकरा अपन आदर्श मानि लेने छल । ओकरा हेतु किछु करबाक हेतु तैयार छल ।

एहन प्रवल जन समर्थन आखिर चुनाओक परिणाममे प्रदर्शित भेल । तीन सएमे सँ दू सए पंचानबेटा जन प्रतिनिधि

जनक्रान्ति दलक जिति गेल । ओकर अतिरिक्त पाँचटा निर्दलीय चुनाओ जितलाह । ओहोसभ मूलतः जनक्रान्ति दलेक छलाह । मुदा टिकट नहि भेटबाक कारण निर्दलीय चुनाओ लड़लाह आ जिति गेलाह । समग्र विकास दलक एकहुटा उम्मीदबार चुनाओ नहि जिति सकल। पार्टीक ई हाल होएत,से साइत केओ नहो सोचने रहल होएत । मुदा सत्य सामने छल,डंकाक चोटपर दहाड़ि पारि रहल छल ।

शिखा आइ गुलाबी रंगक सारी पहिरने छलीह । ओहीसँ मेल खाइत रंगक आओर परिधानसभ पहिरने जखन ओ मंचपर अएलीह तँ लोक एक क्षणक हेतु चकित भए गेल । चारूकातसँ फूलक वर्षा भए रहल छल ।सभ आनन्दमे छल ।प्रायः एही क्षणक प्रतीक्षा लोक कहि ने कहिआसँ कए रहल छल । लोकसभ करतल ध्वनिसँ हुनकर स्वागत केलक ।सत्यक विजय भेल ।लोकमे बहुत उत्साह रहैक। सभकेँ ओहि क्षणक प्रतीक्षा रहैक जखन शिखा राज्यप्रमुखक पदपर शपथ लेतीह । ताहि लेल कार्यवाही शुरुओ भेल । जन प्रतिनिधिसभक बैसारमे हुनकर नाम नेताक रूपमे प्रस्तावित कएल गेल । सभगोटे सर्वसम्मतिसँ हुनका नेता चुनि लेलनि । तकर बाद शिखा उठलथि। लोकसभक अनुमान रहैक जे ओ धन्यवाद देबाक हेतु आगू बढ़ि रहल छथि । मुदा हुनकर मोनमे तँ किछु आओर छलनि । ओ माइक अपना हाथमे लैत छथि । लोकसभ हुनका सुनबाक हेतु एकटक भए गेल छथि । शिखा बजनाइ शुरु करैत छथि-

"वंधुगण!

एहि ऐतिहासिक विजयक अवसरपर अहाँलोकनिक संग विजयोत्सवमे भाग लए हम अतिशय अह्लादित छी । जाहि

उत्साहसँ समाजक सभ वर्गक लोक एहि चुनाओमे अपना लोकनिक दलक संगे लागल रहल,दिन-राति काज करैत रहल,ताहिसँ विजय तँ निश्चित लागि रहल छल । मुदा विजय एहन होएत जे विरोधी दलक खाता धरि नहि खुजि सकत तकर अनुमान साइते ककरो रहल होएत । असलमे जनतामे अपार शक्ति अछि। बस ओकरा जगेबाक काज छैक । ई बात नहि छैक जे विपक्षी दलक लोक सुतल रहलाह। अपितु,अपना भरि सभ किछु करैत रहलाह । अंत-अंत धरि एहि प्रयासमे रहथि जे चुनाओ रूकि जाए। मुदा समय हुनकासभक संग नहि देलक । ओ सभ एहि हालमे पहुँचि गेलाह जे हुनकर एकहुटा जन प्रतिनिधि नहि चुनल जा सकल । शिखरसँ शून्य भए जाएब एकरे कहल जा सकैत अछि।

हमरा लोकनिकेँ एहि विजयोल्लासमे अपन कर्तव्यकेँ बिसरि नहि जेबाक अछि । अपितु,जनताक विश्वासपर सही उतरबाक अछि । ताहि हेतु जे किछु त्याग,तपस्या करब जरूरी होएत से सभगोटेकेँ करबाक अछि । तखनहि समाजमे परिवर्तन आबि सकत । सही मानेमे जनतंत्र तखनि होएत । समाजक निम्नतम पायदानपर अड़कल लोकसभकेँ उठा कए ओकरासभकेँ गरिमामय जीवन-यापन करबाक व्यवस्था जाबे हमसभ नहि कए सकब ताबे ई विजय अपूर्ण अछि,अर्थहीन अछि, व्यर्थ अछि । अस्तु,हम राजनीतिसँ सन्यास लेबाक निर्णय केलहुँ अछि । ई निर्णय केलहुँ अछि जे कोनो राजनीतिक पद नहि लेब । अपितु, समाजक बीचमे जा कए दीन-दुखी व्यक्तिक हेतु काज करब । असल मानेमे परिवर्तन नीचाँसँ हेबाक छैक । सभकिछु सरकारेपर नहि छोड़ल जा सकैत अछि। ताहि हेत एहन समर्पित लोकक प्रयोजन अछि जे जमीनसँ जुड़ल होथि आ बिना कोनो लोभ-

लालचकेँ जन कल्याणकेँ ध्यानमे राखि निस्वार्थ भावसँ काज करथि । तखनहि सरकारोक मदति कारगर होएत । अन्यथा फुटल डोलक पानि जकाँ सरकारी प्रयास ब्यर्थमे बहि जाएत । हमर इच्छा अछि जे राज्यप्रमुखक पदक हेतु शक्तिनाथकेँ चुनल जाए । ओ बहुत दृढ़ निश्चयी आ परिश्रमीक संगहि इमान्दार लोक छथि । हम सामाजिक क्षेत्रमे किछु आओर लोकक संगे काज करब । तकर माने ई नहि जे हुनका सहयोग नहि करबनि । जखन जे मदति हुनका चाही ताहि हेतु हमसभ तैयार छी आ रहब ।

एतेक बजलाक बाद शिखा आगू बढ़लीह आ शक्तिनाथकेँ मंचपर आगूक पाँतिमे लेने अएलीह । फूलक मालासँ शक्तिनाथकेँ लादि देल गेलनि । हम स्वयं शिखाक समर्थन करैत शक्तिनाथकेँ राज्यप्रमुखक पदक हेतु प्रस्तावित केलहुँ । ओहिठाम उपस्थित लोकसभ करतल ध्वनिसँ एहि प्रस्तावकेँ सहर्ष समर्थन केलनि । सर्वत्र खुसीक माहौल छल । लागि रहल छल जे एहि परिवर्तनक स्वरमे चिड़ै चुनमुन समेत समस्त प्रकृति अपन सहमति व्यक्त कए रहल छल । तखनहि कतहुसँ उमरैत-घुमरैत मेघ सेहो आबि गेल । झीसी पड़नाइ शुरु भए गेल । लागि रहल छल जेना प्रकृति हृदयसँ एहि युगान्तकारी परिवर्तनकेँ स्वागत कए रहल छल । सभ एकस्वरसँ कहि रहल छल-

“इनकिलाब! जिंदाबाद!”

“शिखा जिंदाबाद! शक्तिनाथ जिंदाबाद !”

“जनक्रान्ति दल जिंदाबाद!”

34

समाजमे भए रहल एहि तरहक सकारात्मक परिवर्तनसँ सभसँ बेसी परेसान नेतासभ छलाह । कारण आब हुनकासभक भोटबैंक खतम भए जेबाक संभावना देखा रहल छल । ओ सभ नव-नव समस्याक निर्माणकए समाजकेँ बँटबाक प्रयासमे रहिते छलाह । गाम-घरमे कोनो-ने-कोनो रूपमे अपन उपस्थिति बनओने रहबाक हेतु एकटा गुटक संग भए जइतथि ,भने ओ कतबो गलत किएक नहि होअए। परिणामतः बदमाससभ ढीठ भेल जा रहल छल । न्याय व्यवस्था बहुत महग आ उबाउ छल । तखन लोक जाए कतए ?

एहि परिस्थितिमे शिखा एकटा आशाक किरण बनि कए समाजक सामनेमे उपस्थित छलीह । ओ अपना भरि प्रयासो करिते छलीह । मुदा समाजक अंतरविरोध समस्या बनि कए सामनेमे मुखर भए जाइत छल । आब गामसभ सहरोसँ बेसी एकाकी भेल जा रहल छल । लोकसभ अपन दरबाजा धरि सिमटि कए रहि गेल छल । घर-घर टीभी,मोबाइल.पसरि गेल छल । फेसबुक,ह्वाट्सअपपर दुनिआ भरिक समाचारसँ लोक क्षणे भरिमे अवगत भए जाइत छल । मुदा लग-पासमे की भए रहल छल तकर कोनो जानकारी लेबाक सुधि नहि रहि जाइत छल । निश्चय ई परिस्थिति बहुत बिकट छल ।

मुदा शिखा अपन बातपर अड़ल छलि । शिखा एकटा सही काजमे लागल छलि । जान रहए की जाए ओ अपन लक्ष्यक प्रति बिना कोनो प्रतिदानक अपेक्षाकेँ पूर्ण समर्पित छलि । ओकरा एहि

अभियानमे असगरि नहि छोड़ल जा सकैत छल । अस्तु,हम सभ किछु छोड़ि हुनकर कार्यक्रमकेँ आगू करबामे लागल रहलहुँ। दिन-राति शिखाक संग दैत रहलहुँ ।

जेठक दुपहरिआ होअए किंवा माघक ठाड़,शिखा पैरे-पैरे गामे-गाम भ्रमण करैत रहलीह। ई क्रम एक दिन,दू दिन , दू मास,तीन मास नहि अपितु, वर्षक-वर्ष अनवरत बिना रुकने चलैत रहलीह। गौरवर्णक तेजस्वी आभासँ परिपूर्ण जखन ओ ग्रामबासी लोकनिकेँ संबोधित करथि तँ लोक भाव विह्वल भए जाइत छल । हुनकर बातकेँ अनुसरण करबाक दृढ़ संकल्प करैत छल। बात ओ कोनो तेहन कहबे नहि करथि जकरा करब कठिन होइक । जेना कोनो प्रकारक निसाँ नहि करब। नेनासभसँ नौकरी नहि कराएब,अपितु ओकरा इसकूल पठाएब । बृद्धलोकनिकेँ सादर अपन-अपन परिवारमे राखल जाएत । बिआहमे दहेज नहि लेल जाएत । बालिकाकेँ बेटे जकाँ शिक्षा देल जाएत । पारिवारिक संपत्तिमे बेटा-बेटीकेँ बरोबरिक हक देल जाएत । जात-पाँति,धार्मिक विवादसँ समाजकेँ मुक्त कएल जाएत। ई सभ बात एहन छल जाहिपर कोनो तरहक प्रश्नचिन्हक प्रश्ने नहि उठि सकैत छल। मुदा ओकर कार्यान्वयनमे परेसानी जरूर छल । कारण लोक उपदेश तँ दए दैत छल ,मुदा जखन अपनापर पड़ैक तँ टारि दैत छल ।

एहि तरहें समाजमे परिवर्तनक प्रयास करैत-करैत बीस वर्षसँ बेसीए बीति गेल । हमसभ अपन सर्वस्व समाजक हेतु अर्पित कए देलहुँ। मुदा शिखा अखनहु थाकलि नहि छलीह । पूर्ण आशावान बनल रहथि । तकर अनुकूल परिणामो देखबामे आबि रहल छल । बालिकासभ डाक्टर,इंजीनियर बनि रहल छलि ।

गाममे सभ जातिक लोक संगे बैसि कए खाइत छलाह,उत्सव मनबैत छलाह । धर्म,जातिक विभेद समाप्त भए रहल छल । समाजमे समरसता बढ़ि रहल छल। लगैक जेना शिखाक स्वप्न साकार भए रहल अछि । बदलि रहल अछि सभकिछु । समाज नूतन स्वरुप सामने प्रकट भए रहल अछि जाहिमे सही मानमे समानताक अधिकारसभकेँ सुलभ होएत। समाजमे परिवर्तनक प्रक्रियाक पूर्णताक हेतु कोनो समय सीमा नहि राखल जा सकैत अछि,ई संभवो नहि अछि। कारण सामाजिक परिवर्तन एकटा सतत चलए बला प्रक्रिया अछि । जरूरी ई अछि जे हमसभ सकारात्मक दिशामे अपन डेग बढ़बैत रही ,सही बातकेँ सहर्ष स्वीकार करी । जकर जे हक छैक से दिऐक ।

"बहुत किछु भेलैक अछि आ आगुओ हेतैक । जाधरि सभ सुखी नहि भए जाएत, समाजसँ असमानता, गरीबी, शोषण हटि नहि जाएत ताधरि रुकबाक नहि अछि ।" से ओ कहैत रहैत छलीह। नित्य अपन कार्यक्रममे उद्घोषणा करैत रहैत छलीह- "चरैबेति! चरैबेति!

(समाप्त)



लेखक परिचयः

नाम : रबीन्द्र नारायण मिश्र
पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र
माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी
बएस : ६९ वर्ष
पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह
मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी
वृत्ति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवानिवृत्त)
स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवानिवृत्त)
शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक
प्रकाशित कृति :
मैथिलीमे:-
१. 'भोरसँ साँझ धरि' (आत्म कथा), २. 'प्रसंगवश' (निवंध),
३. 'स्वर्ग एतहि अछि' (यात्रा प्रसंग), ४. 'फसाद' (कथा संग्रह)
५. `नमस्तस्यै' (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निवंध)
७.महराज(उपन्यास) ८.लजकोटर(उपन्यास)

९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निवंध संग्रह)
११.मातृभूमि(उपन्यास) १२.स्वप्नलोक(उपन्यास)
१३.शंखनाद(उपन्यास) १४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)

१५.ढहैत देबाल(उपन्यास) १६.पाथेय(संस्मरण)

१७.हम आबि रहल छी(उपन्यास) १८.प्रलयक परात(उपन्यास)

१९.बीति गेल समय(उपन्यास) २०.प्रतिबिम्ब(उपन्यास)

२१.बदलि रहल अछि सभकिछु(उपन्यास)

In English: -
1. The Lost House (Collection of short stories)
2. Life is an art

हिन्दी में –
१.न्याय की गुहार(उपन्यास)
(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipcart.com पर सँ कीनल जा सकैत अछि)

इमेल : mishrarn@gmail.com
ब्लोग : mishrarn.blogspot.com
Mobile -9968502767
एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra

हमर पोथीसभक मुद्रित संस्करण निम्नलिखित वेवलिंकपर क्लिक कए आनलाइन कीनल जा सकैत अछि:

भोरसँ साँझ धरि(आत्मकथा)
https://pothi.com/pothi/node/195476.
प्रसंगवश(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195527.
स्वर्ग एतहि अछि(यात्रा प्रसंग)
https://pothi.com/pothi/node/195487.
फसाद(कथा संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195510.
नमस्तस्यै(मैथिली उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/195444.

विविध प्रसंग(निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/195633.

महराज (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/195795
लजकोटर (मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/196264.

सीमाक ओहि पार(मैथिली उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/197004.

समाधान (निवंध संग्रह)
https://pothi.com/pothi/node/197754.

मातृभूमि(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198699.

स्वप्नलोक(उपन्यास)
https://pothi.com/pothi/node/199847.

शंखनाद(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/200903.

इएह थिक जीवन(संस्मरण)

https://pothi.com/pothi/node/202488.

ढहैत देबाल(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/203720.

पाथेय

https://pothi.com/pothi/node/205009.

हम आबि रहल छी(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/206093.

प्रलयक परात(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/207234.

बीति गेल समय(उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/208351.

The Lost House (Collection of short stories)

https://pothi.com/pothi/node/195843.
Life is an Art (Motivational essays)

https://pothi.com/pothi/node/196385

न्याय की गुहार (हिन्दी उपन्यास)

https://pothi.com/pothi/node/198163.

www. amazon.com/www.flipkart.com/ पर सेहो ई पोथीसभ आनलाइन कीनल जा सकैत अछि ।